मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – ९

सर्वाधिकार नवजीवन प्रकाशन संस्थाके अधीन

पहली आवृत्ति — ३, ०००
पुनर्मुद्रण — २,०००

सवा रुपया

प्रस्तावना

गाधीजीके आदेशोंके अनुसार रचनात्मक काम करनेवाले सेवको और सेविकाओके लिअे अिस छोटीसी पुस्तकमें मै दस कार्यक्रम पेश करता हूँ।

जो सेवक 'नेता' की कोटिके है और जिन्हे ग्रामजीवनकी छोटी-छोटी वातोको हाथमें लेनेकी फुरसत नही होती, या जो परिव्राजक यानी रमतेराम हैं और गाँव-गाँव घूमकर लोगोकी सेवा करते है, या जो व्यवस्थापक है और समितियाँ तथा कार्यालय कायम करके सेवा करनेवाले है, वे अिन सब योजनाओको वढिया वताकर अिनकी तारीफ तो करेंगे, मगर अुनके स्वभाव और कार्यपद्धतिको देखते हुअे यह स्वाभाविक है कि वे अिन पर अमल नही कर सकेगे।

मगर जो ग्रामसेवक और सेविकायें शिक्षक स्वभावके है और जो अपने पसन्द किये हुअे गाँवमे चिपटकर स्थिर रहनेवाले है, अुन्हे ये योजनायें खूब पसन्द आयेंगी और अिस वातका खयाल करायेंगी कि ग्रामसेवाके हरअेक काममे गहराअी, तफसील और शास्त्र किस ढगके होने चाहियें।

जो थोड़े-बहुत सेवक और सेविकाअें शिक्षक-वृत्तिसे ये काम कर रहे है, अुनके छोटे-छोटे झोपडी-आश्रम जीते-जागते वनकर हर्षकी ध्वनिसे गूंज अुठे है। चरखा, शराववदी वगैरा कामोके जरिये गाँववालोमे आशा और जीवनका सचार करनेमें कुछ सेवक निराश हो रहे थे। लेकिन वालवाडी, कन्या-आश्रम, कुमार-आश्रम वगैरा प्रवृत्तियाँ जारी करनेसे प्रत्येक परिवारके साथ वे अपना गहरा संबध कायम कर सके है, अपनी ग्रामसेवामें अुन्हें आनन्द आने लगा है, और अुन्हें यह आशा बँध गअी है कि हताश हो चुके गाँवोमें भी देर-सवेर प्राणोका सचार करके प्रकाश फैलाया जा सकेगा। अुनके जीवनमे ग्रामवासे और

ग्रामसेवा छूट जानेका जो भय पैदा हो गया था, वह अब दूर हो गया है और गाँवके काममें अुन्हें आनन्द आने लगा है।

साथ ही कताअी, शराबबन्दी वगैरा कार्यक्रम भी, जिनमें पहले अुन्हें निराशा दिखाअी देती थी, अिस नये ढगसे काम करने पर ज्यादा खिल अुठे हैं।

अिस पुस्तकमें ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम दिये गये हैं। समय मिलने पर और भी देनेकी योजना सोच रहा हूँ।

स्वराज्य आश्रम, वेडछी — जुगतराम दवे

अनुक्रमणिका

ग्रामसेवाके दस कार्यक्रम

१

बालवाड़ी

किसी अपरिचित गाँवमें जाकर बसनेवाले ग्रामसेवकको शुरू-शुरूमें परेशानी होती है। अुसे सब कुछ अपरिचित-सा लगता है। लेकिन गाँवके बच्चे अुसके आसपास जिस तरह जमा हो जाते हैं, मानो अुसके साथ अुनकी जन्म-जन्मकी पहचान हो, और अुसकी सारी परेशानी दूर कर देते हैं।

अगर ग्रामसेवकके अन्तःकरणमें शिक्षकका वास होगा, अगर अुसका बच्चोंके साथ बच्चा बन जाने-जैसा खिलाडी स्वभाव होगा, तो अुसे अपने ग्रामसेवाके काममें सबसे पहले बालवाडी शुरू करनेकी अिच्छा हुअे बिना नहीं रहेगी।

मैं अैसे अनेक ग्रामसेवकोंको जानता हूँ, जिन्होंने अिस तरह अपने सेवाकार्यका आरम्भ किया है। छोटीसी दीखनेवाली बालवाडीमें से अुन्होंने मकडीके जालेकी तरह गाँवमें रचनात्मक कामोंका विस्तार किया है।

साथ ही मैं अैसे ग्रामसेवकोंको भी जानता हूँ, जो जी-तोड मेहनतके बाद और बरसोंके कामके बावजूद गाँवके लोगोंके हृदय नहीं जीत सके थे। अिसलिअे अुनके अेक भी कामकी जड नहीं जम रही थी। लेकिन जब अुन्होंने बालवाडीका काम अपने हाथमें लिया, तब वातावरण अेकदम बदल गया। बच्चोंकी सेवा करनेवाले सेवकके प्रति बडोंका — खासकर माताओंका प्रेम अपने आप बहने लगा, और जहाँ प्रेम हो वहाँ रचनात्मक कामोंको पनपनेमें क्या देर लगती है?

अैसे ग्रामसेवकों और सेविकाओंके सामने मैं यहाँ बालवाडीकी कल्पना पेश करता हूँ। यह बालवाडी कोअी अनेक साधनोंसे खचाखच

भरा बालमन्दिर नही होगी, बल्कि गरीब देहातियोकी झोपडियोंके बीच किसी मडप या झोपडीमें आसपाससे जमा किये हुअे साधनोंसे चलनेवाली बालवाडी होगी। वह ग्रामसेवाके अनेक प्रकारके रचनात्मक कामोका ही अेक अग होगी। अुसमें से 'नयी तालीम' का स्वर निकलता होगा।

हिन्दुस्तानी तालीमी सघ अब जन्मसे मरण तककी समग्र शिक्षाका विचार कर रहा है। अुसने सबसे पहले ७ वर्षसे १४ वर्ष तककी अुम्रवाले बच्चोके बारेमें विचार किया और अुनके लिअे अुचित तथा हमारे दरिद्र देशमें व्यापक हो सकनेवाला पाठ्यक्रम ढूंढ निकाला। अब अुसने अेक ओर १४ सालसे बडी अुम्रवालोंके लिअे और दूसरी ओर ८ बरससे छोटे बच्चोके लिअे भी विचार करना शुरू किया है।

अिसी दृष्टिसे मै 'बालवाडी' की यह कल्पना पेश कर रहा हूँ। वेडछी आश्रममें मैंने अिस योजनाका थोडा प्रयोग करके देखा है। और यद्यपि १९४२ में हमारे आश्रमके जब्त हो जाने पर आश्रमके दूसरे कामोंके साथ-साथ हमारी बालवाडी भी अुजड गअी, फिर भी हमारा थोडे समयका प्रयोग काफी आशा दिलानेवाला मालूम हुआ था।

बालवाडीकी अिस योजनाको प्रकाशित करते हुअे मैं अन्त करणसे यह आशा रखता हूँ कि सभी रचनात्मक काम करनेवाले ग्रामसेवक अपने-अपने केन्द्रोमें सुन्दर बालवाडियोका विकास करनेमे लग जायेंगे। मैं मानता हूँ कि जहाँ लडकियोंकी शिक्षण-सस्थायें चल रही है, वहाँ तो अिस तरहकी बालवाडी चलाना अनिवार्य ही है। अिसके बिना कन्याओंको बालसगोपनकी कला कैसे सिखाअी जा सकती है?

'नयी तालीम' या वर्धा-योजनाके ढग पर जो बालशिक्षण दिया जाय, अुसमें नीचे लिखे तत्त्वोका समावेश होना जरूरी है

१. बालसेवाके शौकीनों द्वारा यह काम हो

पूरा समय देनेवाले शिक्षक-शिक्षिकाओके द्वारा यह काम करना खर्चीला और अशक्य होगा। बालसेवाका शौक रखनेवाले माँ-बाप

या सेवक-सेविकायें फुरसतके वक्त बालशिक्षणका काम करें, तो ही वह देशव्यापी हो सकेगा।

अैसे कार्यकर्ता ज्यादातर अवैतनिक होंगे। वेतन देना ही पड़े तो वह दिनमें दो तीन घंटेके हिसाबसे ही देना होगा। अिस तरह बालशिक्षणका बोझ बहुत ज्यादा नहीं बढ़ पायेगा।

२. बालवाड़ीका समय

यह मर्यादा मान ली जाय, तो बालवाड़ी दिनमें सिर्फ दो-तीन घंटे सुबह, शाम या दोपहरके समय ही चलेगी।

बच्चोंकी छोटी अुम्र (७ वर्षसे कम)को देखते हुअे चाहे जितने पढ़े-लिखे और निष्णात शिक्षक मिल जायँ, तो भी अुन्हें माँ-बापसे और घरके वातावरणसे अिससे अधिक समय तक अलग रखना अुनकी कुदरती भूखमें बाधक और अिसलिअे अुनके साधारण विकासकी दृष्टिसे हानिकारक होगा।

और शिक्षण-शास्त्रकी दृष्टिसे भी अेक सामान्य घर अैसी-अैसी प्रवृत्तियोंसे भरा रहता है कि वह बच्चोंके लिअे शिक्षाका अेक बड़ा धाम बन जाता है। अिस कारणसे भी बच्चोंको घरसे ज्यादा समय तक दूर रखना ठीक नहीं है।

ये प्रवृत्तियां घरोंमें सुबहके लगभग ९ बजे तक और शामको ५ या ६ बजे बाद चलती हैं, और माता-पिता भी ज्यादातर अुसी वक्त घरमें मौजूद होते हैं। अुनके सहवासका लाभ बालक न खो बैठें, अिस ढंगसे बालवाड़ियोंका समय रखना चाहिये।

३. घरोंके नजदीक

बालवाड़ीका स्थान बालकोंके घरोंके पास ही होना चाहिये। बच्चे अपने-आप वहां आ-जा सकें और माँ-बाप आसानीसे अुन पर निगाह रख सकें, अिससे दूर वह हरगिज न होना चाहिये।

वालशिक्षणके अुद्देश्योंमें से अेक अुद्देश्य यह भी है कि अुसके द्वारा माता-पितामें यह समझ फैलाअी जाय कि वच्चोंके साथ अुन्हें कैसा बरताव रखना चाहिये। अिस दृष्टिसे भी वालवाडियोंका घरोंके पास होना वाछनीय है।

४. सख्याकी मर्यादा

वालवाडीमें वच्चोंके वर्ग बनाकर अुन्हें पढानेकी कोशिश करना वहुत ही हानिकारक और वन्धनरूप सावित होगा। शिक्षकको अैसा वातावरण पैदा करना चाहिये कि हरअेक वच्चा व्यक्तिगत रूपमें विकासशील प्रवृत्तियोंमें लगा रहे। शिक्षकको हरअेक वालक पर व्यक्तिगत ध्यान देना चाहिये।

अिसलिअे वालवाडियाँ वहुतसे वच्चो और शिक्षकोवाली विशाल सस्थायें न होनी चाहियें। अेक शिक्षक किसी मुहल्लेमें १५ से २० वच्चो तक ही अिकट्ठा करे, अैसी मर्यादा वाँध देनी चाहिये।

५. बालशिक्षकके स्वयसेवक

वालशिक्षकको अपने मुहल्लेकी स्त्रियों, विद्यार्थियो वगैरामें से अपने काममें मदद दे सकनेवाले स्वयसेवक जुटा लेनेकी कोशिश करनी चाहिये। अैसा करनेसे वालवाडीमें आनन्दकी लहर दौड जायगी और स्वयसेवकोको भी कीमती अनुभव मिलेगा।

६ वालशिक्षणका पहला साधन — चरित्र

शिक्षणके क्षेत्रमें वाह्य परिस्थितिका काफी वडा हाथ रहता है, मगर अुससे भी कही अधिक काम माता-पिता और शिक्षक वगैरा वुजुर्गोका चरित्र करता है।

वालशिक्षणमें तो अिन वडोका चरित्र खास महत्त्व रखता है, क्योंकि वही वच्चोकी स्थायी श्रद्धा, स्वभाव और आदतें वनानेवाली चीज है।

वडी अुम्रके लोगोमें चरित्रके वारेमे शिथिल रहनेकी अेक रूढि ही हो गयी है । अिसलिअे वालशिक्षकको तो अिस चीजका खास आग्रह रखनेकी जरूरत है ।

वालशिक्षकको वच्चोके साथ अपने व्यवहारमे सत्य और अहिंसाका सूक्ष्म पालन करना चाहिये । जो वात स्वय न जानता हो, अुसके विषयमें कुछ अिधर-अुधरकी गप हाँककर अपनी अिज्जत वचानेकी वृत्ति अुसमे नही होनी चाहिये । वच्चोके सामने 'मुझे मालूम नही' कहनेमे अुसे शर्म न मालूम होनी चाहिये । जो वात वह स्वय न जानता हो, अुसमें अुसे वच्चोके साथ मिलकर ज्ञानकी खोज करनेवाला वनना चाहिये ।

अिसके अलावा, अुसे वच्चोके साथ प्रेम और धीरजसे वरताव करना चाहिये । वह न तो वच्चोको कभी मारे और न अुन पर कभी गुस्सा हो ।

शरीरश्रमके प्रति अुसके मनमें तिरस्कार न होना चाहिये; अितना ही नही, वल्कि अुसे अपने जीवनमे प्रयत्नपूर्वक अुसके लिअे आदर वढाना चाहिये ।

अुसे वालकोंके साथ अपने व्यवहारमे अूँच-नीचके भावकी जरा भी गध न आने देनी चाहिये ।

वालशिक्षणमें स्पर्धा, भय और लालचके छोटे दिखायी देनेवाले रास्ते अुसे कभी न अपनाने चाहियें ।

७. शिक्षाके माध्यम

शिक्षकके चरित्रके अलावा वालवाडीके शिक्षणके मुख्य माध्यम नीचे लिखे होंगे —

(१) **स्वच्छता और सुरुचिपूर्ण रचना** — शरीर, कपडो, वस्तुओ और स्थानकी ।

(२) **घरके काम** — झाड़ू देना, पानी भरना, बरतन माँजना, कपडे धोना, परोसना, पीसना, अनाज बीनना, फटकना, लीपना, चूल्हा सुलगाना और लालटेन साफ करना वगैरा।

(३) **खाना-पीना** — तैयार करनेमें बच्चोकी मदद लेना, अुन्हे शातिके साथ बैठकर खानेकी आदत डालना, खानेका सही तरीका सिखाना और भोजनसे सम्बन्ध रखनेवाले शिष्टाचार सिखाना।

खाने या नाश्तेको हरअेक बालवाडीकी प्रवृत्तियोमें आवश्यक विषयके तौर पर रखनेका दूसरा कारण यह भी है कि देहातके बच्चोको अपनी खुराकमें पौष्टिक तत्त्व पूरी मात्रामे नही मिलते। अत अिस कमीको वहाँ पूरा किया जाय।

(४) **राष्ट्रीय ग्रामोद्योगोके साथ सम्बन्ध रखनेवाली बालोचित प्रवृत्तियाँ** —

खादी-कार्यसे सम्बन्धित — कपास लोढना (छोटी चरखीसे), तुनना, तकलीसे कातना, छोटे व बडे अटेरन पर सूत अुतारना, दुबटना, रस्सी बटना, चटाअी बुनना, सूत अंठना, कुकडी भरना वगैरा।

खेती-सम्बन्धी — निराना, गोडना, खोदना, क्यारियाँ बनाना, गमले सँभालना, पेडोको पानी पिलाना, कपास चुनना, फसल काटना और ओसाना वगैरा।

कुम्हार-काम सम्बन्धी — मिट्टी तैयार करना, खिलौने बनाना, चाक चलाना, दीये, कवेलू वगैरा अुतारना, अीटें बनाना और पकाना, दीवार बनाना और झोपडी बनाना।

अिन तीन अुद्योगो यानी खादी, खेती और कुम्हार-कामको बालवाडीके कार्यक्रममें बुनियादी अुद्योगोके रूपमें माना जाय।

अिनके सिवाय, मुहल्लेमें चलनेवाले खास अुद्योगो जैसे, सुतार, लुहार, दरजी और राजके कामोका भी बालशिक्षणमें अुपयोग कर लेना चाहिये।

(५) भाषा — शुद्ध अुच्चारण पर ध्यान देना, बालशिक्षणके अंतर्गत अनेक प्रकारकी प्रवृत्तियोंके साथ सम्बन्ध रखनेवाले शब्दोंका संग्रह बढाते जाना और शब्दार्थोंके सूक्ष्म भेदोंकी ओर जरा बारीकीसे ध्यान देना।

कहानी शिक्षक बच्चोंसे कहे और बच्चे खुद भी कहें।

मुखपाठ सुभाषित कंठाग्र करनेका प्रोत्साहन देना।

(६) कला-शिक्षण — नीचे लिखी प्रवृत्तियों द्वारा बालकोंमें कलावृत्ति पैदा की जाय —

संगीत, चित्र, रास, कवायद, संवाद, नाटक, वाचन, मिट्टीका काम, बगीचेका काम, कला-मंडप सजाना और रंगोली पूरना।

(७) गणित — रूखा अंकगणित सिखानेके पीछे न पडा जाय, बल्कि बच्चोंमें हिसाबीपन बढानेकी कोशिश की जाय। अिसके लिअे ये प्रवृत्तियाँ रखी जायें —

नपे हुअे बाँस, रस्सी वगैरासे नापना,

तराजूसे तौलना,

बिना नापे आँखसे देखकर ही अंतर जान लेनेकी अनुमान-शक्ति पैदा करना,

जमीन पर सावधानीके साथ भूमितिकी आकृतियाँ बनाना।

(८) खेलकूद और व्यायाम — बच्चोंके शरीर और अिन्द्रियोंके विकासकी दृष्टिसे अिनकी योजना करनी चाहिये।

(९) सदाचार — खाने-पीने, पेशाब-पाखाना जाने और बच्चोंके निजी जीवनके दूसरे सब काम बढिया ढंगसे करनेकी अुनमें आदत डालना।

अेक दूसरेके साथ, बडोंके साथ, अतिथियोंके साथ — अिस तरह अलग-अलग सामाजिक सम्बन्धोंमें किस तरह बरताव किया जाय, यह बताना।

शान्ति, प्रार्थना और सामूहिक काम।

सदाचार-सम्बन्धी सूचनाये बहुत ही सीधी और सक्षिप्त होनी चाहियें। हरअेकके कारण बताये जायँ, मगर लम्बे व्याख्यान न दिये जायँ। ज्यादातर तो शिक्षक खुद पालन करके ही बच्चोको सदाचार सिखाये।

(१०) **सेवा** — बालकोमें बचपनसे ही सेवाभावका अुदय हो, यह कोशिश करनी चाहिये। जबानी अुपदेशसे नही, परन्तु बच्चोमे अपनेसे कुछ छोटी अुम्रके बच्चोको सिखाने और मदद करनेकी जो स्वाभाविक वृत्ति होती है, अुसे प्रोत्साहन देकर। जैसे नहलाना-धुलाना, बाल सँवारना वगैरा।

ग्राम-सफाअी।

पशु-पक्षियोकी सेवा — पक्षियोको चबेना डालना, बछडोको पानी पिलाना, नहलाना, चारा डालना और गोशालाकी सफाअी करना।

पानीकी प्याअू चलाना और मुसाफिरोको पानी पिलाना।

अुत्सव — राष्ट्रीय, धार्मिक और प्राकृतिक वगैरा। बच्चे खुद अपने अुत्सव मनायें और गाँवमें होनेवाले अुत्सवोमें भाग ले — मदद दे।

८. वाचन और लेखन

आजकलकी प्रचलित शिक्षा-प्रणालीमें अिन दो विषयोका सबसे बडा स्थान है। हमारे काममे भी अिसकी नकल हो जानेका बडा डर है। अिसलिअे अिससे सम्बन्धित कुछ बातोकी सफाअी कर लेना जरूरी है —

(१) बालशिक्षणमें लेखनको स्थान न देना चाहिये। मगर यह ध्यानमें रखकर कि आगे चलकर लेखन-कला सिखानी है, अुसके लिअे पोषक सिद्ध होनेवाले ढगसे चित्रकला आदिका पाठ्यक्रम रखा जाय।

(२) वाचनका स्थान बालवाडीके आखिरी दो वर्षोमे होगा, मगर दूसरी अनेक कलाओकी तरह अेक कलाके रूपमें ही। अुसका

स्थान गौण ही रहे। अुसे शिक्षणका माध्यम कभी न बनाया जाय। शिक्षाके माध्यम तो हाथ, पैर, आँख, कान आदि अिन्द्रियाँ और अुनके जरिये होनेवाले अुद्योग ही रहें।

बैठे-बैठे या सोते-सोते किताबें पढना और हर तरहके कामके प्रति अरुचि रखना, यह आजकल हमारा अेक सामाजिक दुर्गुण हो गया है। बच्चे भी अिसकी नकल करते पाये जाते हैं। बच्चोंमें यह कुटेव न घुसने पाये, अितनी गौण मात्रामें वाचन-कलाका स्थान बालशिक्षामें रखना चाहिये।

९. बाल-कहानियाँ और बाल-गीत

बालशिक्षणमें अिनका स्थान काफी मात्रामें होना स्वाभाविक है। अिसलिअे अिनके स्वरूपके सम्बन्धमें स्पष्टता कर लेनेकी जरूरत है।

कहानियाँ और गीत दोनोंमें हास्यरस और विनोद अच्छी मात्रामें हो सकते हैं। परन्तु ज्यादातर यह हास्यरस बहुत ही हलका, बेढगा और सुरुचिहीन होता है। यह हानिकारक है। गुजराती बाल-गीतोंमें से दो बुरे गीतोंकी टेक दृष्टान्तके रूपमें यहाँ देनेसे मेरा मतलब साफ हो जायगा :—

१ बडी लम्बी रे मारा दादानी मूछ,
  दादानी मूछ, जाणे मींदडीनी पूछ ! *

२ होको वहालो वहालो लागे,
  होको मीठो मीठो लागे,
   वाह भाओ वाह ! +

बाल-कहानियोंका आजकलका प्रचलित साहित्य चालाकी और ठगी वगैराकी महिमासे भरा रहता है — जैसे कि गीदडकी ज्यादातर

* यहाँ दादाकी मूँछकी बिल्लीकी पूँछसे तुलना की गअी है।

+ हुक्का प्यारा लगता है और मीठा लगता है।

कहानियाँ। ये कहानियाँ रसीली और कलापूर्ण होती है तथा पच-तत्र और ओसप-नीति जैसे लोकमान्य ग्रन्थोकी प्रसादी है, फिर भी वे सब बालशिक्षणके काममें लेने लायक नही है। अिसी तरह बच्चोके मनमें भय पैदा करनेवाली कहानियाँ भी छोड देनी चाहियें। कहानी कहनेवाला सिर्फ बच्चोको दो घडी हँसानेकी खातिर ही भूत, बाघ, चोर-डाकू या राक्षसोकी कहानी कह डालता है। परन्तु कभी-कभी ये कहानियाँ सुनकर बच्चोके मनमें हमेशाके लिअे डरकी गाँठ बैठ जाती है और बडी अुम्र तक वे अन्धेरे आदिसे डरते रहते है। अैसी कहानियाँ कहकर कुछ लोग अन्तमें कह देते है कि 'यह कहानी सच्ची नही है।' मगर यह नही मान लेना चाहिये कि अितना कह देने भरसे अुसका असर जाता रहेगा।

हास्यरस पैदा करनेके लिअे कुछ जातियों, धन्धो वगैराका मजाक अुडानेवाली कहानियाँ भी कही जाती है — जैसे बोहरे, गरासिये, बनिये, कुम्हार, नाअी वगैराकी। अिसी तरह पशु-पक्षियोकी कहानियोमें भी गधे, कौवे और अिसी तरहके दूसरे पशु-पक्षियोके लिअे बच्चोके मनमे स्थायी रूपसे अैसे चित्र खिच जाते है कि बडे हो जानेके बाद भी वे अुन्हें सचमुच दुष्ट और निकम्मे मानते है और अुनके साथ बिना कारण निर्दयताका बरताव करते है।

पशु-पक्षियोके प्रति प्रेम, सहानुभूति, मैत्री, दया और सेवाभावना पैदा करनेवाली होते हुअे भी नये साहित्यकारोको ओसप जैसी ही हृदयंगम कहानियाँ रचनी पडेंगी।

बच्चोकी कहानियोंके लिअे हमें रामायण, महाभारत, पुराणो, अिस्लामी सन्तोंकी कथाओ और ओसाओ दृष्टातो अित्यादिसे काटछाँट करके काफी सामग्री लेनी होगी।

जिनमें बालकोके रोजाना जीवनका सामान्य वर्णन आये, अैसी कहानियाँ भी अुन्हें किसी अति काल्पनिक कहानीके बराबर ही

आकर्षक लगती है। बाल-कहानी और बाल-गीत पर विचार करते समय यह अनुभव भी ध्यानमें रखने लायक है।

१०. बालशिक्षणके साधन

अुद्योग आदि शिक्षणके साधन अैसे होने चाहिये, जिन्हे बच्चे आसानीसे अुठा सके और अिस्तेमाल कर सके।

बच्चे जीवनमें अनेक प्रकारके काम अच्छी तरह कर सके, अिसके लिअे अुनके हाथ, पैर, कान वगैरा अिन्द्रियोकी शक्तियोका विकास करना जरूरी है। अिसलिअे अिस विकासके पोषक साधन होने चाहिये और अुनका अुपयोग करना चाहिये।

अैसे साधनोका बडेसे बड़ा लक्षण यह है कि वे बिलकुल सीधे-सादे हों, अैसे हो जिन्हे शिक्षक अपने हाथसे बना सके या गाँवके कारीगरोंसे बनवा सके।

११. बालशिक्षणका काम कौन कर सकता है?

सुशिक्षित स्त्री-पुरुष तो अिसे कर ही सकते है, मगर ज्यादा शिक्षा न पाये हुअे या बिलकुल पाठशालामे न गये अे ग्रामवासी स्त्री-पुरुष भी यह काम करने लायक बन सकते है। शर्त्त अितनी ही है कि अुनमे बच्चोकी सेवाके लिअे स्वाभाविक प्रेम हो, वे विनोदी हो, चिडचिडे न हो, खेलकूद, कहानी कहने वगैरामे कुशल और कल्पनाशील हो, कामकाज करनेमे छोटी-छोटी बातो पर ध्यान देनेवाले हो, व्यवस्थित हो और सफाअीका आग्रह रखनेवाले हो।

अैसे स्त्री-पुरुषोको तीनसे छ महीनेकी तालीम देनेका प्रबन्ध होना चाहिये।

माता-पिताको भी, जिन्हे बालवाडियाँ नही चलानी है, अिस तरहकी तालीम लेनेके लिअे प्रोत्साहन देनेकी जरूरत है।

बालशिक्षणके क्षेत्रमें खोज करनेवाले विशेषज्ञोकी कुछ संस्थायें होना जरूरी है। परन्तु बालवाडीकी साधारण प्रवृत्तिको अतिशास्त्रीय

नही बनाना चाहिये । बालवाडीकी प्रतिदिनकी रचना बेशक बाल-मानसको ध्यानमें रखकर बनाओी गओी हो, मगर अुसके लिअे विशेषज्ञोकी जरूरत न होनी चाहिये। बालप्रेमी और कलाविद स्त्री-पुरुषो द्वारा वह चल सकनी चाहिये।

१२. बालसेवा अुन्नीसवाँ रचनात्मक कार्य

हरअेक ग्रामसेवक, शिक्षक, खादीसेवक वगैरा रचनात्मक कार्य करनेवालेको अपने कार्यमें बालशिक्षाको जरूरी स्थान देनेका आग्रह रखना चाहिये। ग्रामसेवाके किसी भी काममे जनताका प्रेम और विश्वास सपादन करना सबसे जरूरी है, और बालसेवा माता-पिताओके हृदयमें प्रवेश करनेका सर्वोत्तम द्वार है।

बालसेवाको अपना मुख्य काम बनाकर अुसके जरिये ग्रामसेवा करना भी ग्रामसेवाका अेक प्रकार हो सकता है। १८ तरहके रचनात्मक कामोमे जोडने लायक यह १९वाँ काम है। अिस दृष्टिसे काम करनेवाले सेवकोको भी प्रोत्साहन देना चाहिये।

सब तरहके रचनात्मक कामोकी तालीमके लिअे जो पाठ्यक्रम बनाये जायँ, अुनमें बालशिक्षाकी तालीमको अवश्य स्थान देना चाहिये।

१३. बालवाडीमें नौकर न रखा जाय

समाजमें जैसे और जगह होता है, वैसे ही देखा जाता है कि बालशिक्षणकी सस्थाओमें भी कुछ काम नौकरोसे कराये जाते है। जैसे बच्चोको घरसे बुला लाना, अुनके मुँह-हाथ धो देना, अुनके लिअे खाना पकाना, पानी भरना, अुनके बरतन माँज देना और खोदने जैसे मेहनतके काम कर देना वगैरा।

ये सब काम हमारे लिअे शिक्षाके माध्यम है, अिसलिअे अिन्हे बालवाडीमें नौकरोंके हाथसे कभी नही कराना चाहिये। बच्चोको साथमे रखकर अैसे सब काम शिक्षाकी दृष्टिसे शिक्षकोको खुद करने चाहिये। बच्चोके नैतिक विकासकी दृष्टिसे भी बालवाडीमें नौकर

रखना निषिद्ध माना जाना चाहिये। स्वयसेवक चाहे जितने रखे जा सकते है, मगर नौकर अेक भी नही।

१४. नाम

अिस तरह 'नयी तालीम' के अुसूलो पर चलनेवाली बाल-शिक्षणकी सस्थाके लिअे छोटा और मीठा 'बालवाडी' शब्द काममे लेनेका मेरा सुझाव है।

२

कन्या या कुमार-आश्रम

मेरा सुझाव है कि जहाँ-जहाँ गाँवोमे ग्रामसेवक या खादीसेवक और सेविकायें बसे हो और शिक्षामे दिलचस्पी रखनेवाले हों, वहाँ-वहाँ अुन्हे अपने दूसरे कामोके साथ नीचेकी प्रवृत्तियाँ चलानेकी कोशिश करनी चाहिये —

(१) कन्या-आश्रम

(२) कुमार-आश्रम

(३) बालवाडी

अपनी-अपनी अनुकूलता और वृत्तिके अनुसार तीनमे से अेक, दो या तीनो काम किये जा सकते है।

जहाँ स्त्रिया सेविकाओंके रूपमे ग्रामसेवा करती हो या सेवकोंकी धर्मपत्नियोमे सेवा करनेका अुत्साह हो, वहाँ कन्या-आश्रम जरूर खोले जायँ।

जहाँ कन्या-आश्रम या कुमार-आश्रम चलाये जाते हो, वहाँ साथ-साथ बालवाडी खोलनेसे दोनो कामोको परस्पर पोषण मिलेगा।

अैसे आश्रम चलानेवाले सेवकोसे मेरी खास सिफारिश है कि वे अपने आश्रमो और वालवाडियोमे विशेष प्रयत्न करके गाँवकी पिछडी हुअी और दलित जातियोंके वच्चोको दाखिल करे।

वालवाडीकी रूपरेखा मैं पहले प्रकरणमें दे चुका हूँ। अिस प्रकरणमें कन्या-आश्रम और कुमार-आश्रमकी थोडीसी रूपरेखा दूंगा –

१ अिन आश्रमोंमें आम तौर पर सातसे वारह वर्षकी कन्याये या कुमार भरती किये जायें।

२ वे गाँवकी पाठशालाओमे जानेवाले लडके-लडकी हो सकते है और पाठशाला न जा सकनेवाले परन्तु ग्वाले वगैराका काम करनेवाले वालक भी हो सकते है।

३ वे आम तौर पर नीचे लिखे समयमे आश्रममें रहकर सेवकोंके सहवासका लाभ अुठाये

शामको साढे सात वजेके आसपास व्यालू करके आश्रममे आयें, रातको आश्रममें ही सोयें और सुवेरे आठ या नौ वजे घर लौट जायें।

दिनका समय वे अपने अुद्योगमें या पाठशालामें वितायें।

४ अिन आश्रमोको नीचे लिखे घटे कामके लिअे मिल सकेगे

२ घटे शामको साढे सातसे साढे नौ।
३ घटे सुवह छ से नौ।
कुल ५ घटे

परिस्थितिके अनुसार पाँचके वजाय चार या तीन घटेसे भी सन्तोष किया जाय।

५ [illegible] हूँ कि ये आश्रम नियमित पूरे समयकी और पूरे [illegible] पाठशालायें नही हो सकते। मगर जो [illegible]के लाभमे वचित रह जाते है, अुन्हे [illegible] रह जानेवाली कमियोको पूरा करने- [illegible] आश्रमोंमें [illegible] जायेंगे। वच्चोंके लिअे

जो कुछ कार्यक्रम रखा जायगा, वह नयी तालीमके सिद्धान्तोंके आधार पर ही तैयार किया जायगा।

६ आश्रमकी प्रवृत्तियाँ अिस तरहकी रखी जायें.—

(१) शाम और सुवह प्रार्थना, (२) आश्रमकी सफाअी और दूसरे जरूरी कामकाज, (३) गाँवके रास्ते, घर, पशुशालायें, कुअें वगैरा सार्वजनिक सफाअीके काम, (४) नहाना-धोना और वाल सँवारना, (५) तुनना, पीजना और कातना, (६) आश्रमकी सागभाजी और फूलोंकी वाडीमें काम करना और मौसममें खेतीके काम करने जाना, (७) नाश्ता, (८) सगीत, तम्बूरा, वाँसुरी, तवले, चित्रकला वगैरा, (९) खेलकूद, कवायद और कसरत, (१०) वातचीत, चर्चा, प्रवचन, कहानी कहने और वाचनके जरिये अूपरके सब कामोंका और ग्रामजीवन, देशजीवन और धर्मभावना वगैराका साधारण ज्ञान देना, (११) सुभाषित, गीत, भजन और कवितायें कठस्थ करना, (१२) आश्रममें होनेवाले खादीकाम जैसे कामोंमें मदद देना, (१३) तौलने, नापने और गिनने वगैराके जरिये गणित सीखना, (१४) वालवाडी चलती हो, तो अुसके बच्चोंकी सेवा करना और (१५) अुत्सव तथा यात्रा।

जाहिर है कि ये सब काम अेक ही दिनके कार्यक्रममें नही समा सकते। प्रसग और ऋतुके अनुसार आश्रममे अलग-अलग प्रवृत्तियाँ चलाते रहना चाहिये।

प्रवृत्तियोंकी सूची देखते ही समझमें आ जायगा कि अेकसे दस तककी प्रवृत्तियाँ रोज करने लायक है और दूसरी प्रसग देखकर करने जैसी हैं।

७ आश्रमोंका समयपत्रक आम तौर पर यह रहेगा

शामको ७॥ से ८ खेलकूद

८ से ८॥ प्रार्थना, प्रवचन वगैरा

८॥ से ९॥ कताअी (सगीत, सभाषण वगैराके साथ)

९॥ से ६ सोना

सवेरे ६ से ६॥ दातौन और शौच
६॥ से ७ प्रार्थना और संगीत
७ से ७। व्यायाम
७। से ७॥। आश्रमकी सफाअी और बागवानी वगैरा
७॥। से ८। नहाना-धोना
८। से ९ कताअी वगैरा

८ सफाअीके सिलसिलेमें अिन आश्रमोमें नीचे लिखे साधन पैदा करनेकी खास कोशिश करना जरूरी है

(क) नहाने-धोनेके लिअे पूरी संख्यामें पत्थर और पानी वह जानेके लिअे अच्छी नालियाँ।

(ख) पेशावघर और पाखाने — बाल्टियोवाले या खड्डेवाले।

अिन साधनोंके अभावमें जहाँ तहाँ पेशावके लिअे बैठना पडे और आस-पासकी जगह शौच करके बिगाड दी जाय, यह स्थिति हरगिज सहन न करनी चाहिये। आखिरमें कुदाली या फावडेका अुपयोग तो करना ही चाहिये।

९ नाश्तेके बारेमें — बच्चोंके घरकी खुराकमें ज्यादातर दूध, छाछ, साग, फल, कच्ची पत्ताभाजी और कचूमरकी कमी रहती है। अिसलिअे आश्रमोंके नाश्तेमें अुसे पूरा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। अिस दृष्टिसे आश्रमकी वाडीमें अुपयोगी सागभाजी अुगाअी जाय।

१० कताअी अुद्योगके सिलसिलेमें सूचना यह अुद्योग अिस दृष्टिसे चलाया जाय कि बच्चोके कपडे अुनके अपने काते हुअे सूतसे ही बन जायँ। अिसके लिअे हर बच्चेको वर्षमें २५ गज खादीके लिअे काफी यानी १०० गुंडी सूत कातना जरूरी है।

११ खेतीवाडीके बारेमें सूचना बच्चोंके घरोमें ज्यादातर खेतीवाडीका अुद्योग होता है। आश्रममें आनेसे वे निठल्ले बन जायँ और खेतीके कठिन कामोंकी नापसन्द करने लगें, यह परिणाम हरगिज

न आने देना चाहिये। अिसलिअे समय-समय पर आश्रमोंको बोवाअी, कटाअी, कपास-बिनाअी, घास-कटाअी वगैरा खेतीके बड़े कामोंमें भाग लेनेके कार्यक्रम बनाने चाहिये।

१२ अिन आश्रमोंके संचालनमें याद रखने लायक अेक अत्यन्त महत्त्वकी चेतावनी दे दूं

बच्चोंको आश्रमके संस्कार देनेके अति अुत्साहमें सेवकोंको अुन्हें अपने घरेलू जीवनसे बिलकुल अलग न कर देना चाहिये। वे देरसे घर जायें और जल्दी-जल्दी खाकर वापस आश्रममें दौड़े आयें, यह हालत देखकर खुश न होना चाहिये। लड़कों और लड़कियों दोनोंको काफी समय घर पर रहना चाहिये। अुन्हें मां-बाप और भाअी-बहनोंके साथ घरके काममें हाथ बंटाना चाहिये। अिसलिअे अिस योजनामें जो समयपत्रक दिया गया है, अुससे ज्यादा समय लेनेका लोभ हरगिज न रखा जाय।

३

ग्वालोंका शि....

शिक्षकवृत्तिके ग्रामसेवकों और सेविकाओंके लिअे ग्वालोंके शिक्षणकी यह अेक तीसरी योजना पेश करता हूं।

१. गांवके ग्वाले

अेक बार आचार्य श्री काकासाहब कालेलकर बारडोलीके हमारे ग्रामसेवाके झोंपड़ी-आश्रम देखने आये थे। अुनके साथ तहसीलकी सड़कों पर सफर करते हुअे मैंने अेक दृश्य देखा। यों तो रोज ही यह दृश्य देखता हूं। हमारी वेडछीमें भी यह दृश्य मुहल्ले-मुहल्लेमें रोज देखनेको मिलता है, अिसलिअे मैं अिससे अपरिचित नहीं था। मगर काकासाहबकी मौजूदगीसे हम राष्ट्रीय शिक्षाकी जागृतिमय हवामें बह रहे थे, अिसलिअे अिस बार यह दृश्य हृदय पर अंकित हो गया।

रानीपरज प्रदेशके बीचसे जाती हुअी अिन सडकोंके दोनो किनारो पर हमने क्या देखा? थोडेसे खेतोको पार करके आगे बढते कि २५–३० ढोरोका अेक समूह दिखाअी देता और अुसके पीछे-पीछे दससे बारह बरसकी अुम्रके १०–१५ लडके और लडकियाँ। कही-कही बूढे-बूढी भी लकडी लेकर ढोर चराते दिखाअी देते। कोअी बीस मीलके सफरमें हमने ढोरो और अुनके ग्वालोकी अैसी ५० टोलियाँ देखी।

रानीपरजके गाँवोंमें आधेसे ज्यादा लडके और लडकियाँ किसी भी तरहकी पाठशालाके दर्शन किये बिना ढोर चराते-चराते ही बडे हो रहे हैं। कुछ गाँवोमे पाठशालाअें है, मगर गाँवके बालकोंके लिअे ढोर चराना अनिवार्य होनेसे पाठशालाअें सूनी रहती है। अैसी हालत गुजरातके और भागोमें भी जरूर होगी।

पाठशाला जानेका मौका मिले बिना बडे होनेवाले ये ग्वाले लिखना-पढना और हिसाब करना नही सीख सकते। बीसवी सदीकी नअी सभ्यताका प्रवाह अुन्हें छू भी नही पाता। अिसलिअे जब वे बडे होते है, तो अिस सदी और अुसके लोगोको पहचान नही पाते और साधारण आदमी भी अुन्हे आसानीसे ठग लेते है, अुनका शोषण करते है, अुन्हे डराते-धमकाते है और अुनका अपमान करते है, जिसे वे चुपचाप सह लेते है।

लेकिन दूसरी नजरसे जब मैं अुनका जीवन देखता हूँ, तो मेरा शिक्षक-हृदय आनन्दका अनुभव करता है। अिधर देखिये तो पशु चर रहे है और ग्वाले मैदानमें गिल्ली-डडा या आटापाटा खेल रहे हैं। अुधर देखिये तो नदीमें पडकर डुबकी-दाँव खेल रहे है। कहीं छोटीसी टेकरी परसे ग्वालोकी बंसियोंकी मधुर तान सुनाअी दे रही है, तो कही डडारास या नाचनेका मजा लूटा जा रहा है। तीर चलाने और गुलेल चलानेमें ग्वाले बडे कुशल होते है। वनके पशु-पक्षिओ और पेड-पौधोंके बारेमें अुन्हें कितना ज्ञान होता है! गाँवकी सीमाके हरअेक खेतको, अुसके जोतनेवालेको और अुसके आगे-पीछेके अितिहासको

वे खूब जानते हैं। सचमुच, अिन ग्वालोंके सामने अुन गोठानों जैसे स्कूलोंमें कैद रहनेवाले विद्यार्थी दयाके पात्र ही लगते हैं। यह सच है कि वहाँ अुन्हें पढना, लिखना और गणित सीखनेको मिलता है, मगर कितनी भारी कीमत चुकाकर! जिसे सचमुच जीवन कहा जा सकता है, अुसे कुर्बान करके ही अुन्हें अितनी शिक्षा मिलती है।

अिन ग्वालोंका जीवन हर दृष्टिसे पसन्द आने लायक है; अुसमें सजीवता है, आनन्द है और शिक्षाका तो पार ही नहीं। अुनके पास सिर्फ अेक ही चीजकी कमी है, और वह है शिक्षककी। जमीन है, पानी है और बीज है। अिन तीनोंको तैयार करके मिलाने-वाला माली नहीं है। अिनके जीवन घासके जंगलोंकी तरह हैं, जो चौमासेमें कुछ समय हरेभरे दिखाअी देते हैं, मगर सुन्दर, सुघड और सुगन्धित फूलों और मीठे फलोंके बाग कभी नहीं बनते।

हम ग्रामसेवक जब अेक-दूसरेसे मिलते हैं, तब अिन ग्वालोंका बहुत बार विचार करते हैं। हमारे मनमें अिस तरहके विचार अुठते हैं — हम अुनके शिक्षक और मित्र बनकर अुनके साथ घूमें, अुनके खेलोंमें अधिक व्यवस्था और नियम लायें, अुनकी बाँसुरी और नाचमें अधिक स्वर-ज्ञान भरें, चलते-फिरते अुनकी भाषाको संस्कारी बनायें, जिन पशुओं और वनस्पतियोंके बीच वे रहते हैं अुनका विज्ञान अुन्हें सिखायें, अुन्हें भूगोल और खगोलकी कल्पना दें, अिस जमानेके और पिछले जमानेके महापुरुषोंका परिचय करायें, अुनमें अैसा रस पैदा कर दें कि वे अपने आसपासकी चीजोंको सिर्फ देखें ही नहीं, बल्कि ध्यानपूर्वक देखें और नाप-तोलकर व हिसाब लगाकर सब कुछ समझें। वे अपना समय दिन भर केवल भटकने और निरुद्देश्य खेलोंमें न बिता-कर आत्मशिक्षण और अुत्पादक धन्धोंमें लगायें — तकली पर सूत और अून कातें, बिखरी हुअी हड्डियाँ बीनकर अुनका खाद बनायें, अींधन बीनकर भारे बनायें, जंगलकी दवाओंको पहचानें, अुन्हें चुनें और लाकर बीमारों पर अुपकार करें, लकड़ी पर चाकू और फरसे

जैसे छोटे औजार चलाकर अुपयोगी वस्तुअें बनायें, पत्थरो पर खुदाअी करके वैसी ही कुछ-न-कुछ अुपयोगी वस्तु निर्माण करे, चित्र बनाये, नकशे खीचे, बाजे बजायें ही नही बल्कि नये-नये बनायें भी। गीत और कवितायें गायें ही नही, बल्कि नयी-नयी रचनायें भी करे। अगर कोअी रसिक और प्रेमी ग्रामसेवक ग्वालोकी टोलीमे मिल जाय, तो अुनके व्यर्थ बीतनेवाले जीवनमें कितना अधिक अर्थ भर सकता है ? मगर हममें से किसीने अभी तक अुन पर अमल नही किया। किसी दिन कही कोअी रसिक ग्रामसेवक जागेगा और यह काम अपने हाथमें लेगा।

आज तो अिस तरह बिना किसी तरहकी शिक्षाके बडे होनेवाले लडके-लडकियोको ग्रामसेवक किस ढगसे शिक्षा दे सकते है, अिसी योजना पर विचार करेगे।

२. अुन्हें अपनाया जाय

गाँवमें अैसे १२ से १४ वर्षके कअी लडके-लडकी पाये जायेंगे। अिस अुम्रमें अुनके मॉं-बाप बहुत कम आमदनीवाला ग्वालेका धन्धा अुनसे छुडवाकर खेतीके ज्यादा मजदूरीवाले धन्धेकी तालीम देना शुरू करते है। अब तक अुन्हे अेक किस्मकी कुदरती या जगली तालीम मिली है। अब भी अुन्हें खेतीके जो विविध काम करने होगे, वे कम कीमती नही है। मगर ग्वालोके जीवनका आनन्द, खेलकूद और आजादी अब अुनके लिअे नही रहेगी। अब अुन्हें जो काम करना है, वह भेदभाव और अन्यायोसे भरी हुअी दुनियामे करना है। अुसमें अुन्हे पद-पद पर लात-घूंसे खाने और अपमान सहने होग। कदम-कदम पर छल और कपटके शिकार बनना होगा। दरिद्रताकी बाढ अुनको चारो तरफसे घेर लेगी। अुद्योग अुनके पास आल्हाददायक कामके रूपमे नही, बल्कि विषादकारक मजदूरी या बेगारके रूपमें आयेगा। अिस भद्दी दुनियाकी बर्फीली हवा अुनके कोमल जीवनको सुखा देगी।

अुनके मन अुदास हो जायेंगे, आँखे निस्तेज हो जायेंगी, मुँह परसे आनंद गायब हो जायगा और अुनका अुत्साह और अुमंग मर जायेंगे। वे जीयेंगे मगर मृतप्राय होकर।

ग्रामसेवकोंको मेरा सुझाव है कि वे अपने-अपने गाँवमें अिस अुमरके लडकोंको ढूंढ निकाले। सेविकाओंसे मैं कहूँगा कि अैसी लडकियोंकी तलाश करो, अुनके साथ दोस्ती करो और अुनमें विश्वास पैदा करो। जिनके जीवनमें कोअी प्रेम या ममता दिखानेवाला नही, अुन्हें तुम प्रेमसे नहलाओ। अैसे दो-चार या छ लडके-लडकियोंके दिल जीतकर अुन्हें अपनी कुटियामें ले आओ, अुन्हें अपने सहवासका लाभ दो और सुन्दर शिक्षा दो।

अुनका विश्वास सम्पादन करनेमें ग्रामसेवकोंको बहुत देर नही लगेगी। मगर अुन्हें माँ-बापसे अलग करनेमें थोड़ी कठिनाअी होगी। सेवाभावी सेवकोंका कहना माँ-बाप न समझें, अितने जड तो वे हरगिज नहीं होगे। मगर गरीबीके आगे वे लाचार हो जाते है। बच्चे जब छोटे थे तब भी दूसरोंके ढोर चराने भेजे बिना वे अुनका पेट नही भर सकते थे। अब बारह-चौदह वर्षके लडके-लडकियोंको मजदूरीसे न लगाकर आपके पास पढने भेज दें, तो अुनका पालन-पोषण वे कैसे कर सकते है? और अब तो अुनकी मजदूरीसे सिर्फ अुन्हींका पेट भरे, यह नही चल सकता। अुन्हें अपने पेटके अलावा घरके बडे-बूढोंके लिअे, बालगोपालके लिअे और रोगियोंके लिअे भी कुछ-न-कुछ मदद करनी चाहिये। अिसलिअे माँ-बापको समझाना आसान नहीं होगा।

फिर भी यदि आप ग्रामसेवक माता-पिताको यह विश्वास दिला सकें कि वे अपने बच्चोंको आश्रममें आने देंगे, तो अुनके रोटी-कपडेका भार आप माँ-बाप पर नहीं पडने देंगे, तो आपका काम बहुत आसान हो जायगा। बारह वर्षसे अूपरके और अब तक ग्वालेका आनंदी, मेहनती और चंचल जीवन बितानेवाले लडके या लडकियोंके बारेमें माँ-बापको अितना विश्वास दिला देना सेवकोंके लिअे कठिन न होना चाहिये।

वे आश्रम जीवनका लाभ अुठाते रहे, सीखने-जैसा सब कुछ सीखते रहे और अपने गुजर लायक कमाते भी रहे, अैसी दिनचर्या अुनके लिअे बना देनेका काम सेवक आसानीसे कर सकेंगे।

३. शीघ्र शिक्षणका प्रयोग

सेवकोंके सहवाससे जैसे वे लाभ अुठायेंगे, वैसे ही अुनके सहवाससे सेवकोंको भी कम लाभ नही होगा। सेवकोंको अपनी कुटियामें सोने-बैठने, नहाने-धोने, खाने-पीने — सुबहसे रात तककी सारी दिनचर्यामें चौबीस घंटेके साथी मिल जायेंगे। और वे कितने आनंदी, अुत्साही और चपल होंगे — किसी भी नये कामको देखते ही देखते सीख लेनेकी योग्यतावाले और अिन सबसे अधिक श्रद्धालु। सेवककी कुटियाका वातावरण अिनसे भरापूरा और जीता-जागता बन जायगा।

अुनके कारण सेवक अब किसी भी काममें अकेला नही रहेगा। वह बालवाडी चलाता हो या कुमार और कन्या-आश्रम चलाता हो, अुसमें अिन ग्वालवालोंसे अुसे कितनी बडी मदद मिलेगी? वह ग्रामसफाअीका काम करता हो, कताअी करता हो या पींजन चलाता हो — हर काममें अैसे अुत्साही और आज्ञाकारी साथी मिल जानेसे अुसका अुत्साह दूना हो जायगा।

अब अिस पर विचार करें कि सेवकों या सेविकाओंको अुन्हें क्या सिखाना चाहिये? हिन्दुस्तानी तालीमी संघने वर्धा शिक्षण योजनाका सात वर्षका जो पाठ्यक्रम तैयार किया है, अुतनी शिक्षा तो अुन्हें दे ही देनी चाहिये।

अलबत्ता, यह शिक्षण लेनेमें अुन्हें छोटे बच्चों जितना समय नही लगेगा। मेरा यह निश्चित मत है कि ये कुमार और कन्याअें सात वर्षमें बंटे हुअे अिस पाठ्यक्रमको दो वर्षमें पचा सकते हैं। अिसलिअे अिस योजनाको हम **बड़ोंका शीघ्र शिक्षण** नाम दें, तो गलत नही होगा। काकासाहब कालेलकरके साथ अिस बारेमें चर्चा होने पर

अुन्होंने अिसका पूरा समर्थन किया है। मेरे मनमें यह जो विचार आया, वह भी असलमें अुन्हींसे लिया हुआ होगा। मैं जानता हूँ कि अुन्होंने अपने मित्रोंके कअी लडके-लडकियोंको वडी अुम्र तक पाठशाला न जानेका अुपदेश दिया है। लकीरके फकीर वन हुअे माँ-वापसे, जो अिस अुपदेशको हँसीमें ही अुडा देते हैं, वच्चोंको अिस पर अमल करने देनेकी आशा कैसे रखी जा सकती है? मगर चन्द अुदाहरण मुझे मालूम हैं जिनमें वच्चोंने काकासाहवके अुपदेशका अक्षरशः पालन किया और माँ-वापने अुसमें वाधा नहीं डाली। वादमें अुम्र और अनुभव वढने पर और सीखनेकी भूख खुल जाने पर अिन वच्चोंने वडी अच्छी प्रगति दिखाअी है। अैसे नमूने वहुत नहीं, मगर जितने हैं अुतने अिस शीघ्र शिक्षणकी कल्पनाकी पुष्टि करनेवाले हैं।

वच्चे पाँच-छः वर्षके हो जायँ और पाठशाला न जायँ, तो माँ-वाप वहुत घवराते हैं। अिस जमानेके लोग तो घवराते ही हैं, परन्तु अुपनिषद् कालके ऋषि भी श्वेतकेतु वारह वर्षका होने तक गुरुके घर नहीं गया अिसलिअे घवरा गये थे और अुन्होंने लड़केको 'ब्रह्मवन्धु'* कहकर अुलाहना दिया था। वादमें जव वह गुरुके घर गया, तो वडी तेजीसे और सव ब्रह्मचारियोंसे आगे वढ गया। अिस प्रकार यह कथा भी वडोंके शीघ्र शिक्षणकी योजनाका समर्थन करती है।

नियमित और व्यवस्थित आदतोंवाले सेवकों और सेविकाओंके लिअे यह अेक कर दिखाने लायक प्रयोग है।

वर्षोंसे मेरा यह मत रहा है कि पाँच सालकी अुम्रसे वच्चोंको स्कूलमें भेज देनेकी जो प्रथा पड गयी है, अिसमें किसी भलेमानुसने वडी भारी भूल की है और संसारके करोडों वालकोंको नाहक तकलीफमें डाल दिया है। अिस प्रथासे वच्चोंके वढने और विकास

---

* ब्राह्मणोचित कर्म न करनेवाला, नामका ब्राह्मण।

करनेके कीमती वर्ष कृत्रिम, शुष्क और निरर्थक प्रवृत्तियोंमें नष्ट हो जाते है। अितना ही नुकसान नही होता, बल्कि वे जो कुछ लिखना-पढना, हिसाब वगैरा स्कूलमे सीखते है, वह भी कच्ची अुम्रके कारण वे पूरी तरह समझ नही पाते। अुनके हाथ-पैर, आँख-कान, जीभ और मन भी कच्चे और अनुभवहीन रह जाते है और हमेशाके लिअे कुम्हलाये हुअे और बेडौल बन जाते है।

छोटे बच्चे पूरे सात साल तक स्कूलमें ककहरा रटने पर भी पढने-लिखनेकी जो कला नही सीख सकते या जो पहाडे और गणित नही पढ सकते, वही ये पहाडो और जगलोमें घूमने फिरनेवाले बच्चे बारह-चौदह वर्षकी अुम्रमे शुरू करके दो सालमें सीख जायँगे। अितना ही नही, अब तक ढोर चराते चराते मिली हुअी कुदरती तालीमके कारण अिस पढाअीको वे ज्यादा लाभदायक बना सकेगे। अुदाहरणके लिअे, कच्ची अुम्रमें बिना समझे सीखा हुआ वाचन ज्यादातर अटकता हुआ और बेमेल ही होता है। ये बडे बच्चे पूरे भावोंके साथ अुचित जोर देकर और ठीक विरामके साथ पढ सकेगे। कच्चे बालक बिना समझे पहाडे और हिसाब रट-रटकर गणितके शत्रु बन जाते है। ये ग्वाले तो गणितशास्त्रियोकी तरह आँकडोंके साथ खेल करेगे। कच्ची अुमरके बालकोसे लिखे हुअे अक्षर पर बार-बार वही अक्षर लिखवानेके कारण आजकलके स्कूलोमें ज्यादातर बच्चे आडे-टेढे अक्षर लिखने लगते है। ग्रामसेवकोके अिन बडी अुम्रके शिष्योकी अँगुलियाँ अनेक प्रकारके काम करके और खेल खेलकर तैयार होनेके कारण और अुनकी आँखे चीजोकी आकृतियाँ अच्छी तरह ग्रहण करनेकी अनुभवी होनेके कारण, कुदरती तौर पर वे ज्यादा अच्छी आकृतिवाले सुन्दर और चित्रो-जैसे अक्षर ही लिखेंगे।

अिस प्रकार यह प्रयोग शीघ्र शिक्षणका ही नही, बल्कि शुद्ध शिक्षणका भी माना जायगा।

४. आवश्यक सूचनाअें

अब जो ग्रामसेवक और सेविकाअें यह पढकर अुत्साहसे आ जायें और बडोंके शिक्षणका प्रयोग करनेको कमर कस ले, अुनके लिअे यहाँ कुछ जरूरी सूचनाअे दूंगा –

(१) **सहशिक्षण-सम्बन्धी विवेक :** शीघ्र शिक्षणके लिअे गाँवमें अुम्मीदवार ढूंढने पर लडके और लडकियां दोनों मिल जायेंगे, क्योंकि ढोर चरानेका काम १२ सालकी अुम्र तक दोनोंके हिस्सेमें आता है। दोनों ही अेकसे हँसमुख, अेकसे चपल और अेकसे तेज पाये जाते है। दोनोंमें अुम्रके लिहाजसे लडकियां ज्यादा बुद्धिमान, गम्भीर, कुशल और अुत्साही मालूम होंगी।

अिनमें से ग्रामसेविकाअें तो लडकियोंको ही पसन्द करें। लडकियोंके साथ शिक्षाके मामलेमें अितना अन्याय हुआ है कि पुरुष सेवकोंका भी लडकियोंके प्रति पक्षपात होना स्वाभाविक है। मगर वह स्वाभाविक होने पर भी सेवकोंका अपनी शक्तिको देखकर अुसकी मर्यादामें रहना ही अुचित होगा।

अिस शीघ्र शिक्षणकी योजनामें १२ सालसे अूपरके लडके-लडकियोंके साथ काम लेना है और अुन्हें अपने आश्रममें रात-दिन साथ ही रखना है। अिसलिअे सेवकको सख्तीसे मर्यादाका पालन करना चाहिये। गांवोंमें बैठे हुअे सेवक या सेविकाअें ज्यादातर समूहमें नहीं रहते, छोटीसी कुटिया ही अुनका केन्द्र होती है, जिसमें वे अकेले ही रहते हैं। अैसी हालतमें पुरुष सेवक शीघ्र शिक्षणके लिअे लडकोंको और सेविकायें लडकियोंको ही ले, यह मर्यादा स्वाभाविक है और अिसका पालन जरूरी है। पति-पत्नी मिलकर ग्रामसेवा करते हों, तो वे मिश्रमंडल अिकट्ठा कर सकते हैं। मगर अुसमें भी विवेक रखना पडेगा। पत्नी अगर सिर्फ पतिके साथ अुसका घर सँभालनेके खातिर ही गअी हो, तो अैसी परिस्थितिमें लडके-लडकियोंको अेक साथ

रखनेकी मै सलाह नही दूंगा। पत्नी अपनेको सेविका मानकर साथ गअी हो और पूरी दिनचर्यामें लडकियोंके साथ रहती हो और अिसी तरह पति लडकोंके साथ रहता हो, तो ही मिश्रमडल रखना अुचित होगा। मगर अैसा तभी किया जाय, जब अुनके पास आश्रममें काफी जगह हो या दो अलग-अलग झोपडियां हो।

(२) **सख्या** · अिस तरहके शीघ्र शिक्षणके विद्यार्थियो या विद्यार्थिनियोंकी सख्या चार या छ से अधिक न बढने दी जाय। ग्राम-सेवकोंको जगहका, साधनोका, खर्चका और अपने दूसरे कामोका —अिस प्रकार सभी बातोका विचार करके ही अपनी मर्यादा ठहरानी पडती है। मेरी बताअी हुअी सख्यासे ज्यादा रखनेका मोह करनेसे अुन्हें अिनमें से हरअेक बातमें बोझ मालूम होगा। अितनी मर्यादा रखी होगी, तो ये छोटी मडलियां भाररूप होनेके बजाय आश्रमके हर काममें अुत्साह बढानेवाली साबित होगी।

(३) **आश्रमवासकी अवधि :** हम यहां अैसे गरीब घरके बच्चोका ही विचार कर रहे है, जिन्हें जरा चलने-फिरनेके लायक होते ही ढोर चरानेके काममें लगा देना पडा था। अुनके थोडे जवान होते ही मां-बाप स्वभावत यह आशा रखने लगे थे कि वे बडी मजदूरी करेगे और घरका भार अुठानेमे मदद करेगे। अैसे मां-बापसे अलग करके हम अुन्हे आश्रममें लाये है। वे जब तक आश्रममें रहेगे, तब तक अुनका बोझ मां-बाप पर नही पडने देंगे, यह विश्वास दिलाकर ही हम मां-बापको अुन्हे छोडनेके लिअे राजी कर सके है। अिसलिअे अिन बच्चोंकी आश्रमवासकी अवधि बहुत लम्बी न होनी चाहिये। मेरे खयालसे वह 'वर्धा शिक्षण योजना' का पाठ्यक्रम पूरा कराने जितनी होनी चाहिये। मै मानता हूं कि अुनकी अुम्र और अनुभवका लाभ मिल जानेके कारण दो सालमें अुतना शीघ्र शिक्षण आसानीसे हो सकता है।

(४) **खर्चेका सवाल:** विद्यार्थी पूरा समय आश्रममें बितायें, यह अिस योजनाकी असली बुनियाद होनेके कारण अन्न-वस्त्र आदिके खर्चेका सवाल अवश्य ही अुठेगा। अैसी सभावना नही कि वह मां-बापसे मिल जाय। और चदे, दान आदि पर आशा रखना भी ठीक नही। भिक्षा लेनी हो तो वह भी गांवसे या अपने कामसे खास प्रेम रखनेवाले स्नेही वर्गसे ही अनाज, कपास वगैराके रूपमे ली जाय। मगर मुख्य आधार तो अिन विद्यार्थियोंके अुद्योग पर ही रखना चाहिये। वे रोज छ घंटे अुत्पादक अुद्योग करेंगे, तो सहज ही अपने गुजरके लायक कमा लेंगे। अितना ही नही, अुनका काम सच्चे दिल और अुत्साहसे होगा, अिसलिअे वे गुरुदक्षिणाके रूपमें आश्रमको भी कुछ न कुछ मदद दे सकेंगे।

कताअी, पिजाअी और खेती-काम, ये तीन अैसे अुद्योग है कि किसी भी गांवमे और किसी भी मौसममे अिनमे से अेकाध अुद्योग तो ग्रामसेवक पूरी तरह करा ही सकेगा।

कताअीसे छ घंटेमें ४ से ६ आने आसानीसे मिल जाते है। पिजाअीसे तो आठ आने तक कमा लेना आसान है।

खेतीमे आसपासके किसानोंके साथ कोअी व्यवस्था की हो और वे यह जानते हो कि ग्रामसेवक खुद भी साथ रहेगा, तो अलग-अलग मौसमोंमें ८ आने रोजका काम प्राप्त कर लेना आसान हो जायगा।

बुनाअी भी अच्छा अुद्योग है और अुससे कोअी नौ महीनेकी तालीमके बाद ६ से ८ आने रोज कमाये जा सकेंगे।

जो सेवक बुनाअी जानते हो, वे खुद करघा लगायें और अुनमें अिन मित्रोंसे मदद लें, तो बहुत थोडी कोशिशसे ये बुनाअीकी कला सीख लेंगे। मगर यह अनेक क्रिया-प्रक्रियावाला और समय लेनेवाला अेक विशाल अुद्योग होनेके कारण और साथ ही अुसके

औजारोके लिअे भी थोडी पूंजी आवश्यक होनेके कारण सेवकको शुरूमें कही न कहीसे मदद जुटा लेनी पडेगी।

अिन चार कामोमें से शीघ्र शिक्षणकी योजनाकी दृष्टिसे मैं तो पिंजाअीको ही कामधेनु मानता हूँ। आजकल हमेशा ही अच्छी पूनियोकी मांग की जाती है। विद्यार्थियोको यह काम अच्छी तरह सिखा दिया जाय और वे मन लगाकर सुन्दर पूनियाँ बनावे, तो ग्राहक ढूंढने या पूरे दाम मिलनेकी चिन्ता ही न रहे। और मौसमके वक्त यदि आश्रमकी सारी मडली चलते-फिरते आश्रममें बदल जाय और चरखे तथा खादीका शौक रखनेवाले गांवोमें पीजन लेकर पहुँच जाय, तो महीने दो महीने तक वह खूब अच्छा और कमाअीका धन्धा कर सकती है। वे लोग अपनी रोजीके सिवाय घी, गुड और दूध भी निश्चित मात्रामें न्यायपूर्वक मांग सकते है, और ग्रामवासी बहुत प्रेमसे देंगे भी।

ग्रामसेवकको अितनी सावधानी रखनी चाहिये कि अुसकी मडली आश्रमके बदले मजदूरोकी टोली न बन जाय। वे जिस जगम आश्रमके रूपमें घूमते हो, अुसीके अनुसार अुन्हे बरतना भी चाहिये। यानी आश्रमकी सारी दिनचर्या आग्रहके साथ जारी रखनी चाहिये। अैसा करनेसे वे गांवसे अपनी रोजी तो कमा ही लेगे, साथ ही गांवमें आश्रमी शिक्षा भी अनायास फैला सकेगे।

(५) **पढ़ाअी** याद रखना चाहिये कि हम शीघ्र शिक्षणकी योजनाका विचार पाठशालाकी पढाअीसे अछूते सयाने लडके-लडकियोको नजरमें रखकर ही कर रहे है। अुनकी स्कूलकी पढाअीकी कमी पूरी करनेकी ओर ग्रामसेवकका खास ध्यान होना जरूरी है। गुजरातीकी सात कक्षाओ (वर्नाक्युलर फाअिनल) तक विद्यार्थियोको वाचन, लेखन, गणित, विज्ञान, अितिहास, भूगोल वगैराकी जितनी जानकारी मिल जाती है, अुतनी तो अुन्हे दे ही देनी चाहिये।

साधारण पाठशालाओंमें अिन विषयोंका जितना ज्ञान मिलता है, अुससे हमें बहुत असन्तोष है। वह बहुत थोड़ा और अधूरा होता है। हमें तो 'वर्धा शिक्षण योजना' के नामसे हिन्दुस्तानी तालीमी संघने जो पाठ्यक्रम बना दिया है, अुससे जरा भी कमसे सन्तोष नहीं मानना चाहिये।

अिस पाठ्यक्रममें १ मूल अुद्योग, २ मातृभाषा, ३ गणित, ४ समाज-परिचय, ५ सामान्य विज्ञान, ६ आलेखन, ७ संगीत और ८ हिन्दुस्तानी — अिस प्रकार आठ विषय बताये गये हैं। ग्रामसेवक देखेंगे कि जंगलोंसे परिचित अुनके विद्यार्थी अनुभवके कारण अिनमें से कुछको तो पाठ्य-पुस्तकोंमें जितना दिया होता है, अुससे ज्यादा जानते हैं। अुनके अिस अनुभवको धीरे-धीरे शास्त्रीय भाषामें और शास्त्रीय ढाँचेमें ढालकर जैसे-जैसे आप अुन्हें देते जायँगे, वैसे-वैसे आपके विद्यार्थियोंकी आँखों और वाणीमें ज्ञानका तेज चमकने लगेगा।

अिस पढ़ाअीके लिअे दिनमें तीन घण्टेका समय रखनेकी मेरी सिफारिश है।

मूल अुद्योग कताअी, पिंजाअी और खेतीसे विद्यार्थियोंको मिल जायगा। अुत्पादनके लिअे ये अुद्योग छः घंटे तक चलेंगे। अुनमें ग्राम-सेवक विद्यार्थियोंके साथ ही रहेगा, अिसलिअे अुद्योगके चलते हुअे ही अुसके सम्बन्धका बहुतसा सिद्धान्त-ज्ञान अुन्हें आसानीसे मिल जायगा। सेवकको यह ज्ञान बुद्धिपूर्वक विद्यार्थियोंको देना ही चाहिये। फिर भी कुछ प्रयोगके रूपमें, कुछ कलाके रूपमें और कुछ गणित, भाषादिके रूपमें अिन सभी अुद्योगोंके अंग-अुपांगोंकी शिक्षा बच्चोंको देना जरूरी होगा। अिसके लिअे हमारे दो घंटोंमें से रोज आधा घंटा काफी होगा।

वाचन, लेखन और गणितकी प्रक्रियाओंसे ये विद्यार्थी बिलकुल अनजान होते हैं। अुनके मन पर ऐसी छाप होती है कि ये कोअी बड़ी रहस्यमय और कठिन वस्तुअें हैं। पढ़ने-लिखनेवाले विद्यार्थियोंको

वे दूरसे अेक कारके आश्चर्यसे देखा करते हैं। अुनके मनमें यह डर घुस जाता है कि अुन्हे यह कभी आ ही नही सकता। 'पक्के घडे पर किनारे नही लग सकते,'* यह कहावत रोज अुनके कानों पर पडती रहती है और अपना काम करती रहती है। मगर सेवक रोज अेक घटेके हिसाबसे अिन विषयोंके लिअे समय देगा, तो दो सालमें आसानीसे वह निश्चित मजिल पर पहुँच जायगा, अिस बारेमें मुझे शका नही है। आलेखन और हिन्दुस्तानीका भी अिस अेक घटेमे समावेश किया जा सकता है। और यदि सेवक सगीतमें ताल-स्वरका कुछ ज्ञान रखता हो, तो अुसका भी अिसीमें समावेश कर लेना मुश्किल नही।

अब रहे समाज-परिचय और सामान्य विज्ञानके दो बडे विषय। ग्रामसेवक हमेशा तरोताजा रहनेवाला होगा, तो अपने विद्यार्थियोको अिनमें भी बहुतसी नयी और रसमय सामग्री दे सकेगा। मगर वह यह देखेगा कि विद्यार्थियोने भी अपने ग्वालेके जीवनमें अिनमें से कितनी ही बाते खासी मात्रामें जान रखी हैं। अिन विषयोंके लिअे रोज आधे घटेसे ज्यादा अलग समय निकालनेकी जरूरत नही। वह भी अिसीलिअे कि कुछ न कुछ प्रयोगके रूपमें सिखाना पडता है। वर्ना आश्रमकी सेवा-प्रवृत्तियोमें, प्रार्थनाओमें, रसोअी वगैरा घरके कामोमें और रोजके अुत्पादक अुद्योगोमें यह सब ज्ञान देनेका मौका सेवकको बार-बार मिल सकता है।

(६) **आत्म-शिक्षण**. हमने पढाअीके लिअे तीन घटे रखनेका विचार किया है। अुनमें से हमने दो ही घटे काममें लिये है। अभी हमारे पास पूरा अेक घटा बाकी है। सेवक अनुभवसे देखेगे कि अुनके विद्यार्थियोकी बुद्धि प्रेम और पथ-प्रदर्शन मिलने पर देखते-देखते चमक

---

* यह 'पाके घडे काठा न चडे' अिस गुजराती कहावतका शाब्दिक अर्थ है। अुसका भावार्थ है बडी अुमरमें कोअी नअी बात सीखी नही जा सकती।

अुठेगी, अुनकी जिज्ञासा अकालके बाद जागनेवाली भूखकी तरह भडक अुठेगी और अुनमे पढने-लिखनेकी नअी आँख खुलने पर तो वह हवामें आगकी तरह और भी बढ जायगी। वे थोडे ही समयमे जो कुछ हाथमें आयेगा अुसे झटपट पढने और समझने लगेगे। सेवक अुस समय अुनके हाथमें पाठ्यक्रमके लिअे पोषक सिद्ध होनेवाला वाचन धीरे-धीरे देता रहे और जो भरकर अुन्हे रसपान करने दे — लेकिन अिस अेक घंटेकी मर्यादामें रहकर ही। कुछमें नकशे खीचने, गणितके सवाल हल करने, विज्ञानके प्रयोग करने, चित्र बनाने, काव्य और गीत कठस्थ करने, कवितायें और कहानियाँ लिखने वगैराके शौक भी जाग्रत हो जायेंगे। अैसी वृत्तिवालोके लिअे भी यह घटा जरूरी है। जो कारीगर-स्वभावके होंगे, अुन्हे अपने अुस स्वभावके अनुसार शौक लगेंगे। जैसे आन्ध्र-पद्धतिसे तुनाअी करके सौ नबरका सूत कातना, दोनो हाथोंसे कातना सीखना और सुन्दर तकलियाँ, धनुष-तकलियाँ वगैरा चीजें बनाना। अुन्हे भी अपना यह स्वतत्र घटा मिलना ही चाहिये।

वर्धा शिक्षण योजनामें सारा पाठ्यक्रम विस्तारसे दिया गया है, अत यहाँ मै अुसकी विशेष चर्चा नही करता। अितना ही कहना है कि अुसका बहुत कुछ भाग, जो छोटी अुम्रके बच्चे महीनो और वर्षोके अभ्याससे पूरा कर पाते है, अुसे ये बडे बच्चे कुछ ही सप्ताहमें पूरा कर लेगे। बडे बच्चोको बालपोथीसे शुरू करके धीरे-धीरे पढना सिखाने अथवा अेक-दोसे शुरू करके क्रमश गणित सिखानेकी तो शायद ही जरूरत पडेगी। यह तो हँसीके लायक और बेकार वक्त बिगाडनेवाली पद्धति हो जायगी। फिर भी मै जानता हूँ कि प्रौढ-शिक्षणके नामसे जो अनेक वर्ग खुलते है, अुनमें अिसी हास्यास्पद ढगसे काम होता है, जिससे प्रौढ विद्यार्थी अूब जाते है। अिसलिअे ग्रामसेवकोको अितनी चेतावनी यहाँ दे देता हूँ।

(७) **सेवा** यह योजना दीखनेमें तो बड़ोंका शीघ्र शिक्षण करके अुनकी निरक्षरता मिटानेकी ही है। मगर अिसे हम ग्रामसेवकके अनेक कामोंमें से अेक कामके रूपमें ही मानते हैं। और क्या ग्राम-सेवकका सिर्फ पाठशालाके मास्टरजी जितना और जैसा काम करनेसे ही संतोष हो सकता है? अुसकी दृष्टि तो कुदरती तौर पर यही हो सकती है कि वह अपनी जातिको बढ़ाये, गाँवके मामूली और आवारा लड़के-लड़कियोंको आकर्षित करके अुन्हें आश्रमकी शिक्षाका अमृत पान करावे और अुन पर ग्रामसेवाका रंग चढ़ाये।

अिसके लिअे वह जरूर सोते-बैठते, नहाते-धोते, खाना बनाते और बर्तन माँजते, झाड़ू देते और पाखाना साफ करते समय अपने मनमें बसी श्रद्धाका विद्यार्थियोंमें संचार करनेकी कोशिश करेगा। अुद्योगों और वाचन, लेखन आदिकी शिक्षामें भी वह अपनी अिस चीजको गूँथ देगा।

अिस तरह सेवाभाव सिखानेके लिअे कोअी अलग समय नहीं हो सकता। फिर भी कोअी अलग समय मानना हो, तो प्रार्थनाओंको अुसमें रखा जा सकता है। अिनमें सुबह आधा और शामको अेक अिस तरह कुल मिलाकर डेढ़ घंटा देना अुत्तम होगा। अिससे विद्यार्थी खुद जो कुछ करेंगे, पढ़ेंगे और अुद्योग करेंगे, वह सब अुन्हें सोद्देश्य मालूम होगा और वे अुत्साह भी अनुभव करेंगे। अुनका जीवन ज्ञानमय बनानेमें प्रार्थनाअें अुन्हें अमूल्य सहायता देंगी।

परन्तु अुनके पीछे दिन भरका सेवामय जीवन न हो, तो केवल प्रार्थना ही अुस अुद्देश्यको पूरा नहीं कर सकेगी। सेवकका निजी जीवन सेवामय होगा अिसलिअे वह खुद तो सेवा करेगा ही और विद्यार्थियोंको भी सेवाभावकी प्रेरणा देगा। आश्रममें पाखाना खुद साफ करनेका नियम आग्रहपूर्वक रखा गया होगा, तो मनुष्योंमें और काममें अूँच-नीचका भेद जड़मूलसे अुखड़ जायगा। अिसके सिवाय आश्रममें

ग्रामसेवाके कुछ-न-कुछ काम नियमित रूपसे होते रहेंगे और अुनमें विद्यार्थियोंको अनको काम करनेका अवसर मिलेगा। ग्राम-सफाअी अेक अैसा ही काम है। आश्रमवासियोंको रोज सुबह सतत, निरंतर, अखंड रूपसे अेकाध घंटे यह काम करनेका नियम रखना चाहिये। बालवाडी चलाअी जाती होगी, तो अुसमें मदद करके विद्यार्थी सेवाधर्मकी कितनी सुन्दर और रसपूर्ण तालीम पा सकेंगे? कुमार या कन्या-आश्रम चलता होगा, तो वह भी सेवाकी तालीम देगा। सेवक गांवमें बीमारोंकी शुश्रूषा करनेमें रस लेता होगा, तो अुसमें भी सेवाकी तालीम पानेका विद्यार्थियोंको कितना कीमती अवसर मिल सकता है? सेवक गांवके बेकारोंको चरखे आदिके द्वारा रोजी देने और भिन्न-भिन्न ग्रामोद्योग सिखानेका प्रयत्न करता होगा, तो अुसमें भी विद्यार्थी मदद करेंगे और तालीम पायेंगे। गांवमें तो दलितोंकी रक्षा करने और अुनकी खातिर कभी-न-कभी सत्याग्रह करनेके प्रसंग ग्रामसेवकके जीवनमें आ ही जाते हैं। विद्यार्थियोंको अुनका भी लाभ मिल सकता है।

अैसे सेवाकार्योंके लिअे हरअेक विद्यार्थी दिनभरमें अेक डेढ़ घंटा दे सके, अैसी व्यवस्था रखनी चाहिये। आश्रमवासियोंकी संख्याके अनुसार रोज ग्राम-सफाअी, बालवाडी, बीमारोंकी देखभाल आदि काम नियमित रूपसे आपसमें बांट-बांट कर करने चाहिये।

(८) दिनचर्या: अभी तक हमने ग्वालोंके शीघ्र शिक्षणकी योजनाके विभिन्न अंगों पर विचार किया। अुसके अनुसार बडी अुमरके विद्यार्थी रखनेवाले ग्रामसेवकोंके आश्रमोंका दिन आम तौर पर नीचे लिखे अनुसार विभाजित होगा —

१॥	घंटा	प्रार्थनाओंमें
२	"	पढ़ाअीमें
१	"	आत्म-शिक्षणमें
६	"	अुत्पादक अुद्योगोंमें

१॥ " सेवाकार्यमें
३ " रसोअी आदि गृहकार्यों और नहाने-धो वगैरामें
१ " खेलकूद और व्यायाममें
८ " सोनेमें

मैं आशा रखता हूँ कि अुत्साही ग्रामसेवक और सेविकाअें अिस योजनाको अपना लेगे। अुन पर नये कामका भार और चिन्ता तो जरूर बढेगी, परन्तु मैं यह विश्वास दिलाता हूँ कि अुसके बदलेमें ग्वालोंके दाखिल होनेसे अुनके आश्रमका जीवन अपूव रससे छलकने लगेगा।

अिस योजनाको अपनानेवाले मित्रोको मैं अतमे याद दिलाता हूँ कि अिस योजनामें 'शीघ्र शिक्षण'का अेक प्रयोग भी जुडा हुआ है। छोटे बच्चोको पाँच वर्षकी अुम्रसे ही स्कूलमे भेजकर अनावश्यक वाचन, लेखन और गणित आदिकी तकलीफमे न डालकर, अगर बचपनमें अनेक छोटे-छोटे कामो और खेलकूदमें मस्त रहने दिया जाय और बारह सालकी अुम्रमें शिक्षाकी अैसी कोअी व्यवस्था कर दी जाय, तो सात वर्षकी पढाअी वे दो वर्षमे ही ज्यादा अच्छी तरह, ज्यादा बुद्धिपूर्वक और ज्यादा रसके साथ पूरी कर लेगे। यह योजना ग्राम-सेवक अपना ले, तो मैं मानता हूँ कि अिस प्रयोगसे शिक्षा-जगतमें क्रातिकारक खोज होगी।

४

ग्राम-सफाओी

हालाँकि अिस लेखमालामें यह प्रकरण मैं बहुत देरसे लिख रहा हूँ, फिर भी गाँवमें जाकर बैठनेवाले सेवकके लिअे शुरूमें ही करने जैसा अगर कोअी काम हो तो यही है। क्योंकि

अेक तो अिस कामको शुरू करनेके लिअे किसी खास खर्चीले साधन या सरजामकी जरूरत नही पडती,

दूसरे, और साथियोंकी मदद न हो, तो ग्रामसेवक, अकेला भी अिसे शुरू कर सकता है,

तीसरे, चुपचाप नियमित रूपसे ग्राम-सफाओी करनेवाला मनुष्य थोडे ही दिनोंमें गाँवके स्त्री-पुरुषों और बालकोंसे परिचित हो जाता है, और अुसके प्रति अुनमें सहानुभूति तथा प्रेम पैदा हुअे बिना नही रहता।

नियमित काम करें

ग्राम-सफाओीका काम ज्यादातर किसी प्रासंगिक राष्ट्रीय कार्य-क्रमके अंगके रूपमें किया जाता है। अुस रूपमें तो यह करने लायक है ही और वह लोगों पर अपना अच्छा असर भी छोड जाता है। मगर ग्रामसेवा केन्द्रकी कार्य-पद्धति अिस प्रकार वर्षमें कुछ दिनोंके कार्यक्रम बनानेकी ही रहे यह ठीक नहीं है। ग्रामसेवक अिस कामको हाथमें ले, तो रोज नियमित रूपसे और बिना चूके अुसे जारी रखे। सूरज जैसे रोज सुबह होते ही बिला-नागा अुग जाता है, वैसे ही ग्रामसेवक भी अपने निश्चित समय पर झाडू लेकर आ ही पहुँचे — अितनी नियमिततासे अुसे अपना ग्राम-सफाओीका काम करना चाहिये।

जो भी करें पूरा करें

ग्राम-सफाअीके काममें सेवक कितना समय देना चाहता है, यह अुसे खुद ही पहलेसे तय कर लेना चाहिये। अुतने वक्तमें वह कितना काम पूरी तरह कर सकेगा, अिसका अदाज भी अुसे लगा लेना चाहिये। अगर अुसे दूसरे साथी मिल जायँ, तो वे सब मिलकर निश्चित समयमें कितना काम पूरा कर सकेंगे, अिसका अदाज लगा लिया जाय। किसी भी हालतमें अधूरा काम छोडकर जानेका मौका नही आने देना चाहिये। सेवक विना किसी अदाजके झाडू लगाता रहे और फिर समय पूरा हो जाने पर कचरेके ढेर जहाँके तहाँ छोडकर चला जाय, कोनोंमें जमी हुअी गन्दगीकी तरफ नजर तक न डाली जाय और वादमें नहा-धोकर साफ होनेके लिअे भी समय न रहे — अैसी हालत पैदा न होने देना चाहिये। ग्राम-सफाअीमें क्या-क्या काम करने है, यह विस्तारसे सोच लेना चाहिये और अपने पास जितना समय और शक्ति हो अुतना ही काम करना चाहिये, और जितना करना हो, अुतना पूरा करके ही जाना चाहिये।

रास्तोंकी सफाअी

आम रास्तोकी सफाअीका अर्थ सिर्फ अितना ही नही कि झाडू लेकर अुन्हे वुहार दिया जाय। गहराअीमें जायँ तो अुसमें अिस प्रकारके काम करने होंगे

१ रास्ते पर झाडू लगाना।

२ रास्तेके किनारो पर वच्चे टट्टी कर गये हो, तो अुसे अुठाकर घूरो पर पहुँचाना या खड्डा खोदकर गाड देना।

३ किसी कोनेका लोग पेशावके लिअे अिस्तेमाल करते मालूम हों, तो अुस कोनेकी मिट्टी खुरचकर अुसे घूरे पर ले जाना और वहाँ नअी मिट्टी डालना।

४ रास्तेमें खड्डे पड गये हो तो अुन्हें पूरना।

५ रास्ते पर दर्जी, मोची या हज्जाम वगैराके घर या दुकाने हो, तो वहां अुनके धन्धेका कचरा जमा होता पाया जायगा। अिस सब कचरेको सोच-समझकर ठिकाने लगाया जाय। दर्जीके चिथडे कागज बनानेवालोंके लिअे अिकट्ठे किये जा सकते है, मोचीका चमडेका कचरा वाडीवालोको खादके लिअे दिय जा सकता है, कांटे-लकडी वगैरा जला दिये जायें, टीन, अीटोके टुकडे और कांच वगैरा चीजे जमा करके किसी भरने लायक खड्डेमें गाड देनी चाहिये। जिन चीजोका खाद न बन सकता हो, अुन्हे घूरो पर हरगिज न डाला जाय। क्योंकि बादमे खेतोमें काम करते वक्त वे किसानोको बहुत तकलीफ देगी।

रास्तेकी सफाअीमे कौन-कौनसे काम करने होगे, यह सोचकर अुनके लिअे जरूरी साधनोका विचार भी पहलेसे ही कर लेना होगा। ग्राम-सफाअीके लिअे सिर्फ झाडू ही लेकर चल देना ठीक नही होता। अिस कामके लिअे जरूरी साधन ये है

१ झाड् तो जरूरी है ही। रास्ते झाडनेके लिअे देहातमे सादा, सस्ता और किसी भी किसानके घर मिल सकनेवाला साधन तुवरके डठलका झाड् है। वह सस्त और हलका होता है। मगर जिसे दिनमें तीन-चार घटे सफाअीका काम करना है, अुसका झुककर झाडू लगाना ठीक नही। अिस तरह झाडनेमे कचरा और धूल मुह और नाकमे घुसती है। अिससे बचना चाहिये। अिसलिअे सेवकको खडा झाडू बना लेना चाहिये। खडे झाडूका पखा नारियलके पत्तोके डठलोका बनाया जाता है। गुजरातमें नारियलके पेड नहीके बराबर है, मगर अिन डठलोंके गट्ठे मलाबारकी तरफसे नावोंके जरिये बडी मात्रामे मँगाये जाते है। कुछ लोग बांसकी तीके बनाकर अुनके खडे झाडू बनाते है, मगर वे बहुत भारी हो जाते है। अिसलिअे लम्बे समय तक सफाअी करनेवालेका अुनसे काम नही चल सकता।

खडा झाड लगाना अेक कला है। बहुतसे नौसिखिये खडा झाडू हाथमें होने पर भी अुसे लम्बा फैलाकर और झुककर बुहारते पाये

जाते हैं, और झाड़ूके डंडेको अुलटे हाथमें पकडते हैं। मगर यह कला अेक दूसरेसे सीख लेनी चाहिये।

२ दूसरा साधन है टोकरी। जैसे-जैसे कचरा बुहारते जायें, वैसे वैसे अुसे अुठाते जानेके लिअे टोकरीकी जरूरत होगी। अुसे भीतरसे लीप लेना चाहिये, ताकि अन्दर भरा हुआ कचरा अुठानेवालेके शरीर पर न गिरे।

३ टीले-टेकरोंको खोदने और खड्डे भरनेके लिअे कुदाली-फावडेकी भी जरूरत होगी। मल-सफाअीमें भी अुनकी जरूरत पडेगी।

४ मल-सफाअीका काम अधिक मात्रामें हो, तो मल भरकर घूरे पर ले जानेके लिअे बालटी अुपयोगी होगी।

५ आम तौर पर अितने साधन काफी हैं। सफाअीका बडा सत्र चलाया जाय और अुसमें बडी संख्यामें लोग शरीक हों, तो साधनोंमें कचरेके ढेर अुठानेके लिअे गाडी रखना भी बहुत अुपयोगी होगा।

सफाअी करनेवालोंको सूचनाअें

सफाअीका काम करनेवाले सेवकोंको नीचे लिखी सूचनाअें ध्यानमें रखनी चाहियें

१ अपने अूपर कचरा न अुडने देना चाहिये। अिसके लिअे हवाके सामने न बुहारकर अुसकी अनुकूल दिशामें बुहारना चाहिये।

२ सफाअी करनेवाले बडी तादादमें हों, तो टोली बनाकर न बुहारा जाय, बल्कि अैसी व्यवस्था की जाय कि अमुक फासले पर हरअेक अपने हिस्सेकी पट्टी बुहारे। अिसी तरह अलग-अलग कामोंका पहलेसे विचार करके अुनके लिअे टोलियाँ बना दी जायें।

३ सफाअी करनेवाले अपने कपडे लटकते हुअे न रखें।

४ अुन्हें झाड़ूको शरीरसे न छूने देना चाहिये और बुहारनेके सिरेकी तरफसे अुसे न पकडना चाहिये।

५ सफाअीका काम पूरा होते ही हाथ, पैर और मुह अच्छी तरह धो डालने चाहिये, अिसमें कभी भूल न करनी चाहिये। बड़े पैमाने पर काम किया हो, तब तो नहाना ही चाहिये।

पूरे कामका अर्थ

काम अधूरा छोडकर न जानेकी और अिसलिअे कितना काम कितने समयमें करना है, अिसका हिसाब पहलेसे लगा लेनेकी सूचना पहले दी जा चुकी है। मगर पूरे कामकी ठीक कल्पना होना जरूरी है।

काम छोडकर जानेसे पहले कचरेके ढेरोको ठिकाने लगाना ही चाहिये। पहले अुसको तीन हिस्सोंमें बाँट दिया जाय — १ खादके लायक कचरा, २ जलाने लायक कचरा, ३ खड्डेमें भरने लायक कचरा।

जानेसे पहले साधन साफ कर लेने चाहियें और किसीसे माँगकर लाये हुअे साधन यथास्थान पहुँचा देने चाहिये।

सफाअीके कामको पूर्णता देनी हो, तो बादमें पानीका छिडकाव जरूर किया जाय।

अुत्साह हो, समय हो और वैसा प्रसग हो, तो अितना करनेके बाद रागोली और हरे तोरणोसे अुस भागको सजाया जाय। और सफाअीके कार्यक्रम पर चार चाँद लगाने हो, तो अन्तमें अिस स्वच्छ और सुशोभित की हुअी जगह पर जमा होकर राष्ट्रीय झडेकी वदना की जा सकती है और भजन-मडली बनाकर थोडी देर गाना-बजाना भी किया जा सकता है।

कुअें और नालियोंकी सफाअी

ग्राम-सफाअीमें कुअें, अुनकी नालियों और घरोंमें से बहनेवाले नहाने-धोने वगैराके पानीका अेक बडा सवाल है। गाँवके लोगोंका

पूरा साथ मिले विना और अनेक तरहके साधन जमा किये वगैर अिसे हल करना सभव नही।

ग्रामसेवक अकेला हो, तो वह अेक फावडे और झाड़की मददसे अितना तो कर ही सकता है —

१ कुअेंके आसपास दतौनकी फाडें और दूसरा अिसी किस्मका कचरा जम गया हो तो अुसे निकाल देना।

२ नाली भर गअी हो तो अुसे खोल देना।

३ नालीको खोदकर दूर तक ले जाना, ताकि पानी सूख जाय। पानी ज्यादा मात्रामें गिरता हो, तो दो-तीन नालियाँ वनाना और थोडे थोडे दिन वाद नालियाँ वदलते रहना।

४ पानी गिरनेसे कीचड होता हो, तो वाजूमें नअी नाली खोद कर अुसमें पानी मोडना। अिससे जमा हुआ कीचड सूख जायगा।

सहयोग और साधन जैसे जैसे वढते जायँ, वैसे वैसे अधिक स्थायी ढगकी व्यवस्था करनी चाहिये। जैसे —

१ जमा हुआ कीचड साफ कर देना और खड्डेमें नअी मिट्टी और रेत भरना।

२ थोडी दूर तककी नाली पक्की कराना। और जो टूट गअी हो, अुसे दुरुस्त कराना।

३ पानी सूख जानेके लिअे क्यारे वनाना, अुनमें केले और अरवी वगैरा पानी चूसनेवाली वनस्पति लगाना और अुसके चारो तरफ अच्छी वाड वनाना।

४ छोटे कुटुम्वोसे पानी डालनेके लिअे डिव्वे रखने या पक्की कुडियाँ वनवानेको कहना। अुनका पानी रोज अेक-दो वार खाली हो जाना चाहिये।

५ परिवारोसे प्रार्थना करना कि पानीके लिअे वनाअी हुअी कुडियोमें नहाने-धोनेका और घडोंचीका साफ पानी ही जाने दें। अुनमें

पेशाव या जूठनका पानी हरगिज न जाने दें। साफ पानी भी बहुत दिन अेक ही जगह जज्व होने दिया जाय, तो अन्तमें वदवूदार कीचड पैदा हो जाता है। परन्तु यदि अुसमें पेशाव और जूठन भी मिल जाय, तव तो सडांध वहुत ही जल्दी और ज्यादा हो जाती है और अुसमे से गन्दी और जहरीली वदवू फैलती है।

पाखाने

ग्राम-सफाअीका काम करनेवाले सेवकको पाखानोका विचार भी करना ही होगा।

देहातके लोगोको आम तौर पर गांवके बाहर कही खुलेमें शौच जाना पसन्द होता है। अुन्हे पाखानेमें अेक ही जगह वैठना गन्दा लगता है। कभी सूरत जैसे शहरोमें चले जायँ और वहाँ मजबूरन पाखानोमें जाना पडे, तो अुन्हे अैसा लगता है मानो किसी भयकर नरकमे पहुँच गये हो। मैंने कितने ही अैसे ग्रामवासी देखे है, जो अिस अेक ही दुःखके कारण काम विगडता हो तो भी शहरमे जानेसे वचते है। मगर हमारे ग्रामवासियोको गन्दे पाखानोंमें ही घृणा नही है, वल्कि मल साफ करनेमे भी वडी घृणा है। साफ करना तो दूर रहा, अुसकी तरफ देखना या अुसके वारेमें कोअी वात या विचार करना भी अुन्हे वहुत हलका और गन्दा लगता है। वह काम भगीका ही माना जाता है।

मैलेकी गदगीसे वचनेके लिअे शहरियोने भगीकी जाति खडी कर दी है, जिसके फलस्वरूप अुनके घरोंके भीतर ही नरक जैसे पाखाने पैदा हो गये है।

गांवके लोग गांवकी सीमा और रास्तोको विगाडते है। किसी भी गांवकी सीमाअें वरसोकी वदहजमीके वीमार मनुष्यके पेटकी तरह वदवू फैलाती है।

अिससे बचनेका अेक ही मार्ग है। लोगोको साफ-सुथरा पाखाना कैसा होता है, अिसका प्रत्यक्ष दर्शन कराया जाय और अुनमें पाखाना-सफाअीका शौक पैदा किया जाय।

अिसके लिअे ग्रामसेवकको सबसे पहले अपने लिअे पाखाना तैयार करके शुरुआत करनी चाहिये। अुसका वह आग्रहपूर्वक अिस्ते-माल करे, रोज खुद अुसे साफ करे, मैलेको खड्डेमें डालकर अुसका खाद बनाये और पाखानेमें काम आनेवाली बालटियाँ और कोठरी रोज धोकर साफ रखे। अिस प्रकार लोगोको यह देखनेको मिलेगा कि अच्छा साफ पाखाना कैसा होता है। अैसे पाखानेमें शौच जाने और अुसे साफ करनेमें घृणा आनेकी कोअी बात नही। शहरोमें देखे हुअे गदे नरक जैसे स्थानोसे यह बिलकुल दूसरी ही चीज है, अैसा प्रत्यक्ष देख-देखकर अुनको विश्वास होता जायगा और अुनकी घृणा मिटती जायगी।

देहातकी आबादी ज्यादातर किसानोकी होती है और किसान कितने ही पिछडे हुअे हो, अुनमें खादकी कीमत न समझनेवाला शायद ही कोअी मिलेगा। फिर भी हिन्दुस्तानके किसानको मैलेसे अितनी ज्यादा नफरत हो गअी है कि अपने खेतमें मैला गाडने देनेको भी वह राजी नही होता। मै कितने ही ग्रामसेवकोको जानता हूँ, जिनके लिअे यही बडा सवाल हो गया था कि वे अपना पाखाना कहाँ बनायें। अकसर सेवकोको रहनेके लिअे कोअी गाँवके बीचमें छोटी-सी कोठरी दे देता है। वहाँ पाखाना बनानेकी जगह कहाँ? सीमाओकी खुली जगहमें बनाये, तो गाँवके ढोर अुसे तोड डाले। किसीके खेतमें बनानेके लिअे पूछने जायें, तो वह घृणासे अिनकार कर दे। फिर भी आग्रही सेवकको किसी-न-किसी अुपायसे पाखाना शुरू करके गाँवके लोगोको पदार्थपाठ देना ही चाहिये।

पाखाना-सफाअीके बारेमें सूचनाअें

पाखानेका अर्थ है दो बालटियां। अेक बालटीमें मैला पडे और दूसरीमें पेशाब, अिस ढंगसे दोनों बालटियां मिलाकर रखी जायें। अिन बालटियोंको जिस कोठरीमें रखा जाय, वह हवा और रोशनीवाली और आसानीसे धोअी जा सकनेवाली होनी चाहिये। पक्की कोठरीके बजाय लीपकर साफ रखी जा सकनेवाली छोटी झोपडी बनाअी जाय तो भी काम चल सकता है। वह कोठरी या झोपडी बहुत तंग न हो। अुसमें या अुसके पास मिट्टीका संग्रह और सफाअीके औजार रखनेकी भी सुविधा रखी जाय।

मैले पर हरअेक आदमी मिट्टी डालता जाय। अिसके लिअे राख या अच्छी तरह चूरा की हुअी मिट्टी अिकट्ठी करके रखी जाय। ढेले होंगे तो मैला नहीं ढँकेगा और बालटी जल्दी भर जायगी। यह समझकर कि अन्तमें यह सब खादके रूपमें खेतमें जानेवाला है, मैला ढँकनेकी चीज खादके लायक ही चुननी चाहिये। अिसलिअे अिस काममें रेत हरगिज न ली जाय और न पक्की सडक परसे खुरचकर लाअी हुअी धूल। चूनेकी मिलावटवाली या खारवाली मिट्टी या अैसी तरहकी खेतीको नुकसान करनेवाली कोअी खराब किस्मकी मिट्टी न ली जाय। पासमें नदी हो तो अुसके किनारोंमें जमी हुअी कछारकी मिट्टी लाकर रखना ठीक होगा, क्योंकि खादके रूपमें वह बडी कीमती होती है।

मैलेकी बाल्टीमें घास, बडे पत्ते या कागज रख दिये जायं, तो बालटी बिगडेगी नहीं और सफाअी करनेमें बडी सहूलियत रहेगी।

पेशाबकी बालटी पर छेदोंवाला ढक्कन रखना चाहिये, ताकि छींटे न अुडें और बदबूदार हवा नाकमें न जाय। किसी टीनमें साधारण कीलसे कभी छेद नहीं करने चाहियें। अैसे छेद खुरदरे, पैने और नुकीले होते हैं, जिन्हें साफ करना असम्भव हो जाता है, और वे

साफ करनेकी कूचीको काटते रहते हैं। छेद छेनी या बरमेसे ही करने चाहियें।

मैले और पेशाबकी बालटियाँ खादके खड्डेमें अुंडेल दी जायँ। अुंडेलनेका यह अर्थ नही कि सपाट जमीन पर मल-मूत्र फैलाकर चल दें। अिससे तो दुर्गंध फैलेगी और मक्खियोको निमत्रण मिलेगा। अिसके लिअे क्यारे जैसा खड्डा बनाया जाय और मैला डालनेके बाद क्यारा भर दिया जाय। कभी-कभी मिट्टीकी थर भी डाली जाय। घास, कचरा और ढोरोंका गोबर वगैरा मल-मूत्रके साथ मिला देनेसे अुसमें अेकदम गरमी पैदा हो जायगी और खाद बहुत जल्दी बन जायगा। वह खादके रूपमें तो अत्यन्त कीमती होगा ही, साथ ही अुसमें गरमी पैदा होनेसे मक्खी वगैरा जन्तुओके अडोको भी पोषण नही मिलेगा। मैलेको घासफूसके बिना अकेला गाडनेसे अुस पर मिट्टी डालने पर भी मक्खियाँ रास्ता निकालकर अन्दर गहराअीमें अडे रख आती हैं और अकसर अैसे खड्डोमें से पखोवाली दीमक जैसी मक्खियोका झुड निकलता देखा जाता है।

पेशाबकी बालटीमें कुछ दिनो बाद पेशाबके खार पेंदेमें लोहेके साथ जमे हुअे पाये जाते हैं। अिससे बालटीमें जल्दी छेद हो जाते हैं। अुसे रोकनेके लिअे बालटी रखते वक्त अुसमें थोडी मिट्टी डाल दी जाय, तो खार मिट्टीमें मिल जायेंगे और बालटीका पेंदा जग लगनेसे बच जायगा।

अिन मल-मूत्रकी बालटियोको धोते समय कोअी अच्छा काम देने लायक कूचा अिस्तेमाल करना चाहिये। सीधा खडा झाड़ अकसर अिस काममें लिया जाता है। अिससे बालटीकी दीवारे तो अच्छी तरह रगडी जा सकती है, मगर पेंदा नही रगडा जा सकता। लगभग दो अिचके रेशेवाला और अेकाध हाथ लम्बे दस्तेवाला कूचा अिस कामके लिअे बडा अुपयोगी साबित होता है।

किसान-टट्टी

खेतमें अेक फुट चौडी लम्बी खाअी खोदकर अुस पर टट्टीका चौखटा रख दिया जाय और जैसे-जैसे खड्डा भरता जाय, वैसे-वैसे चौखटा आगे सरकाते जायँ। अिस व्यवस्थाको किसान-टट्टी कहा जाता है। किसानके पास खेत तो होता ही है। अिस व्यवस्थासे अुसे हाथमें वालटी वगैरा पकडकर मैला नही अुठाना पडता। हाथसे सफाअी नही करनी पडती और खेतको खाद मिल जाता है। खाद वननेके वाद भी अुसे खड्डेमें से निकालकर और कही ले नही जाना पडता। अिस तरह किसानके मनमे किसी तरहकी घृणा पैदा होनेका अवसर आये विना सफाअी और खाद दोनो मतलव सिद्ध हो जाते है। अिसी खयालसे अैसे खड्डेवाली टट्टीका नाम किसान-टट्टी पडा है।

मगर घृणा तो जहाँ जायें, वही रास्तेमे आती है। टट्टीका चौखटा लगा देनेके वाद अुस पर वैठनेमें तो घृणा होगी ही। वैठ गये तो मिट्टी डालनेमें घृणा, और टट्टीकी वैठक धोनेमें भी घृणा! अिन किसान-टट्टियोमें अकसर मैलेका ढेर खड्डेके वाहर चढ जाता है और अुसमें कीडे विलविलाने लगते हैं, फिर भी घृणाके कारण न कोअी मिट्टी डालता है और न कोअी पाखानेका चौखटा हटाता है। अिसलिअे असली सवाल लोगोंके मनसे घृणाको मिटानेका ही है।

खड्डेवाली टट्टियोमें अकसर पेशाव और पानीकी मात्रा वहुत वढ जाती है और काफी मिट्टी नही डाली जाती। अिसलिअे जहाँ अैसी टट्टियाँ होती है, वहाँ मक्खियोकी अुत्पत्ति खूव वढ जाती है। काफी मात्रामे मिट्टी डालनेकी सावधानी रखी जाय और घास-कचरा भी डाल दिया जाय, तो मक्खियोका कष्ट मिट सकता है। मगर अैसा करनेसे खड्डा जल्दी भर जाता है और खोदनेकी मेहनत वढ जाती है।

अितने पर भी किसान-टट्टी रखनी ही हो, तो नीचेका खड्डा गहरा न बनाकर बहुत ही छिछला, अेकाध बालिश्त ही गहरा बनाया जाय। रोज पाखानेका चौखटा सरकाकर मिट्टी डाल दी जाय। मिट्टीकी अूपरवाली परत जीवाणुओंसे भरपूर होनेके कारण मैलेका खाद जल्दी बन जायगा और अनाज वगैराके पौधोंकी छोटी जड़ें अुसका लाभ काफी मात्रामें अुठा सकेंगी।

ग्राम म्युनिसिपैलिटी

ग्रामसेवक सफाअीका जो काम करता है, वह किसी न किसी अुद्देश्यसे करता है।

आगे चलकर गाँवके लोग जाग्रत हो, अपनी ग्रामपचायत या ग्राम-म्युनिसिपैलिटी कायम करे और अपने गाँवको साफ रखनेकी सुन्दर व्यवस्था करे, यह अुसका आखिरी मकसद है।

मगर यह न मानना चाहिये कि थोड़े दिन काम करनेसे ही यह परिणाम निकल आयेगा। अलबत्ता, विदेशी राज्यके समय अैसा सगठन जितना असभव था, अुतना अब स्वराज्यमें नही रहा। अैसे तत्रोंमें बाकायदा चुनाव द्वारा कार्यकर्ता चुने जाने चाहियें और कुछ न कुछ कर वसूल करनेकी सत्ता भी अुन्हे मिलनी चाहिये। लेकिन राज्यके कानूनकी मददके बिना यह सभव नही। राज्य जो कर लेता है, अुसमें से भी अुसे कुछ हिस्सा गाँवको अिस कामके लिअे वापस देना चाहिये। अैसे कानूनकी और करके अपने हिस्सेकी सहायता अब गावको मिलने लगी है और भविष्यमें अुसकी मात्रा बढेगी।

मगर जब अैसा तत्र कायम होगा, तब भी सिर्फ तत्रके हो जानेसे और रुपयेका थोडा प्रबन्ध हो जानेसे ही सफाअी रखना सभव नही होगा। छोटे गांवोंके पास कितना ही रुपया क्यो न अिकट्ठा हो जाय, शहरोंकी म्युनिसिपैलिटियोंकी तरह वे न तो गटरें बनवा सकेंगे और न पानीके नल लगवा सकेंगे। वे भंगियोंकी सेना भी नही बसा

सकेंगे। अिस जमानेमें नये भंगी अुत्पन्न नहीं किये जा सकेंगे, और करने भी नहीं चाहिये। देहाती जीवनके साथ अिन सब बातोंका मेल नहीं बैठ सकता। देहाती लोग खुद मेहनत करके और अेक-दूसरेके सहयोगसे बहुतसे ग्रामोपयोगी काम करते आये हैं। आज यह परम्परा टूट गअी है। अिसे फिरसे जीवित करनेकी कोशिश ग्राम-सेवकको करनी चाहिये।

अिसलिअे ग्रामसेवक थोड़े दिनकी मेहनतके बाद तुरन्त अधीर होकर सफाअीके लिअे भंगियोंकी सेना रखवानेकी कोशिश शुरू करे, तो वह गलत होगा। अुसे तो अपने सामने यही अुद्देश्य रखना चाहिये कि लोगोंमें गन्दगी साफ करनेकी घृणा कैसे मिटे, सच्ची सफाअीका शौक कैसे पैदा हो और वे सफाअी करने और अुसे कायम रखनेके लिअे अमली काम कैसे करने लगें। सेवक काफी समय तक नियमित रूपसे और शुद्ध शास्त्रीय ढंगसे ग्राम-सफाअीका काम करता रहेगा, तो देहातके लोगोंमें जरूर सफाअीका वातावरण पैदा हो जायगा और सारा गांव नहीं तो गांवके कुछ व्यक्ति तो जरूर अुसे सहयोग देने-वाले निकल आयेंगे। यह भी हो सकता है कि गैरसरकारी ढंग पर कोअी-कोअी मुहल्ले अपनी समितियां बनाकर स्वप्रयाससे और आपसी सहयोगसे सफाअी रखनेकी जरूरी व्यवस्था कर लें। अिस तरह वातावरण तैयार हो जानेके बाद अगर सरकारी कानूनके अनुसार बनी हुअी ग्राम-म्युनिसिपैलिटी बनेगी, तो वह स्वाभाविक और प्राणवान साबित होगी। सरकारी रास्तेसे बननेवाले लोकतन्त्र भी तभी जीवित संस्थायें बनते हैं, जब अुनमें सेवाभावी सदस्य होते हैं।

सफाअी-सेवकोंके जानने लायक विज्ञान

अब तक आंखोंसे दीखने और नाकको बदबू देनेवाली गन्दगीको साफ करनेकी बात हुअी। मगर आंखोंसे न दीखनेवाले अत्यन्त सूक्ष्म मैल और जहरके बारेमें भी सफाअी-सेवकको जानना चाहिये।

दुनियामें खुली आँखोसे दीखनेवाली सृष्टिसे अनन्त गुनी सृष्टि अैसी है, जो खुली आँखोसे नही दीखती। सूक्ष्मदर्शक यन्त्रके आविष्कारके बाद मालूम हुआ है कि अनन्त सूक्ष्म जीवाणु वायुमण्डलमें अुडते ही रहते हैं। छोटेसे अनुस्वारके बराबर जगहमें वैसे हजारो जीवाणु अच्छी तरह समा सके, अितने सूक्ष्म वे होते हैं। सूक्ष्म होने पर भी अुनकी बढनेकी शक्ति अद्‌भुत है। वे मुँह, पेट, पैर वगैरा अवयवोंवाले जीव नही होते, मगर अेक कोषके बने हुअे और अवयव-रहित कोषके रूपमें होते हैं।

अुन्हे बढनेके लिअे अनुकूल वातावरण और खुराककी जरूरत होती है। अिनके मिलने पर वे बढने लगते है। अपनी आयु-मर्यादाके अनुसार बढकर हरअेक जीवाणु फूटकर दो हो जाता है। ये दो फिर निश्चित अवधिमें चार हो जाते हैं। अिस तरह थोडे दिनोमें अुनकी तादाद अितनी बढ जाती है कि गिनी नही जा सकती। अुनका शिकार कितना ही बडा क्यो न हो, वे अुसे जमीदोज कर देते हैं। और अिन असख्य जीवाणुओकी हगार और शव भी जहरीली गन्दगी पैदा करते हैं।

ये जीवाणु गोबर और मैले वगैरा पर जो काम करते है, अुससे अुसका खाद बन जाता है। वे दूधका दही बनाते है। वे ही शरीरमें होनेवाले घावमें घुसकर अुसका बडा चकत्ता बना देते है। वे ही पानीसे भरी हुअी मिट्टीका बदबूदार कीचड बना डालते है। ये जीवाणु ही मच्छरोंके जरिये अिन्सानके शरीरमें घुसकर और वृद्धि पाकर अुसके खूनके लाल कणोका सहार करके अुसे मलेरिया बुखार चढाते है, पानी और खानेके साथ पेटमें जाकर अुसे पेचिश, हैजा वगैरा रोगोका शिकार बनाते हैं, पिस्सूके द्वारा घुसकर प्लेगका शिकार बनाते है और सांसके जरिये फेफडोमें जाकर क्षयरोग फैलाते हैं।

अिन जीवाणुओमें कुछ जहरीले और नुकसान करनेवाले होते है, तो कुछ हमारे जीवनके लिअे अुपकारक भी होते हैं। अुन्हे

जान ले और अुनके स्वभावको पहचान ले, तो ही हम सच्ची और सूक्ष्म स्वच्छता पैदा कर सकते हैं। ये जीवाणु सख्यामें असख्य और अनन्त प्रकारके हैं; फिर भी हम कैसे जी सकते हैं? अिसीलिये कि शुद्ध खुली हवा अुनके लिअे अनुकूल नही होती, धूप और रोशनी अुन्हे पसन्द नही आती, और तन्दुरुस्त प्राणियोंके खूनमें भी अिन जीवाणुओका नाश करनेकी पूरी ताकत होती है। गरमीके ताप और बरसातकी मारसे भी ये जीवाणु जल या बह जाया करते है।

मगर जब हम कुदरतके असली नियम समझे बिना काम करने लगते हैं, तब अिन जीवाणुओकी परवरिशके लिअे अनुकूल परिस्थिति पैदा होती है। हमारे अन्धेरे और बिना हवाके घरोंमें अुनकी खूब बन आती है। थूक, कफ, मल, गोबर, सडी हुअी सागभाजी, फल और दूसरा कचरा भी अुन्हे खूब भाता है। वे प्राणी है अिसलिअे जीनेके लिअे अुन्हे हवा तो चाहिये, मगर बहुत कम। अुन्हे पानी चाहिये मगर वह भी अुतना ही जितनी कि जमीनमें भाप होती है। खादके खड्डेमें खाद जल्दी पकाना हो, तो हमें यह सारी परिस्थिति पैदा करनी चाहिये। घासफूससे पोलापन पैदा किया होगा तो थोडी हवा अन्दर जायगी, समय-समय पर पानी छिडका गया होगा तो जरूरी नमी मिलेगी, खड्डे पर छाया की गअी होगी तो धूपके बजाय थोड़ासा जरूरी हलका प्रकाश अुन्हे मिल जायगा।

नाली और कीचड़में जीवाणु न बढने देने हो, तो हमें पानीके सूख जानेका कुछ न कुछ अुपाय करना चाहिये।

यदि हम चाहते हो कि शरीरके घावका चकत्ता न बन जाय, तो अुसे अुबले हुअे पानीसे जंतुरहित करके साफ पट्टी बांधनी चाहिये। दूधको न बिगडने देना हो, तो अुसे अुबालकर जीवाणुरहित करना और बादमें बिलकुल बिना हवाके बरतनमें बद कर देना चाहिये।

कुछ जन्तुओंका ज्ञान

मनुष्यके अस्वाभाविक ढगसे रहनेके कारण सूक्ष्म जीवाणुओके सिवाय कुछ दिखाओ देनेवाले जन्तु भी अिन्सानके घरो और गाँवोमें पैदा होते हैं और जीवनको कष्टमय वना देते हैं। अिन जीवोमें मुख्य हैं मक्खी, मच्छर, जूं, खटमल और पिस्सू। अुनके जीवनके वारेमें जानकारी न हो, तो सेवक कितनी ही सफाओ करे, फिर भी वह अिस सकटको दूर नही कर सकेगा। अिसलिअे अिन मुख्य-मुख्य जन्तुओंके जीवन, वे कहाँ अडे रखते है, क्या खाकर जीते हैं, कैसे वातावरणमें वढते है, वगैरा बातोकी जानकारी अुसे कर लेनी चाहिये।

सार यह कि सफाओके काममें सिर्फ किसी तरह झाडू फेर देना ही नही आता। अुसका शास्त्र समझकर अुसे करना चाहिये।

अन्तमें मै जोर देकर बताना चाहता हूँ कि सेवकका अुद्देश्य गाँवको साफ करना ही नही है, अपढसे अपढ ग्रामवासीको सफाओका शास्त्र समझनेवाला वना देना भी अुसका अुद्देश्य होना चाहिये।

५

आरोग्य केन्द्र

डॉक्टर न बन बैठो

ग्रामसेवकके पास अुसकी तैयारी हो या न हो, अेक काम स्वाभाविक तौर पर आ जायगा। गाँवमें बीमार लोग अुसके पास जायेंगे और अुससे यह आशा रखेंगे कि वह वैद्य या डॉक्टरकी तरह अुन्हें दवा देगा। देहातमे सरकारी या खानगी दवाखाने शायद ही होते है, अिसलिअे लोगोंके तमाम दुःखोंमे सहानुभूति दिखानेवाला कोअी आदमी आ जाय, तो बीमार अुससे यह आशा रखते ही हैं। यह काम किस ढंगसे करना चाहिये, यह सेवकको विवेकसे सोच लेना होगा।

वह शरीर और अुसकी बीमारियोंके बारेमे अच्छा अनुभव और ज्ञान रखनेवाला हो और मुख्य कार्यक्रमके रूपमे दवाखाना चलानेका ही अुसने निश्चय कर लिया हो तो दूसरी बात है, नही तो अुसे अिस कामकी अपनी मर्यादा बाँध लेनी पडेगी।

वह थोडी बहुत सादी दवाअियाँ भले ही रखे, मगर दवावालोंकी दुकानोंसे खरीदकर लाअी हुअी पेटेंट दवायें अिकट्ठी करके बाकायदा दवाखाना चलानेकी झंझटमें न पडे। आम तौर पर लोग नीचे लिखे रोगोंसे पीडित होते है। अिन अुनके लिअे कुछ दवायें अुसके पास हो तो काफी है —

१ दस्त, कब्ज, सिरदर्द वगैरा — आम तौर पर ये सब रोग अपचके कारण होते है। अेक-दो समयका खाना छोड देना अिनका सबसे अच्छा अिलाज है। दवाओंमे अंडीका तेल रखा जा सकता है। यह तेल भी शीशियोंमें बन्द किया हुआ महँगा न लाया जाय, बल्कि

सादे अंडीके तेलको पानीमें अुबालकर और मैल साफ करके खुद ही अुसे शुद्ध कर लेना चाहिये।

२ मलेरिया या जूडी बुखार — जिनका पेट साफ न रहता हो और दूसरी तरह शरीर नीरोगी न हो, वे अिस बुखारसे टक्कर नही ले सकते। अुनके लिअे भी जुलाब और अुपवासका अिलाज अच्छा है। अिसके सिवाय नीम, चिरायता, गिलोय वगैरा कडवी वनस्पतियोका रस या काढा दिया जाय।

३ खाँसी — अिसमें भी पेट साफ है या नही, अिसकी जाँच करनी चाहिये, और न हो तो अुपवास या जुलाबका अिलाज किया जाय। अिसके सिवाय नमकके गरम पानीके कुल्ले कराये जायें और हल्दी मिलाकर गरम दूध पिलाया जाय या शहद चटाया जाय।

४ खुजली वगैरा चमडीके रोग — अिनमें भी अुपवास और जुलाबसे पेट साफ करनेसे लाभ ही होगा। गरम पानीसे दिनमें दो-तीन बार नहाया जाय और तेल लगाया जाय। बहुत खुजली हो तो गधकका मरहम लगाया जाय।

५ चकत्ते होना — गरम अुबले हुअे पानीसे घावको धोकर पीव साफ किया जाय और बोरिक पाउडर या विलायती नमकका मरहम लगाया जाय। चकत्ते मिटने तक यह क्रिया रोज सावधानीसे की जाय।

६ आँखें दुखना — अिसका कारण भी पेटकी गदगी ही हो सकती है। अिसलिअे अुपवास और जुलाबका अिलाज फायदा करेगा। अिसके सिवाय साफ अुबाले हुअे पानीसे बार-बार आँखें धोअी जायें।

७ कान पकना — तेलको कडकडाकर कानमें अुसकी बूंदें डाली जायें और रुअीके फाहेसे कान साफ किये जायें।

सच्चा काम शुश्रूषाका है

जिस तरह साधारण बुद्धि सुझाये अैसी सादी दवाअियोंसे अिलाज किया जाय। मगर ग्रामसेवकको डॉक्टर बनकर नहीं बैठना चाहिये। अिलाज करते समय अुसे बीमारोंकी शुश्रूषा या सेवाकी तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिये।

१ दस्त और पेचिश जैसे रोगोंमें बीमार कमजोर हो गया हो, और बार-बार अुठने-बैठनेका परिश्रम न कर सके, तो अैसे मौके पर बीमारको तकलीफ न हो अिस तरह टट्टी-पेशाब कराअी जाय और अुसे गाड़ा जाय तथा अेनीमा वगैरा दिया जाय।

२ बुखारोंमें सिर और पेट पर मिट्टीकी पट्टी रखी जाय और पैरोंके तलवोंमें अंडीका तेल मला जाय।

३ जाड़ेके बुखारवालेको नाक द्वारा भाप दी जाय।

४ बहुत जोरका बुखार हो या लू लग गअी हो, तो बीमारको गीली चादरमें लपेटनेका प्रयोग किया जाय।

५ कटि-स्नान कराना भी सेवकको सीख लेना चाहिये। बहुतसी बीमारियोंमें वह रोगीको खूब आराम देता है। रोगीकी बीमार आँतोंको वह अधिक खून पहुंचाकर क्रियाशील बनाता है।

६ मालिश करना और तौलियास्नान कराना भी सीखने लायक है। लम्बी बीमारीवालोंको यह बहुत आराम और स्फूर्ति देता है।

७ छातीके दर्दवालेको सेंक करनेकी जरूरत होती है। सूखी या भापकी सेंक करना सरलतासे सीखा जा सकता है।

८ आम तौर पर कमजोर रोगीको आराम और आनन्द मिले अैसी सेवा करनी चाहिये। अर्थात् समय-समय पर अुसका बिस्तर साफ कर देना, अुसके कपड़े और चादरें धो देना, हिलने-डुलनेमें हलके हाथसे प्रेमपूर्वक अुसे मदद करना। ये सब काम अनुभवसे न सीखे हों, तो हृदयमें प्रेम होने पर भी सफाअीसे और हलके हाथसे नहीं होंगे और रोगीको नाहक कष्ट होगा।

अैसी शका नही करनी चाहिये कि यह सब करनेमें समय लगेगा और गाँवके वहुतसे रोगियोको निपटाया भी नही जा सकेगा। वहुतसे बीमारोको निपटानेका लोभ वैद्य-डॉक्टरोके लिअे भी अच्छा नही है, ग्रामसेवकके लिअे तो विलकुल नही। अपने आसपासके और जिनके साथ कामके कारण सम्बन्ध हो गया है, अुन घरोमें सहज ही मिलनेवाले अैसी सेवाके मौकेका लाभ अुठाकर अुसे सतोप मानना चाहिये।

आम तौर पर जव घरमे कोअी वीमार पड़ता है, तव लोग अुसकी सेवा करनेके बजाय डॉक्टरो और दवाओंकी खोजमें दौड़-धूप करने लगते है। अैसा करनेसे रोगी और घरके लोगोमें डर और निराशाका वातावरण फैलता है। प्रेमयुक्त सेवासे अुनमें हिम्मत और आशाका सचार होगा। ग्रामसेवकको अिसी दिशामें काम करना चाहिये। देहातियोको अिसका ज्ञान और अनुभव कम होता है कि किन रोगोमें किस ढगकी सेवा की जाय। प्रत्यक्ष सेवा द्वारा अुन्हें यह सिखाना ही सेवकका सच्चा कर्तव्य है। अिसी तरह बीमारोमें यह वृत्ति पैदा करना भी सेवकका फर्ज है कि वहुतसे रोग आहार-विहारकी हमारी भूलोंसे ही होते है और अुपवास वगैराके अिलाजसे अुन्हे दूर करना हमारे हाथमे है।

गाँवका स्वास्थ्य सुधारो

ग्रामसेवकके पास वीमारोकी सेवाका काम आयेगा और अुसे वह यथाशक्ति प्रेमसे करेगा। मगर सेवकको असलमें तो यह देखना है कि अुसके गाँवका स्वास्थ्य वहुत अच्छा रहे और गाँवमे रोगोके लिअे कोअी स्थान ही न रहे।

अिसके लिअे अुसे वहुतसी वातोका विचार करना पडेगा। मुख्य वाते ये होगी —

१ लोगोका आहार स्वास्थ्य-प्रद है या स्वास्थ्यनाशक ?

२ गाँवमें पीने और नहाने-धोनेका पानी कैसा है ?

३ लोगोंके घर स्वास्थ्य-प्रद है या स्वास्थ्यनाशक ?

४ अुनके कपडे पहननेके रिवाज स्वास्थ्यवर्धक है या स्वास्थ्य-नाशक ?

५ अुनके रोजगार-धन्धे स्वास्थ्यकी रक्षा करनेवाले है या अुसका नाश करनेवाले ?

६ गांवके मुहल्ले, रास्ते, मोमाअे वगैरा साफ रहते है या जहरीली वदवू और जन्तुओसे भरे हुअे ?

७ लोगोमे स्वास्थ्यका नाश करनेवाला कोअी व्यसन है ?

८ लोगोका जीवन सयमप्रधान है या नही ?

अिन सव मामलोमे अुसे ज्ञानपूर्वक गहराअीमे जाना होगा। गांवके लोगोमे अज्ञान फैला हुआ हो तो अुसे दूर करना पडेगा। अिसके रास्ते वताने होगे और खुद करके दिखाना और अुसका प्रचार करना होगा।

१. आहारका विचार

आहारके वारेमे ग्रामसेवकको कैसे-कैसे विचार करने चाहिये ?

(क) हिन्दुस्तानकी अत्यन्त गरीवीके कारण देहातमे वहुतसे लोगोको वेकारीके मारे अन्नकी पूरी मात्रा भी नही मिलती। थोडीसी राव पीकर घडी भरके लिअे पेट भरा-सा लगता है, मगर तुरन्त भूख लगती है। अिसका अिलाज सेवक अकेला नही कर सकता। यह अेक महान राष्ट्रीय प्रश्न है। फिर भी गांवके लोगोके सहयोगसे ग्राम-अुद्योग वढें, देहातके सवसे वडे अुद्योग खेतीका विकास हो वेकारी मिटे और काम-धधा करके सवको भरपेट अन्न मिलने लगे, अैसे प्रयत्न करने पडेंगे।

सेवक यह भी देखेगा कि वडे पैमाने पर गरीवोका शोषण होनेके कारण श्रमजीवी वर्ग मेहनत करके भी अुसका पूरा फल अपने हाथमे नही रख सकता। यह भी अेक अैसा राष्ट्रव्यापी सवाल है, जिसे

अकेले हल नही किया जा सकता। फिर भी सेवक चारित्र्यवान और सत्याग्रही होगा, तो वह अैसी हवा पैदा करनेकी कोशिश करेगा, जिससे अच्छी स्थितिके लोगोमें अुदारता और त्यागकी भावना वढे और शोषितोमें अपने हकोका भान और अुन्हे प्राप्त करनेका साहस पैदा हो।

यहाँ अैसी शका अुठना स्वाभाविक है कि स्वास्थ्यकी चर्चामें अिस चीजका विचार किस लिअे? लेकिन दरिद्रता-निवारणके काम तदुरुस्तीके खयालसे भी सेवकको करने चाहिये।

(ख) आजकी हालतमें भी आहारमें सुधार करनेकी दृष्टिसे सेवक वहुत कुछ कर सकता है। दूध-घीका अभाव हो, तो छाछमें भी चिकने और दूसरे वहुतसे कीमती तत्त्व है, यह समझाकर अुसके अुपयोगका आग्रह रखाया जा सकता है। लोगोको हरी साग-भाजी काफी मात्रामें लेनेकी आदत नही होती। अुसके बिना आहार अधूरा है, यह समझाकर नहाने-धोनेके पानीसे साग-भाजी पैदा कर लेने और नीवू, केले, अमरूद और पपीते जैसे फल भी पैदा कर लेनेकी प्रेरणा दी जा सकती है। आटेका चोकर और चावलकी अूपरी परत कीमती खुराक है। अुसे फेंक न देनेके लिअे लोगोको समझाया जा सकता है। जगलके पेडोमें और वाडोमें जगली माने जानेवाले, मगर खुराकके रूपमें कीमती फल-फूल और पत्ते मिल सकते हैं। वेर, अिमली, करौंदे, खिरनी, जामुन, आम, जगली सेव, कैथा और वेलके फल, आँवले, सहजनेकी फलियाँ, खजूर और ताडफल जैसी अनेक चीजें देहातके वच्चे वीन-वीनकर खाते रहते है। अिनमें से कुछ चीजें अव मुफ्तमें मिलना वन्द हो गअी हैं। फिर भी अिसे वच्चोकी शरारत समझकर लोग वन्द न करायें, अैसी हवा ग्रामसेवक फैला सकता है।

(ग) खुराकको गलत तरीकेसे पकाकर भी हमारे लोग अुसे रोग पैदा करनेवाली और नि:सत्त्व वना देते है। खास तौर पर तली हुअी चीजे खानेकी प्रथा वन्द कराने लायक है।

२. पानीका विचार

पानीकी व्यवस्था सुधारने पर भी आरोग्यका बड़ा आधार है।

(क) कभी गाँवोमें अच्छे कुअें नही होते। अिसलिअे लोग झरनो-नालावो वगैराका अैसा पानी पीते है, जिसमे पेडोंके पत्ते गिरकर सड जाते हैं। वह स्वास्थ्यको बिगाडता है। यह कारण समझाकर लोगोको अुबाला हुआ पानी पीना सिखाना चाहिये। पानीको कपड़ेसे छाननेकी और अुसमे ज्यादा गन्दगी हो तो कोयले व रेतकी परतोंमे छाननेकी क्रिया भी सिखानी चाहिये। अैसे गाँवोमें झरनो या तालावोंके पास पक्के कुअें बनानेकी कोशिश की जाय, ताकि जमीनकी सतहमे से छना हुआ साफ पानी कुअेंसे मिल सके।

(ख) कुअेंकी अच्छी सँभाल न रखी जाती हो तो भी पानी बिगडता है। कुआं साफ करनेकी जरूरत हो, तो लोगोंके सहयोगसे करना चाहिये। कुअेंकी दीवारमें पेड-पौंधे अुगते हो, तो अुनको नष्ट किया जाय। अैसी कोशिश करनी चाहिये कि कुअेंमें बाहरकी चीजें अुडकर न गिरे। लोग कुअेंके पास नहाने-धोनेका जो पानी गिराते हैं वह कीचडमे समाकर धीरे-धीरे कुअेमें अुतर जाता है और अन्दरके पानीको जहरीला बनाता है। अिसे भी रोकना चाहिये।

(ग) पानी भरनेवाले लोग गदे घडे या बालटियाँ कुअेमें न डाले, यह देखनेकी कोअी व्यवस्था गाँवके लोगोंसे मिलकर करनी चाहिये।

३. मकानोका विचार

मकान तदुरुस्तीको बिगाडे नही बल्कि अुसे सुधारे, अिसके लिअे सेवक क्या क्या कर सकता है?

(क) जिन घरोमें रोशनी और हवाका आना-जाना काफी न हो, वे स्वास्थ्यको बिगाड़नेवाले ही होते है।

गरीबोकी झोपडियोमें अिस दृष्टिसे जो कमी हो, वह आसानीसे सुधारी जा सकती है। छप्परका कुछ हिस्सा खोला जा सकता है, दीवारोमें छेद करके खिडकियां निकाली जा सकती हैं। बडे घरोमें सुधार करना अितना आसान नही, अुसमें खर्चका भी सवाल होता है।

(ख) घरोमें घडौचीका और दूसरा पानी गिरनेसे नमी रहती हो, तो अुसका अिलाज करना चाहिये। घरकी कुरसी अूंची न होनेसे चौमासेमें घरमें नमी रहा करती है। यह नमी आरोग्यके लिअे हानि-कारक है।

(ग) लिपाअी वगैरा समय-समय पर न होती हो, तो घर घूरे-जैसा लगेगा। अितना ही नही, पिस्सू वगैरा जतु भी पैदा हो जायगे। अिससे घरमें रहनेवालोकी नीद खराव होनेके अलावा अुनके शरीरोमे रोग भी घुस सकते हैं।

४ कपडोका विचार

(क) आम तौर पर गरीबोके पास पूरे कपडे नही होते और वे फटेहाल रहते हैं। कपडे फटे होनेसे तो तन्दुरुस्तीको कोअी नुकसान नही हो सकता, मगर वे मैले हो तो जरूर होता है। क्योंकि मैलमे चमडीके छेद बन्द हो जाते हैं और शरीरका जहरीला पसीना बाहर न निकलनेके कारण भीतर ही जहर बनने लगता है। पहननेके कपडे, खासकर चमडीमे लगे रहनेवाले कपडे रोज धोये जायं, लोगोमे अैसी आदत डालनेका प्रयत्न करना चाहिये कि अैसे कपडोके धुले हुअे न होने पर अुन्हें बेचैनी मालूम हो।

(ख) जाडेके दिनोमें पूरे कपडे न हो, तो बहुत तेज सर्दीका शरीर पर खराब असर पडता है। पहले गरीब लोगोको तापनेके लिअे खूब अीधन मिल जाता था। अब वह बहुत महंगा हो गया है। अुसकी बहुतायत हो तो भी तापना स्वस्थ मनुष्यके लिअे स्वास्थ्यप्रद नही है।

ये सब बातें सेवक लोगोको समझायें। गरीब लोग अिसे समझकर चरखेको अपनावें और रूअी व अून कात लें, तो कपडेकी तंगीके दुःखसे आसानीसे बच सकते हैं।

(ग) सुधरे हुअे लोग बहुतसे कपडे शरीर पर लाद लेते हैं और अुनकी नकल करके देहातोंमें भी अनावश्यक कपडे पहननेका रिवाज घुसता जा रहा है। छोटे बच्चोंको भी कपडोंमें जकडकर रखा जाता है। अिससे हवा और धूप न लगनेके कारण चमडी कमजोर हो जाती है और अपना काम नहीं कर पाती। ग्रामसेवकको लोगोंमें गैरजरूरी कपडे न पहनने और ज्यादा समय खुले बदन रहनेकी आरोग्यप्रद आदतका प्रचार करना चाहिये।

५ धंधेका विचार

लोग अपने निर्वाहके लिअे जो धंधे करते हैं, अुनका भी तंदुरुस्ती पर बहुत ज्यादा असर होता है।

(क) बहुतसे धंधे बैठे-बैठे करनेके होते हैं, अिसलिअे अुन धंधोंके करनेवालोंको घंटों तक बैठे रहना पडता है। अिससे शरीरके हाथ, पैर, छाती वगैरा अवयवोंको पूरी कसरत नहीं मिलती, वे बेडौल और अशक्त बन जाते हैं और शरीरकी पाचनशक्ति भी मंद हो जाती है। दर्जी, मोची, तेली, शिक्षक, कारकुन और दुकानदारके धंधे अैसे ही हैं। पाठशालायें पुरानी दृष्टिकी हों और नयी तालीमके अनुसार न चलती हों, तो बच्चोंका पढनेका धंधा भी अैसा ही बैठकवाला होता है। जिन परिवारोंमें नौकर-चाकर रखनेका रिवाज होगा, या जिन गांवमें पानीके नल आ गये होंगे और पीसने वगैराके कामोंमें यंत्रका अुपयोग किया जाता होगा, वहां स्त्रियोंका धंधा भी बैठकका हो जाता है। शरीरश्रमके अभावका असर अुनकी तन्दुरुस्ती पर पडता है जो प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

(ख) शरीरश्रम आरोग्यके लिअे बहुत कीमती चीज है, यह विचार लोगोमें फैलाना सेवकका अेक बडा कर्तव्य हो जाता है। यह काम आसान नही है। समाजमें अिस विचारने गहरी जड जमा ली है कि शरीरश्रम हलकी चीज है और वह पढे-लिखोका नही परन्तु मजदूरोका काम है। अिसे मिटाकर श्रमकी प्रतिष्ठा बढाना तन और मन दोनोंके स्वास्थ्यके लिअे परम आवश्यक है।

बैठकके धंधेवालोको दो रास्ते बताये जा सकते हैं। अैसा हरअेक आदमी खेती-बाडी जैसा कोअी श्रमप्रधान सहायक धंधा भी करे और पानी भरना, कपडे धोना, लकडियाँ फाडना वगैरा मेहनतके घरेलू काम आग्रहपूर्वक करे। अिसकी सुविधा न हो तो अंतमें घूमना, दौडना, दंड-बैठक, सूर्यनमस्कार वगैरा कसरते नियमित रूपसे करनेके लिअे लोगोको समझाना चाहिये।

(ग) जैसे कम मेहनत स्वास्थ्यको हानि पहुँचाती है, वैसे ही अतिश्रम भी हानि पहुँचाता है। गाँवके गरीब लोगोकी तदुरुस्ती बिगडनेके अनेक कारण हैं। अुनमें अतिश्रम भी अेक बडा कारण है। अिससे अुन्हे बचनेका कोअी सीधा और जल्दीका अुपाय शायद ही मिल सकेगा। समाजमें शोषण मिटे और समानताकी मात्रा बढती जाय, तभी गरीबोको अतिश्रमसे बचाया जा सकेगा।

समाज आजकल शरीरश्रमसे बचने और आरामका जीवन बितानेके लिअे शहरोकी तरफ दौड रहा है। वहाँ तरह-तरहके अनुत्पादक बैठकवाले और छल-कपट पर चलनेवाले धंधे बढ गये हैं। अंतमे अिन सबका भार और दबाव अज्ञान मजदूर वर्ग पर पडता है। अिसलिअे अतिश्रमके रोगसे छुटकारा पानेके लिअे यह जरूरी है कि लोग वापस गाँवकी तरफ मुडें और मजदूरो परसे भारी बोझको अुतारकर सब अपना-अपना बोझ अुठाने लगें। यह काम मुश्किल होने पर भी ग्रामसेवकको अिसीके लिअे जीना चाहिये।

६. स्वच्छताका विचार

गाँव साफ रहता है या गन्दा, अिस पर भी स्वास्थ्यका बडा आधार है। अिस सम्बन्धमें अिस पुस्तिकामें अेक अलग प्रकरण ही दिया गया है।

७ कुटेवों और व्यसनोंका विचार

आरोग्यका नाश करनेवाली आदतें और व्यसन भी देहातियोंकी तदुरुस्ती बिगाडनेमें बडा कारण बन जाते हैं।

(क) तबाकूके व्यसनमें लोगोंको न मालूम क्यों अितना रस पैदा हो गया है। कोअी अिसे चबाता है, कोअी सूंघता है और बहुतेरे धुआं खींचकर फेफडोंको जलाते हैं। अिसमें पढे और बेपढे सभी अेकसे विचारशून्य मालूम होते हैं। पिछड़े हुअे वर्गोंमें और पश्चिमी सभ्यताको अपनानेवालोंमें तो स्त्रियाँ भी बीडी पीती देखी जाती हैं। अिसका फैशन अितना बढ गया है कि तम्बाकूका व्यसन न करना ही बेवकूफी मानी जाती है। मगर बेवकूफ कहलाकर भी ग्रामसेवकको अुनके खिलाफ लडना ही होगा।

(ख) हमारे देहातोंमें आम तौर पर घरके खिडकी-दरवाजे बन्द करके हवाको बिलकुल बन्द कर देने और रातको घरमें घुसे रहनेकी भी आदत पाअी जाती है।

फिर बन्द मकानके भीतर मिट्टीके तेलका धुआं अुडानेवाली चिमनी भी रखी रहती है। अकसर मवेशी भी घरमें ही बँधे होते हैं। अिसके सिवा, अगर कमरेके कोनेमें पेशाब करनेकी नाली रखी गअी हो, तो अुसकी भी दुर्गन्ध अिसके साथ मिल जाती है। अिस तरह हवाको जितनी भी तरह बिगाडा जा सकता है, अुतनी तरह बिगाड कर लोग सारी रात अुनींमें बिताते हैं।

अिनसे तदुरुस्तीको होनेवाली हानि लोगोंको आसानीसे समझायी जा सकती है। मगर पुरानी आदत छुडानेमें सेवकको अपनी सारी

कला काममें लेनी पडेगी। अगर घरके खिडकी-दरवाजे वद करनेका कारण चोर-डाकुओका डर हुआ, तव तो गाँववालोंसे यह सुधार करवाना वहुत ही मुश्किल हो जायगा।

(ग) हमारी सामाजिक आदतोमें अेक और गिनाने-जैसी आदत आग्रहपूर्वक खाने-खिलानेकी है। अिसमे वडप्पन माना जाता है। अिसलिअे अगर आदमी जूठन छोडता है, तो अन्नका वाहरी विगाड होता है और वह अन्न-सकटके अिस जमानेमें पापके समान है। मगर ज्यादातर तो आतरिक विगाड ही होता है। क्योकि लोग खिलानेवालेके आग्रहके कारण ठूंस ठूंसकर खा लेते हैं, जिससे पेटमें गदगी वढकर स्वास्थ्यको हानि पहुँचती है। अिस आदतके खिलाफ भी ग्रामसेवकको अपनी कला आजमानी पडेगी।

(घ) दिन ढलने पर दो घडी आमोद-प्रमोद करनेका रिवाज गुजरातके गाँवोमें वहुत कम पाया जाता है। अिसका कारण यह नही है कि लोग काम-काजमें डूवे रहते हैं, वल्कि अुनके अदर खेलनेकी अिच्छा ही मर गअी मालूम होती है। यह वुढापेकी निशानी है। आजकी सभ्य दुनियामे यह रिवाज चल पडा है कि थोडे लोग खेलते है और ज्यादा लोग आँखोसे देखकर ही मजा लेते हैं। अिसमें सच्चा आनन्द नही मिल सकता, और स्वास्थ्यप्रद आनन्द तो हरगिज नही।

तदुरुस्ती पर खेलकूदका वडा असर होता है। आहार और दूसरे सयोग कितने ही अनुकूल क्यो न हो, जिन लोगोको खेलकूदकी आदत नही होती, अुनके स्वास्थ्यकी रक्षा मुश्किल है। अुनमें खुशमिजाजी तो आ ही नही सकती, जो सच्चे स्वास्थ्यकी निशानी है।

ग्रामसेवकको ग्रामवासियोमें खेलकूदका शौक पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। पहले वच्चोमे शुरू करना चाहिये और धीरे-धीरे प्रौढोका सकोच मिटाकर अुन्हे भी खेलके मैदानमें खीच लाना चाहिये।

८. संयमका विचार

लोगोकी तंदुरुस्तीका विचार करते समय अंतमे संयमका भी विचार करनेकी जरूरत है। और सब बातोंके अनुकूल होते हुअे भी लोग संयमी न हो, तो वे तंदुरुस्तीका सच्चा सुख नही भोग सकेंगे और प्राप्त किये हुअे स्वास्थ्यकी रक्षा नही कर सकेंगे।

देहातके लोग कअी तरहसे गिर गये है, फिर भी अुनमें कुछ गुण अभी तक बाकी रहे हैं। मगर अैसा नही मालूम होता कि अुन्होंने कभी गंभीरतापूर्वक संयमका पालन किया हो या अुसका विचार भी किया हो। सेवक प्रेमसे और पूज्य गांधीजी जैसे जगद्गुरुओके दृष्टान्त देकर अुन्हे ब्रह्मचर्यके नियम सिखावे। किसान जिन नियमोको अपनी खेती-बाड़ीके सम्बन्धमे समझते है, अुन्हे अपनी संतानके बारेमे न समझ सकेंगे, अैसा माननेका कोअी कारण नही। कौन नही जानता कि खेतीमें पौधे बहुत पास-पास बोनेसे या जल्दी-जल्दी फसल अुगानेसे जमीनका कस निकल जाता है और पौधे पनपते नही? अिसी तरह जल्दी-जल्दी संतान होनेसे माताके और साथ ही बच्चोंके स्वास्थ्यको भी नुकसान पहुँचता है और गरीब कुटुम्ब ज्यादा बच्चोका अच्छी तरह पालन-पोषण भी नही कर सकता — यह हकीकत ग्रामवासी अच्छी तरह समझ सकते हैं।

अलबत्ता, सेवकमें यह बात कहने जितना चारित्र्यबल होगा, तो ही वह यह चर्चा अुठा सकेगा और लोगोमे श्रद्धा पैदा कर सकेगा।

हमारे गांवोमे आम तौर पर परस्त्रीको माताके समान माननेवगैराके नीति-नियमोंके बारेमें अब भी काफी आदर है। मगर वहां यह विचार शायद ही कभी किसीने किया होगा कि गृहस्थाश्रमियोको अपनी संतति पर काबू रखना चाहिये। पुराने शास्त्रकारो, साधु-सन्तो या कथा-पुराण कहनेवालोमें से यह विचार किसीने अुनके सामने पहले नही रखा था। अिसीलिअे वे बाल-विवाह जैसे

रिवाज चला बैठे थे। अिसके परिणामस्वरूप छोटी-छोटी लडकियाँ माँ बन बैठती थी। देहातके लोग अिस दृश्यसे शर्मानेके बजाय दादा-दादी बननेका आनन्द मनाते थे। आज कानून बन जानेसे बाल-विवाह तो बन्द हो गये है, मगर यह नही कहा जा सकता कि ग्रामवासियोंके पुराने विचार भी नष्ट हो गये हैं।

वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय और वर-विक्रय जैसी कुरीतियोकी जड ढूंढेंगे, तो वें भी सतानके और दादा-दादी बननेके मोहसे ही निकली हुअी पाअी जायँगी। अिस मोहके कारण अुनकी बुद्धि अितनी जड हो गअी है कि वे यह नही समझ पाते कि अति सतानके कारण ही घरमें और देशमें दरिद्रता छा गअी है और बच्चे रोगी, कमजोर और थोडी अुम्रवाले होते है। अिसी कारणसे बाल-पिता और बाल-मातायें जीवनमें प्रगति या साहस नही बता सकती। बहुतसे बाल-पति स्वय अपना पेट भरनेमें समर्थ हो, अुससे पहले ही अुन पर स्त्री-बच्चोका भार आ पडता है। अिससे वे कुटुम्बमें बिलकुल दबे हुअे, अपमानित और आश्रित जैसे जीवन बिताते है। तब अैसे माँ-बापके बालक पुरुषार्थी कैसे हो सकते हैं?

अिस प्रकार सार्वजनिक जीवनमें सयमका जरा भी विचार न करनेसे लोग नि सत्व, निर्बल और ओछे दिलवाले होते जा रहे हैं। हमारा राष्ट्र जो गुलामीको अितने लम्बे काल तक पचा सका, और अब स्वतत्रता आ जाने पर भी अुसका नशा हम पर नही चढ रहा है, अिसकी जड भी असयममें ही है। स्वराज्यके अिन शुरूके बरसोमें कअी क्षेत्रोमें स्वार्थ-त्यागी सेवको और सेविकाओकी सेनायें निकल पडनी चाहिये। अिसके बजाय छल-कपट, अनीति, डरपोकपन, रिश्वतखोरी, नफा-खोरी वगैरा कमजोरियो और क्षुद्रताओकी ही सेना क्यो अुमड आअी है? अिसकी जडमें भी यह देशव्यापी असयम ही है।

केवल मोटा शरीर ही सच्चा आरोग्य नही है। सच्चा आरोग्य वही कहलाता है, जिसमें से सारी शक्ति भगवानके चरणो और

मानवकी सेवामें अर्पण करनेका स्वाभाविक अुत्साह पैदा हो। और अैसा सच्चा आरोग्य संयम द्वारा ही लोगोंको मिल सकेगा।

अितनी खैरियत है कि अिस देशके सभ्य कहे जानेवाले लोगोंकी तरह हमारे ग्रामवासियोंमें यह विचार नहीं घुसा है कि संयम मनुष्यके लिअे असंभव है, और वह अुनके स्वभावके विरुद्ध कोअी चीज है। संयम-पालनका आग्रह भले अुनमें न हो, मगर अुनके दिलोंमें संयमके लिअे अिज्जत तो है ही। अिसलिअे चरित्रवान सेवक जनतामें सच्चा आरोग्य पैदा करनेका प्रयत्न करेंगे, तो अीश्वर-कृपासे वह व्यर्थ नहीं जायगा।

ग्रामसेवकोंको अब आरोग्यके कार्यक्रमका पूरा खयाल आ जायगा और वे यह समझ सकेंगे कि केवल दवाओंकी पुड़ियाँ या बोतलें देहातियोंमें बाँटनेसे या बीमार लोगोंको डॉक्टरोंके साथ मिला देनेसे सच्चे कार्यक्रमका स्पर्श भी नहीं होता।

६

खादी और ग्रामोद्योगकी ग्रामसेवक-पद्धति

सेवकका पाथेय

ग्रामसेवक गाँवमें बैठकर जो कोअी कार्यक्रम बनायेगा, अुसके केन्द्रमें चरखा और खादी तो होंगे ही। अिन पुस्तिकामें जो दस कार्यक्रम बताये गये हैं, अुन सबमें पाया जायगा कि चरखा मालाके मनकोंमें सूतकी तरह सबमें मौजूद है।

अिसलिअे ग्रामसेवक गाँवमें जानेसे पहले जो कुछ पाथेय अपने साथ ले, पूर्व तैयारीके रूपमें जो कुछ तालीम ले, अुसमें खादीका काम पूरी तरह सीख लेनेकी खास सावधानी रखनी होगी।

खादी-विद्यामें आम तौर पर कातना आना ही काफी समझ लिया जाता है। मगर ग्रामसेवकको अितना अल्पसन्तोषी नहीं होना चाहिये।

अुसका तुनाअी और पिंजाअीमें अच्छी तरह प्रवीण हो जाना बहुत ही जरूरी है। अिसी तरह अुसे बुनाअी भी सीख लेनी चाहिये। आज तकका यह अनुभव है कि खादी-विद्याके अिन दो विभागोका ज्ञान कच्चा होनेसे खादी आगे बढ बढकर पीछे लौट आती है। चरखा, करघा वगैरा औजार दुरुस्त करने लायक बढअीगीरीका ज्ञान भी अुसे प्राप्त कर लेना चाहिये।

अिस तरह तैयार होनेके बाद ग्रामसेवक अपने पसन्द किये हुअे गांवमें 'ग्रामसेवक-पद्धति' से खादीका काम शुरू करे।

ग्रामसेवक-पद्धतिका अर्थ

ग्रामसेवक-पद्धति आखिर कैसी है?

अिस पद्धतिमें सेवकके मनमें मुख्य विचार यह होगा – "परमात्माने मुझे यह गांव अपने सेवा-जीवनके लिअे दिया है। अिसे मुझे मरते दम तक नही छोडना है। मेरे रचनात्मक कार्यक्रमोको अिस गांवके लोग आसानीसे अपना लेगे, तो मैं अुनका और अीश्वरका अुपकार मानूंगा। आसानीसे नही अपनायेंगे, तो भी यह समझकर कि मुझे अपनी शक्तियो और कलाओको कसौटी पर कसनेका मौका मिला है, मै अुनका सात बार अुपकार मानूंगा और अधिक प्रयत्न करूँगा, मगर किसी भी हालतमें पीछे नही हटूंगा। गांव बदलने या ग्रामसेवाका काम छोडनेका विचार मै स्वप्नमें भी नही करूँगा।"

गांवमें खादीका काम शुरू करनेके बारेमें सेवककी भावना यह होगी –

"मेरे गांवके लोग शुद्ध गाधीभक्त हो जायेंगे, तभी मुझे सतोप होगा।

"अिसके लिअे अुनके सामने मै गाधीजीका प्यारा चरखा रखूंगा और प्रेमसे अुसे चलाना सिखाअूंगा।

"चरखा अुन्हे गाधीजीके अुपदेश अपनी भाषामे सुनाता रहेगा। अुसके परिणामस्वरूप सत्य, अहिंसा, सेवा, दरिद्रनारायणकी पूजा कितनी बढ रही है, यह मै देखता रहूँगा। स्वावलम्बन, स्वदेशी और सादगीके विचार अुनके मनमे कितने अुतर रहे है, अिसका भी माप लेता रहूँगा।

"चरखा तो विचारा निर्जीव है। अिसलिअे ये सब बाते मै अपने जीवनमें अुतारूँगा। अिस तरह मै अपने चरखेमे प्राण पूरनेकी कोशिश करूँगा। और यह प्रयत्न करूँगा कि चरखा मेरे गाँवमें प्राण-सचार करनेवाला साबित हो।

"विज्ञान और यत्रवादके अिस जमानेमें मै यह आशा नही रख सकता कि लोग चरखे और खादीको अपनानेके लिअे तुरन्त तैयार हो जायेंगे। अिसलिअे मै अधीर नही बनूंगा। मगर पूज्य बापूजीके प्रतापसे मुझे यह विश्वास हो गया है कि मनुष्य-जाति चरखेको अपनायेगी, तो ही अुसका सच्चा विकास होगा। साधनो और सुख-सुविधाओसे भरे हुअे शहरोमें मानवके सच्चे गुणोका विकास नही होगा, बल्कि सादे, सरल, शरीरश्रम और सयमवाले गांवोमें अुनका विकास होगा। अिसलिअे मेरे गांवके लोग चरखेको अपनानेमें ढीले मालूम होगे, तो भी मै अपना चरखा बन्द नही करूँगा, बल्कि अपनी सम्पूर्ण कलाका अुपयोग करके अुसे अुनके सामने रखता रहूँगा।

"बडे नही अपनायेंगे तो मै छोटोंके पास अपना चरखा लेकर जाअूंगा, और छोटे भाग जायेंगे तो फिर बडोंके पास जाअूंगा। पुरुष नहीं सुनेंगे तो स्त्रियोंके पास जाअूंगा, और स्त्रियां अूब जायेंगी तब फिर पुरुषोंके पास जाअूंगा। पढे-लिखे न सुनेंगे तो बेपढोंके पास पहुँचूंगा और अपढ थक जायेंगे तो फिर शिक्षितोंके पास पहुँचूंगा। मैं अपने जीवनकी रचना चरखे पर ही करूँगा और अपने कुटुम्बमें चरखेका जीवन जीकर बतानेका प्रयत्न करता रहूँगा।"

अिस भावनासे जो खादीका काम किया जाय, अुसे मैं 'ग्राम-सेवक-पद्धति' का खादी-कार्य कहता हूँ।

ग्रामसेवक क्या-क्या करे?

साधारण खादी-कार्यकर्ता ज्यादातर बाहरी व्यवस्थाका ही विचार करते हैं। नया खादी केन्द्र खोलने जायेंगे तो अुनका दिमाग ज्यादातर कुछ सुविधायें खडी करनेकी तरफ ही चलने लगता है —

१ चरखे मुफ्त या सस्ते दिये जायँ और अिसके लिअे अिधर-अुधरसे रुपयेकी मदद जुटाअी जाय।

२ पूनियाँ लोगोंको तैयार मिल सकें, अैसी कोअी व्यवस्था की जाय।

३ बुनकरोंको अिकट्ठे करके सारा तैयार सूत बुनवा दिया जाय, वगैरा।

मगर ग्रामसेवक दूसरी ही तरह सोचता है। वह अपने जीवनकी गहराअीमें चला जाता है।

वह खुद नियमित कातनेवाला बनेगा।

वह खुद कपडोंके मामलेमें स्वावलम्बी बनने पर जोर देगा। वह अपने परिवारमें कताअी और वस्त्र-स्वावलम्बनका आग्रह रखेगा।

वह अपने जीवनमें सत्य, प्रेम, दरिद्रनारायणकी सेवा वगैराका सूक्ष्म चरखा चलाने पर खास जोर देगा, क्योंकि अुसे अपने गाँवमें ही चरखेके जरिये ये सब बातें दाखिल करनी हैं।

सेवक अपने जीवनमें चरखेका दृढ अुपासक होगा, अिसलिअे अुसे चरखेका प्रचार करनेके रास्ते भी अुस जीवनके अनुकूल ही सूझेंगे।

शुरूमें वह बहुत ज्यादा विस्तार करनेकी झंझटमें नहीं पडेगा, बल्कि थोडेसे कुटुम्बोंमें प्रवेश करेगा।

कपासका मौसम होगा, तो वह अुन कुटुम्बोंके स्त्री-पुरुषोंके साथ कपास चुनने निकलेगा। अुन्हें कातनेके लिअे कपास चुननेकी प्रेरणा

करेगा। यह प्रार्थना करेगा कि सब लोग साफ, बिना कचरेवाली पूनी पनी कपास कातनेके लिअे रखें। अुसे अितनेसे भी सन्तोष नही होगा। जबसे कपास बेच डालनेकी चीज हो गअी, तबसे किसानोका स्वभाव बदल गया है। वे कपास चुननेमें अुसे साफ रखनेकी जरा भी चिन्ता नहीं करते। कूडा-कचरा, कच्चा-पक्का, सडा-गला सारा माल अिकट्ठा कर लेते हैं। ज्यों-त्यों करके वजन बढानेमें ही वे होशियारी मानते है। अच्छे-बुरेकी छान-बीन करके घाटा अुठाना वे मूर्खता समझते हैं। रुपया ज्यादा मिले या कम, सच्चे किसानको यह सहन ही नही होता कि अुसका माल बिगडे। अनाज क्या और कपास क्या, साफ, ककर-पत्थर रहित, और कच्चा-पक्का छाँटकर देनेमें अुसे नीति दीखती है और मिलावट करनेमें अनीति लगती है। अकेले चरखेके खातिर यह सब परेशानी मोल लेनेकी जरूरत मालूम न हो, तो भी ग्रामसेवक अैसी बातोको छेडे बिना रह ही नही सकता। वह अिन सवालोमें अुतरे बिना भी नहीं रह सकता कि कपासकी खेती कितनी मात्रामें की जाय, अुसकी खेती आसान और सस्ती हो और बाजारमे अुसके अच्छे दाम मिलते हों तो भी अुसकी खेती जरूरी मात्रामे ही करके अधिकतर खाद्यकी ही खेती की जाय। अैसा करनेसे वह अव्यावहारिक मान लिया जाय या अुसका चरखेका काम पिछड जाय, तो भी वह निराश नही होगा। सच्चे विचारोंके प्रचारमे ही सन्तोष मानेगा।

ग्रामसेवक नये चरखे लेनेवालोको तैयार पूनियाँ खरीद लानेका रास्ता कभी नहीं बतायेगा। वह अुन्हे तुनाअीकी सुन्दर कला सिखायेगा। तुनाअीकी ताजी ताजी पूनियाँ बनाना बताकर वह अुन्हे अुत्तम पूनियाँ कातनेका चस्का लगा देगा। अैसी दिलचस्पी अुनमें पैदा कर देगा कि अुन्हें तुनाअी सीख लेनेका अुत्साह हो।

तुनाअीकी क्रिया बडी धीमी है, यह कहकर आम तौर पर लोग अुसकी बात अुडा देते हैं। लेकिन गाँवके किसान जहाँ तक हो सकेगा अैसा नहीं कहेंगे। अपने हाथों घर पर हो सकनेवाले काम धीमे हो,

तो भी अुन्हे घर पर ही कर लेनेका हिन्दुस्तानके देहाती लोगोका स्वभाव है। वह अभी विलकुल मिटा नही है। और तुनाअीकी कला भी अितनी मोहक है कि देहातके आदमीको अुसमें आनन्द आये विना रह ही नही सकता।

डर तो यह है कि सेवक खुद तुनाअीका भक्त वना हुआ नही होता। वह खुद तुनाअीकी पूनियाँ कातनेका आग्रही न हो, तो औरोमें अुसके लिअे आग्रह पैदा नही कर सकता। और धीमी होने पर भी तुनाअी विलकुल धीमी नही है। अगर कुशलता प्राप्त कर ली जाय, तो कपाससे फी घंटा ढाअी-तीन तोला पूनियाँ बनाअी जा सकती है। और सूत भी २०० से २५० तार तक काता जा सकता है। और अगर बुद्धिमान ग्रामसेवक और शिक्षक अिस क्रिया पर गहरा विचार करे, तो आसानीसे गति और गुण बढानेवाले छोटे, हलके और घरेलू औजारोका आविष्कार होनेकी पूरी-पूरी सभावना है।

पूनियाँ वनानेके लिअे धुनकी जारी करनेकी मनाही नही है। मगर अुसे शुरू करनेवाले सेवकको दो वाते खास तौर पर करनी चाहिये — अेक तो सिर्फ धुनकी देकर ही सन्तोष न करके अुसे लोगोको पीजनेकी अुत्तम कला सिखा देनी चाहिये, दूसरे, अुसे खुद ताँत बनाना आना चाहिये और लोगोको भी यह कारीगरी सिखा देनी चाहिये। अिन दो वातोंके अभावमे जारी की हुअी धुनकी वेकार सावित होती है, लोगोको पूनियोंके वारेमें निराशा रहा करती है या खराव पूनियाँ कातनेसे अुनका दिल अूब जाता है।

सूत वन जानेके वाद अुसे बुननेका सवाल पैदा होगा। मामूली आदमियोको खादीके सारे धन्धेमें सबसे मुश्किल काम वुनाअीका मालूम होता है। करघा, कघी, वअी, अिन सवमें फँसे हुअे सूतके तार, ताना और माँड — साधारण आदमियोके दिमागमें ये सव अत्यन्त कठिन क्रियाका खयाल पैदा करते है। वे वुनकरको कोअी भेदी जादूगर जैसा मानते है। आम लोगोमें वुनाअीके वारेमें यह भ्रम होता

है कि कातने-पीजने वगैराके काम तो सीखनेसे आ जाते है, मगर बुनाअी देहाती किसानको आ ही नही सकती। वह तो जुलाहेके घर जन्म लेनेवालेको ही आ सकती है। ग्रामसेवकको अिस सम्बन्धमें पहलेसे ही चेत जाना चाहिये। अुसे अपनी कुटियामें पहलेसे ही करघा लगा देना चाहिये। गाँवके लोगोंके घरोमें सूत तैयार होने लगे, अुससे पहले ही अुसे अुनके नौजवानो और बच्चोको बुनाअीकी अलग-अलग क्रियाओंकी जानकारी करा देनी चाहिये। ये सारी क्रियाअें अितनी आकर्षक है कि अुन्हे देखनेमे बालक और युवक थकेंगे ही नही। और सेवकमें शिक्षककी वृत्ति होगी, तो कुकडी, ताना और जोड वगैराके कामोंमें वे अुसका हाथ भी जरूर बँटाने लगेंगे। यह असम्भव नही कि समय पाकर गाँवमे से पाँच-सात पुरुष या स्त्रियाँ बुनाअी सीख लेनेको तैयार हो जायँ।

खादीका काम करनेके अिस ढगको मै ग्रामसेवक-पद्धति कहता हूँ।

गाँवोमें ही विकास सभव है

सेवकको अल्पबुद्धिकी दलीले देकर खादीका प्रचार करनेकी अिच्छा न करनी चाहिये। खादी सस्ती पडेगी यह मनवाकर खादीका प्रचार किया गया होगा, तो यह भ्रम लम्बे समय तक नही टिकेगा। अुसमें स्वावलम्बनका आनन्द है, यह समझकर खादी अपनाअी गअी होगी तो ही वह टिक सकेगी। राक्षसी यत्रोंसे थोकबन्द बननेवाला कपडा बाजारमें सस्ते भावसे बेचा जा सकता है। लेकिन खादी मजदूरोंसे ही बनवाअी जाय, तो यह खुली बात है कि स्पर्धामें मशीनके साथ टिकना अुनके लिअे सम्भव हो ही नही सकता। परन्तु जो खादी मनुष्य अपने घरमें और फुरसतके वक्त खुद बना लेता है, अुसके बराबर सस्ती चीज और कोअी नही हो सकती। यह समझकर सेवकको खादीका प्रचार सस्ते-महँगेकी दलील पर नहीं, परन्तु स्वावलम्बनकी दलील पर ही करना चाहिये।

स्वावलम्बी जीवन हमेशा सादा ही होगा। अुसमें तडक-भडक या जरूरतसे ज्यादा परिग्रहकी गुजाअिश नही हो सकती। और मेहनती आदमी ही अिस तरहका जीवन विता सकता है और अुसका आनन्द लूट सकता है। अैसा मेहनती और थोडे परिग्रहमें सन्तोप माननेवाला स्वावलम्बी जीवन विताना प्रिय हो, तो वह छोटेसे सुन्दर और सुखी गांवमें ही विताया जा सकता है। ग्रामसेवक सिर्फ चरखेकी बाहरी वातोका प्रचार करके सन्तोप नही मानेगा, परन्तु अुसकी जडमें रहने-वाली अिस विचारधाराका भी प्रचार करनेकी कोशिश करेगा। अिसके लिअे और साधन वह भले ही काममें ले, मगर सवसे अच्छा और सच्चा साधन तो अुसका अपना और अुसके कुटुम्वका जीवन ही है। सादा, मेहनती, स्वावलम्वी और सेवापरायण जीवन सक्रामक होता है। दूसरो पर अुसका असर होता ही है। हो सकता है कि अिस अुलटे रास्ते जानेवाले ससारमे आज अुसके जीवनका असर वहुत व्यापक न हो। मगर हरअेक सेवककी श्रद्धा और अुत्साहको कायम रखने लायक मात्रामें तो अुसे यह असर प्रत्यक्ष दिखे विना नही रहेगा। अुसके प्रेम, श्रद्धा और सेवाको अपनानेवाले थोडे स्त्री-पुरुष, थोडे वच्चे और थोडेसे दीन-हीन किन्तु भोले-भाले ग्रामवासी किसी भी गांवमें मिल ही जायँगे। अरे, सामान्य परिस्थितिमें जिनसे जवावकी आशा नही रखी जा सकती, अुन सुखी धनवानोमे भी अुसका सन्देश स्वीकार करनेवाले कुछ व्यक्ति मिल ही जायँगे। और कुछ नही तो अुनकी स्त्रियो और अुनके वच्चोमें से तो कोअी-न-कोअी श्रद्धालु अुसे अवश्य मिल जायगा।

सर्वव्यापक स्वावलम्वन

स्वावलम्वनके सम्वन्वमे अेक विचार ग्रामसेवकके सामने रखनेकी जरूरत है। मनुष्य खादीके मामलेमें स्वावलम्बी हो और दूसरी वातोमे जी चाहे वैसा व्यवहार करे, तो अुसका स्वावलम्वन वहुत दिन तक

नही चलेगा। खादीसे रुपया बचता है अिसलिअे नही, बल्कि स्वावलम्बी जीवनमें ही सच्चा विकास और कल्याण है यह समझ होगी तो ही खादीमें मनुष्यको रस आयेगा। और जिसमें यह समझ और यह रस पैदा हो गया होगा, वह जरूरतकी दूसरी चीजोंमें भी कुदरती तौर पर अिस सिद्धान्तका पालन करेगा। अुदाहरणके लिअे, वह ग्रामोद्योगके ही जूते पहनना पसन्द करेगा। घर पर टीनके बजाय कवेलू डालना पसन्द करेगा। मोटर लॉरियोंकी अपेक्षा बैलगाडियोंका ही आग्रह रखेगा। मशीनसे पिसवाने या कुटवानेके बजाय घरमें ही चक्की चलाना पसन्द करेगा। हर बातमें अुसे सस्ते-महँगेके, जल्दी और धीरेके, टिकाअू और बेटिकाअूके विचार भुलावा देने आयेंगे, मगर वह अुनके जालमें नही फँसेगा।

सार यह कि खादीके गर्भमें ग्रामोद्योग आ ही जाते है। जिस ग्रामसेवकने यह समझ लिया होगा, वही सच्चा खादी-कार्य करनेमें समर्थ होगा। मैंने शुरूमें खादीकी क्रियाओंमें कुशल बननेके बारेमें ग्रामसेवकोंसे जैसी जोरदार सिफारिश की है, वैसी ही सिफारिश दूसरे अुद्योगोंके लिअे भी करता हूँ। अिसके लिये मेरा सुझाव है कि गाँवके अलग-अलग कारीगरोंको अपने सेवाके क्षेत्रमें शामिल कर लेनेका अुन्हें खास ध्यान रखना चाहिये। अुन्हें चरखा सिखाना चाहिये, अुनके बच्चोंकी सेवा करनी चाहिये, बीमारी आदिमें अुनकी सार-सँभाल करनी चाहिये और यह सब करते हुअे अुनके अुद्योगोंमें भी प्रवेश करना चाहिये।

गाँवके कुम्हार, बढअी, लुहार, चमार और मोची सबका सेवक और साथी बननेकी अुसे कोशिश करनी चाहिये।

अिस तरीकेसे काम करनेवाला सेवक अपने खादी और दूसरे सेवाके कामोंमें आनेवाली अपनी मुश्किलें गाँवके कारीगरोंके सामने रखेगा, अुनमें सेवाभाव जाग्रत करेगा और अुनसे सेवा लेगा। गाँवमें चरखोंकी माँग पैदा होगी, तो अुसे देखकर वसन्त ऋतुमें जैसे आम फूल

अुठते हैं, वैसे ही गाँवके बढअियोमें आनन्द ही आनन्द छा जायगा। ग्रामसेवक नये चरखा-भक्तोका और अिन अुत्साही बढअियोका मेल बैठा देगा। लोग लकडी लेकर बढ़ओके यहाँ जायेंगे तो बढअी प्रेमसे चरखा बना देगा और प्रेमकी निशानीके तौर पर हत्थे पर तोता भी बना देगा। काम नया है तब तक चरखा शास्त्र-शुद्ध बना है या नही, अिसकी जाँच सेवक करता रहेगा और मिस्त्रीको शास्त्रके तत्त्व समझायेगा।

गलत और सही रास्ते

आजकल खादीका काम करनेवालोका तरीका अैसा नही होता, अिसलिअे अुनके काममें कअी तरहकी अडचने पैदा होती हैं। अिन अडचनोमें से वे जो रास्ते निकालते हैं, वे भी अल्पदृष्टिके ही होते है।

१ पुराने खादीके काममें सूतमें कचरा आनेका सकट सदा ही बना रहता है। अुससे कातनेवाला अूब जाता है और जुलाहेको तो धन्धेसे वैराग्य ही हो जाता है। अैसा सकट क्यो न आये? रूअीकी तैयार गाँठें कारखानोसे लाअी जाती है। वहाँ कौन साफ करके गाँठें बाँधता है? और अुनकी मिलमें तो कचरा अुडा देनेवाले राक्षसी पखे होते हैं, अिसलिअे वे क्यो अिसकी चिन्ता रखें?

सच्चा खादी-सेवक बडे सवेरे ही खेतमे जाकर लोगोको शुद्ध, बिना कचरेकी कपास चुननेका चसका लगायेगा और अिस तरह खादीको अिस अेक सकटसे बचा देगा।

२ पुराने खादी-कार्यमें लोगोको तैयार पूनियाँ बेचनेकी व्यवस्था की जाती है। यह तो हो ही नही सकता कि पूनियाँ बनानेवाले मजदूर अुस सारी रूअीको साफ करने और बिना कचरेके सुन्दर पोल बनानेकी परवाह रखें। वे अैसा करने लगे तो अुतनी मजदूरी देना बडे राजाको भी नही पुसा सकता। अिसलिअे ज्यादातर लोगोको खराब पूनियाँ ही कातनेको मिलती हैं और वह भी बेहद महँगी। अिसका भी भरोसा नही कि वैसी पूनियाँ भी हमेशा मिलती ही रहेंगीं।

सच्चा खादी-सेवक लोगोंको तुनाअी सिखा देनेके लिअे अपनी सारी कला आजमायेगा और अुन्हे ताजी सुन्दर पूनियोका स्वाद चखाकर खादीको अिस दूसरे सकटमे बचानेकी कोशिश करेगा।

३ पुराने खादी-कार्यमें कातनेवाला, पीजनेवाला और बुननेवाला —सभी मजदूर होते हैं। अिन सबकी लापरवाहीके कारण खादी कमजोर और असमान तैयार होती है। खादीका धन्धा करनेवालेको अिस तरह सिर पर आ पडी खादी किसी न किसी तरह निकालनी ही होती है। वह खादीका गुणगान करता है, नेताओंके नाम पर खादीको सामने रखता है और अिसमें भी सफलता न मिले तो खराब खादीको रगा और छपाकर सजाता है और ग्राहकके मत्थे मढता है। अिस तरह खादीका प्रचार होनेके बजाय अुसको नुकसान ही पहुँचता है।

सच्चा खादी-सेवक तो कातनेवालेके जीवनमें प्रवेश करेगा। अच्छी कपास, अच्छी पूनियो और अच्छे औजारो पर वह शुरूसे ही ध्यान देगा। अिसलिअे अुसकी खादीके कमजोर होनेका कारण ही नही रहता।

अिसके अलावा, वह अेक शिक्षक भी होगा। अिसलिअे वह लोगोको अपनी रूअी व सूत वगैरा तौलकर देखने, अुसकी मजबूती जांचने और तुलना करनेका भी चसका लगाता रहेगा। अेक तरफ खादी मजबूत और कसदार बनती जायगी और दूसरी तरफ प्रौढ देहातियोको गणित आदिका ज्ञान भी मिलता रहेगा—अिस तरह ग्रामसेवक अेक साथ अनेक सेवायें करेगा।

४ खादी पर चौथा सकट यह है कि कातनेवाले और खादीका काम करनेवालेको हमेशा सूत बुनवानेकी चिन्ता रखनी पडती है। वे देश-विदेशसे जुलाहोको लाकर बडा खर्च और खुशामद करके अुन्हे बसाते हैं। और कभी-कभी सूतकी गांठ दूसरे प्रान्तोंके बुनाअी-केन्द्रोंमें भेजकर बुनवानेका अिन्तजाम करते है। अिस प्रकार बुनाअीका सवाल

हमेशाके लिअे कभी हल होता ही नही। २५ साल पहले जो परेशानी थी, वही परेशानी आज भी अुनके सामने मौजूद है।

सच्चा सेवक अपने गाँवमें से युवको और स्त्रियोको तैयार करके अुन्हे वुनाअी सीखनेकी प्रेरणा देगा। जब तक सीखनेवाले न निकले, तब तक खुद भरसक बुन देगा और अितनेसे सन्तोष मानेगा। मगर अिस ढगसे काम करनेवालेको वुनाअी सीखनेवाले मिल ही जाते हैं। अकसर अैसे कार्यकर्ताको लोगोकी तरफसे जवाब मिलता ही है।

५ पुराने तरीकेमें अकसर खादीके ढेर लग जाते है। वह महँगी होती है और भद्दी भी होती है। जबतक यह ढेर बिक नही जाता तब तक पूंजी रुकी रहती है। अिसलिअे खादीकी अधिक पैदावार रोक देनी पडती है। अिससे पुरानी खादी वेच डालनेके लिअे कअी अच्छे-वुरे रास्ते अख्तियार करने पडते है। शहरोमें भडार खोलने पडते है। भडारोमे विज्ञापनके अिस जमानेमें शोभा देनेवाली तडक-भडक खडी करनी पडती है। ये सारे खर्च या तो खादी पर या सार्वजनिक फड पर डाले जाते है।

सच्चा खादी-सेवक विकाअू खादीकी झझटमें पडता ही नही। अुसके केन्द्रमें जितनी खादी बनती है, अुसे बनानेवाले खुद ही पहनते है। कभी किसीने ज्यादा समय देकर जरूरतसे थोडी ज्यादा खादी वना ली हो, तो वह गाँवमें आपसमें वस्तुओंका विनिमय कर लेता है।

पुराने तरीकेमे चरखे, तकुअे, वगैरा जरूरी सरजाम जुटानेकी भी हमेशा फिक्र वनी रहती है। देशमें यहाँ-वहाँ कार्यालय खुले है। मगर वे कब कितना माल खपेगा, अिसका कोअी अदाज नही लगा सकते। और फिर मालको दूर-दूरसे लाना ले जाना पडता है। अिन दो कारणोंसे सरजाम महँगा भी हो जाता है।

जैसा अूपर कहा जा चुका है, सच्चा सेवक गाँवके कारीगरोको भी अपने कार्यक्षेत्रमें शामिल कर लेगा। और सरजामके मामलेमें वह अपने गाँवको अुनकी मददसे स्वावलम्बी बनानेका प्रयत्न करेगा।

अिस तरह गलत ढंगसे खादीका काम करनेसे असके रास्तेमें जो जो रुकावटें पैदा होती हैं, वे ग्रामसेवक-पद्धतिसे काम करनेमें पैदा नहीं होंगी। अनके लिअे अिस पद्धतिमें पहलेसे ही सावधानी रखी गअी होगी। यह पद्धति दीखनेमें धीमी और सीमित मालूम होती है, मगर अन्तमें वही तेज और व्यापक साबित होती है।

खादी और ग्राम-जीवनका सम्बन्ध

फिर ग्रामसेवक-पद्धतिसे काम करनेवाला सेवक खादीको सारे ग्रामके जीवनको अूंचा अुठानेका अेक साधन मानता है। अिसलिअे वह गांवके लोगोंके प्रश्नोंको खादी-कार्य मानकर अपने हाथमें लेगा।

पुराने तरीकेमें कातने-बुननेका केन्द्र खोला और बेचनेका भण्डार कायम किया कि खादीका काम पूरा हो जाता है।

ग्रामसेवक-पद्धतिमें तो सेवक घर-घरमें प्रवेश करता है, लोगोंको खादीकी सारी क्रियायें सिखाता जाता है और अुनकी खेती-बाड़ी, अुनके बच्चोंकी शिक्षा, अुनकी सामाजिक रूढ़ियों वगैराके सवालोंको भी अुत्साहसे हल करनेका प्रयत्न करता है। अैसा करनेसे कभी खादी-कामको वेग मिलता है, तो कभी वह रुक भी जाता है। फिर भी वह अपना कर्तव्य करता ही रहता है।

गांवोंमें अक्सर अैसा देखनेमें आता है कि सत्ताधारी लोग गरीब देहातियोंको डरा-धमका कर अुनसे बेगार कराते हैं। खादीके साथ गांधीजीका और कांग्रेसका नाम लगा होनेसे स्वाभाविक तौर पर ही मनुष्य संकटके समय खादी-कार्यकर्ताकी शरणमें जाता है। पुरानी पद्धतिमें कार्यकर्ताको अपने कार्यालयकी जिम्मेदारी सँभालकर बैठना पड़ता है। यदि वह अैसे मामलोंमें पड़े तो खादीका काम राजनीतिमें शुमार हो जाय, जिससे अुसे राज्यका कोपभाजन बनना पड़ सकता है। अिसलिअे वह खादीके अुत्पादनके सिवाय और बातोंमें नहीं पड़ता।

ग्रामसेवक-पद्धतिसे काम करनेवाला सेवक जुल्मके मौके पर किसीके बुलानेकी राह नही देखेगा। वह मनमें कहेगा कि जुल्मका विरोध करनेकी लोगोको हिम्मत न दिलाअूं, तो मेरी खादी गाधीजीकी खादी कैसे कही जायगी ?

गाँवोमें अकसर साहूकार गरीब असामियोको कानूनके चगुलमें फँसाते है और बेकायदा अुनका माल छीन लेते हैं। पुरानी पद्धतिका कार्यकर्ता पीडित लोगोकी मदद पर खडा रहना अपना फर्ज नही समझेगा, मगर ग्रामसेवक-पद्धतिका कार्यकर्ता तो अैसे मौके पर अुनकी मदद करना खादीका ही काम समझेगा। वह जानता है कि अुसका काम सिर्फ लोगोको कपडा पहनाना ही नही है, अन्तमें अन्यायके विरुद्ध खडे होनेकी वीरता अुनमें पैदा करना भी अुसका फर्ज है।

पुरानी पद्धतिमें रुपया देकर खादी बनवानेकी यानी कातने-बुननेवालोंके साथ मजदूरो जैसा ही बरताव करनेकी बात होती है। अुनके सुख-दुख देखने जायँ, तो वे सिर पर चढ जायँ। मजदूरोको कातने बिठाया हो, अुस वक्त अुनके बच्चे आकर माँ-बापका समय बिगाडते हो, तो अुनको कान पकडकर बाहर निकाल देना कार्य-कर्ताका फर्ज हो जाता है।

ग्रामसेवक-पद्धतिमें सेवकको अैसी खराब स्थितिका सामना नही करना पडता। बच्चे कभी अुसके काममें बाधा नही डालते, अुल्टे अुसके खादी-कार्यमें रसका सचार करते हैं। वह कुटुम्बमें बैठकर काम करता होगा, तो प्रेमसे बच्चोकी सेवा कर सकेगा। अुसमें बच्चोंके लिअे ज्यादा प्रेम होगा, तो वह बालवाडी भी चलायेगा, बच्चोकी सेवा करके अुनके माँ-बापका प्रेम सपादन करेगा और वे अुसके बताये हुअे खादी वगैराके तमाम कार्यक्रमोमें ज्यादा श्रद्धा रखने लगेंगे।

खादीकार्यको चार चाँद

ग्रामसेवककी मुख्य खादी-प्रवृत्ति कैसी हो, अिसका चित्र यहाँ विस्तारसे दिया गया है। अुसके परिणामस्वरूप सारे गाँवमें अुत्साहका

संचार होगा या नही और सारा गाँव वस्त्र-स्वावलबी बनकर अपने कपडेका प्रश्न हल कर लेगा या नही, यह कहना मुश्किल है। लेकिन अितना तो कहा जा सकता है कि अगर अिसके लिअे वातावरण तैयार होनेकी कुछ भी सभावना हो, तो गाँवके लोगोमें अिस तरहके खादी-कार्य द्वारा अुनकी अूँची वृत्तियोको जाग्रत करनेसे ही वह सभावना पैदा की जा सकेगी। ग्रामसेवकका काम और लोगोमें अुसका प्रेमसबध अच्छी तरह जम जानेके बाद अैसा शुभ दिन आ सकता है कि जब वह गाँवके लोगोको अिकट्ठा करके अुनके द्वारा कपडे और दूसरी कुछ मुख्य-मुख्य बातोमे गाँवका स्वावलम्बन साधनेका निश्चय करा सके। अिसके लिअे वह ग्रामपचायतका अुपयोग कर सकेगा, गाँवका खादी-मंडल बनाया गया होगा तो अुसके जरिये भी काम ले सकेगा। सच पूछा जाय तो यह भी ठीक नही कि सेवक अिस प्रकारका निश्चय कराये। क्योकि गाँवका वायुमण्डल पूरी तरह स्वावलबी बन गया होगा और वहाँके कअी स्त्री-पुरुष गाँवको स्वावलम्बी बनानेकी कल्पनाके पीछे पागल हो गये होगे, तो ही गाँव अैसा निश्चय कर सकेगा और अुसका पालन होगा। अकेले सेवकमें ही अुत्साह होगा, तो शायद लोगोमें क्षणिक जोश पैदा करके वह अुनसे निश्चय तो करा सकेगा, मगर अुसका पालन मुश्किल से हो सकेगा।

ग्रामपचोका स्वावलबनका निश्चय अगर सच्चे दिलसे किया गया होगा, तो वह गाँव मिलके कपडेके हमले पर काबू पानेमें पूरी तरह समर्थ हो चुका होगा। अुस गाँवका लोकमत अितना प्रबल बन गया होगा कि कोअी भी व्यापारी या फेरीवाला वहाँ मिलका कपडा बेचने आयेगा ही नही। कोअी आया भी तो गाँव अपने लोकमतके जोरसे अुसे बेकार बनाकर बाहर निकाल सकेगा। अैसे गाँवकी अिच्छाका आदर करके सरकार भी अपनी हुकूमतके जोरसे अुसे जरूरी सरक्षण देनेको तैयार होगी। देशकी सरकार गुलामीके जमानेकी सरकार जैसी

हो और लोगोकी स्वावलम्बन और स्वदेशीकी भावनाओंका विरोध करनेवाली हो, तो अुसके विरुद्ध सत्याग्रह करनेकी शक्ति बताना अैसे गाँवके लिअे बाँयें हाथका खेल होगा।

ग्रामसेवककी खादी-प्रवृत्तिका असा परिणाम जिस दिन आयेगा, अुस दिन अुसके कामको चार चाँद लग जायँगे। किसी अेकाध गाँवमे अेकाध सेवक ही काम करता होगा, तो अुसके लिअे अैसा सुदिन आनेकी आशा बहुत नही रखी जा सकती। आसपास खारा समुद्र गरज रहा हो, तो अुसमें अेकाध गाँवके लिअे अपना मीठा झरना पैदा करना लगभग असभव होगा। लेकिन अगर अनेक ग्रामसेवक अनेक गाँवोमें बैठे हो और सच्चे दिलसे खादी-सेवा कर रहे हो, तो अुनके सगठित बलसे अैसा परिणाम वे जरूर पैदा कर सकते हैं।

राहतकी खादी

खादीके कामकी ग्रामसेवक-पद्धतिका यह प्रकरण पूरा करनेसे पहले राहतकी खादी या बिकाअू खादीके बारेमे भी विचार कर लें।

गाँवके गरीब लोगोमें बेकारी पाअी जाय या अकाल जैसा सकट आ पडे, तो अुस मौके पर लोगोको मुफ्त दान देनेके बनिस्बत अुन्हें कोअी अुत्पादक काम देकर बदलेमें राहत देना हर तरहसे अच्छा है। अिससे कष्टनिवारणके रुपयेका अधिकसे अधिक लाभ मिल सकेगा, अिसके सिवा सकटग्रस्त लोग स्वाभिमानके साथ रोजी कमा सकेंगे, वह कोअी मामूली नैतिक लाभ नही है। अैसे मौके पर कष्टनिवारणके कामके रूपमें चरखा अेक अुत्तम साधन सिद्ध होगा।

अैसे मौको पर तालाब और सडकें बनाने जैसे स्थायी लोकोपयोगी काम शुरू किये जाते है, लेकिन ये काम अकसर काफी मात्रामें नही मिलते। और अकालके मौके पर लोगोकी शरीर-शक्ति क्षीण हो गअी हो, तो वे अैसे भारी मेहनतके काम करने लायक नही रह जाते। अैसी हालतमें चरखा बहुत ही अच्छा साधन होगा।

अगर चरखेको पसन्द करना हो, तो अुसके कामके जानकार कर्ता काफी सख्यामें होने चाहिये। भले राहतके तौर पर काम हो हो और कुछ फीसदी घाटा सहनेकी सुविधा भी हो गअी 'हो, भी जो चरखे अिस्तेमाल किये जायें, वे सचमुच अच्छे होने चाहिये, सूत काता जाय, वह सचमुच बुनने लायक होना चाहिये और जो ा अुत्पन्न हो, वह सचमुच सुन्दर और टिकाअू होनी चाहिये।

अैसे मौको पर स्वाभाविक रूपमें अपने सामने आ पडनेवाले ोंका ग्रामसेवक जरूर स्वागत करेगा। मगर वह कोशिश करेगा आम तौर पर गाँवके लोग अैसे काम हाथमें लेनेको प्रेरित हो। सेवक अकेला ही काम करता रहे और लोगोको अुसमे कुछ भी चस्पी न हो, अैसी स्थिति पैदा न होने देनेकी अुसे सावधानी ी चाहिये।

पहनें पर कातें नहीं — अुनका सवाल

खादीकार्यके सिलसिलेमे अेक और विचार भी कर ले।

अेक खास वर्ग देशमें अैसा खड़ा हो गया है, जो खादी तो जरूर नना चाहता है, परतु खुद कातनेको तैयार नहीं है। अिसके सिवा द्रसभा (पार्लमेन्ट) और धारासभाओंके सदस्य होनेके लिअे भी दी धारण करना अनिवार्य है। तो अिस वर्गके लिअे खादी मुहैया ना सेवकका फर्ज है या नहीं?

चरखा-सघ आज तक ज्यादातर अैसे ग्राहकोंके लिअे ही खादी ार कराता था और भडार चलाकर खादी बेचता था। सेवक मानते कि खादी-प्रेमियोको खादी मुहैया करके वे देशसेवा कर रहे हैं; और दी खरीदनेवाले भी यह मानते थे कि खादीके द्वारा गरीब मजदूरोंको ी देकर वे देशसेवा कर रहे हैं। मिलके कपडेसे खादी अगर महँगी ती, तो चरखा-सघ अपने सार्वजनिक कोषसे कुछ न कुछ सहायता र खादीधारियोंके लिअे अुसे सस्ती कर देता था।

सकेंगे, अुसके लिअे योग्य कार्यकर्ता नही जुटा सकेंगे या जरूरी खर्च नही कर सकेंगे, यह माननेके लिअे कोअी कारण नही।

सिर्फ अिसलिअे कि आज तक चरखा-सघसे या खादी-कार्यकर्ताओसे तैयार खादी लेनेकी लोगोको आदत पडी हुअी है, ग्रामसेवकका फर्ज हो जाता है कि वह नया सगठन करनेमें अुन्हें प्रेरणा दे। अिससे ज्यादा जितना ही भार वह स्वय अुठायेगा, अुतना ही वह लोगोमें खादीके विषयमें पगुपन पैदा करनेका कारण बनेगा और अपना ग्रामसेवाका मुख्य काम चूकेगा।

७

लोकशिक्षण

१ सामान्य ज्ञानका पाठ्यक्रम

ग्रामसेवकके कार्यक्रमोमें लोकशिक्षणका कार्यक्रम भी बडे महत्त्वका है। गाँवमें बसनेवाले लोकसेवकोको थोडे ही समयमें यह मालूम हो जायगा कि ग्रामवासियोका सामान्य ज्ञान बहुत ही थोडा है। अिसलिअे अन्धा आदमी जिस तरह सामान भरे हुअे कमरेमें अिधर-अुधर टकराता है, अुसी तरह अिस मुश्किलोसे भरी हुअी दुनियामें वे पग-पग पर भटकते रहते है। अिस कारण वे दूर किये जा सकने लायक दुखो और कठि-नाअियोंसे भी परेशान होते है। अिसके सिवा सेवक जो कुछ भी रच-नात्मक कार्यक्रम अुनके सामने पेश करता है, अुसका भी पूरा अर्थ वे समझ नही पाते। अिसलिअे अुनका सामान्य ज्ञान बढाना सेवकका बडा जरूरी फर्ज हो जाता है।

पहला ज्ञान -- शरीरका

शरीरके मामूलीसे मामूली धर्मोका भी खयाल अुन्हें नही होता। अिसलिअे जैसे किसी बच्चेके हाथमें कांचका बर्तन आने पर वह अुसे

तोड़ बैठता है, अुसी तरह ग्रामवासी अपने और अपने बच्चोंके शरीरको देखते-देखते ही बिगाड देते हैं।

किसीको जरासी चोट या खरोंच लगी कि देखते-देखते वह अुसे पका बैठता है और लम्बे समय तक कष्ट भोगता है।

छूतका अुसे खयाल नही होता। खुजली और फोडे अेकको होते हैं, तो अुन्हें वह सारे घरमें और मुहल्लेमें फैला देता है।

पेटदर्द, सिरदर्द, बुखार जैसे साधारण रोगोंके कारणों या अुनके घरेलू अिलाजोंका अुन्हें ज्ञान नही होता। या तो जादू-टोनेवालोंके पीछे पडकर वे जंतर-मंतर कराते हैं या घुटने समेटकर धूपमें पडे रहते हैं और खाना-पीना जारी रखते हैं।

शरीरके धर्मोंका ज्ञान ग्रामवासियोंमें फैलाना लोकशिक्षणका पहला और सबसे जरूरी काम है।

यह काम महज भाषण देनेसे ही नही हो सकता। मौका पडने पर धीरजसे सेवा करना और सेवा करते-करते प्रेमसे रोगोंके कारण समझाते जाना सेवकके लिअे सबसे अच्छा मार्ग है।

सेवक अगर आरोग्य-केन्द्र चलायेगा, तो अिस ज्ञानके फैलानेमें वह बहुत ही अुपयोगी साधन साबित होगा।

शरीर और बीमारियों सबंधी चित्र और नकशे बताकर भी लोगोंके ज्ञानमें वृद्धि की जा सकती है। कभी-कभी आरोग्यशास्त्रके विद्वानोंको बुलाकर अुनके व्याख्यान भी कराये जा सकते हैं। चित्रों और प्रत्यक्ष प्रयोगोंकी मददके साथ अपने व्याख्यानमें भरसक सरल भाषा काममें लेनेकी अुनसे प्रार्थना की जाय, अिस पर भी अगर यह मालूम हो कि वे अैसा नही कर पाते, तो सेवकको खुद अुनका भावार्थ ग्रामीणोंकी समझमें आनेवाली भाषामें कह सुनाना चाहिये।

दूसरा ज्ञान — सफाअीका

शरीरकी तरह सफाअीके नियमोंके बारेमें भी देहातियोंमें भारी अज्ञान फैला होता है। अिसलिअे घरमें, आंगनमें, मुहल्लेमें, गांवके

रास्तों पर और सीमाओं पर — जहाँ देखो वहाँ अविचारके कारण अिकट्ठे किये हुअे गदगीके घूरे पाये जाते हैं। अिनकी वजहसे दुर्गंध और गदगीके सिवाय मक्खी-मच्छर वगैराका भी त्रास होता है। देहाती लोग शायद ही यह जानते हैं कि अिन जन्तुओं और गदगीका आपसमें कुछ सबंध है।

ग्रामसेवकको अिस मामलेमें भी धीरजके साथ लोगोंमे सच्चे ज्ञानका प्रचार करना चाहिये।

अिसके लिअे सर्वोत्तम साधन ग्रामसफाअीका नियमित कार्यक्रम रखना है।

चित्रों और भाषणोंका मौके पर अिसमें भी अुपयोग किया जा सकता है।

तीसरा ज्ञान — बालशिक्षाका

बालकोंकी स्थिति देखें तो मालूम होगा कि गाँवकी स्त्रियोंको बालसवर्धन और बाल-सगोपनका बहुत कम ज्ञान होता है। अिसलिअे बहुतसे बालक अकाल मृत्युके ग्रास हो जाते हैं और जो जीते हैं वे रोगी और कमजोर रहते हैं।

बच्चोंको कितनी मदद देनी चाहिये, अुन्हें कितना स्वतत्र रहने देना चाहिये, अिस बारेमें भी लोगोंमें घोर अज्ञान पाया जाता है। अिसके परिणामस्वरूप बालक जहाँ तहाँ जोर-जोरसे रोते सुनाअी देते हैं और माँ-बाप अुन पर चिढते, चिल्लाते और मारते हुअे नजर आते हैं। सेवकको अिस बारेमें भी सच्चा ज्ञान फैलानेके रास्ते निकालने चाहिये।

अिसके लिअे व्याख्यान, चित्र और पुस्तकें — अिस तरह अनेक प्रकारके अुपाय प्रसगके अनुसार काममें लेने चाहिये। लेकिन सबसे अच्छा अुपाय तो मुहल्लेके बीचमें या पासमें अेक सुन्दर बालवाडी चलाना ही है।

चौथा ज्ञान — धन्धेका

ग्रामवासी कोअी न कोअी धन्धे तो करते ही हैं। ज्यादातर लोग खेती करते हैं, थोडे-बहुत कारीगर होते हैं। वंशपरम्परासे अेक ही काम करते आनेके कारण अपने-अपने धन्धेकी साधारण कुशलता तो अुनमें अच्छी होती है। लेकिन बारीकीमें जाकर देखें तो मालूम होगा कि सिर्फ आदतके कारण ही अुनमें थोडी कुशलता आ जाती है, मगर अुन्हें धंधेका अच्छा ज्ञान नहीं होता। अिसलिअे खेती या दूसरे धंधे दिन-दिन गिरते ही जा रहे हैं, अुनमें कुछ सुधार नहीं होता।

खेतीमें करने जैसे कुछ सुधार तो अैसे हैं कि जिनका सामान्य ज्ञान होनेसे बहुत फायदा हो सकता है।

वनस्पति, मल, हड्डियाँ वगैरा ढेरोंसे अिधर-अुधर पडी रहती हैं और गन्दगी बढाती हैं। सेवक अुनका सुन्दर खाद बनाकर लोगोंके सामने अुदाहरण पेश कर सकता है। चौड़ी जुताअीके फायदे प्रयोग करके बताये जा सकते हैं। ढालू जमीनमें पालें बाँधकर जमीनकी धुलाअी रोकनेका प्रयोग भी बताया जा सकता है।

किसानको वनस्पतिशास्त्रका भी साधारण ज्ञान होना चाहिये। अिससे अुसे अैसा लगेगा मानो खेतीके पौधे अुसके साथ प्रेमगोष्ठी कर रहे हों, अुनमें अुसकी दिलचस्पी बढ जायगी और खेतीकी बहुतसी क्रियाओंके रहस्य भी अुसकी समझमें आने लगेंगे। अिस हेतुसे वनस्पतियोंकी अलग-अलग किस्में, अुनके अलग-अलग अंग — जड, डालियाँ, फूल, फल वगैराकी रचना, अुनके भीतर चढने-अुतरनेवाला रस, अुनका श्वास-तंत्र, पाचनतंत्र आदि बातोंका साधारण ज्ञान सेवकको अुत्साहके साथ किसानोंको देना चाहिये।

अिसी तरह बढअी, लुहार, चमार, कुम्हार वगैरा कारीगरोंको भी अुनके धंधेका शास्त्रीय ज्ञान देनेकी खास कोशिश करना जरूरी है।

अैसा ज्ञान फैलानेके लिअे विशेषज्ञोके भाषण, चित्र, पुस्तकें वगैरा तमाम साधनोका अुपयोग समय-समय पर किया जाय।

अुद्योगोके निश्चित सुधारोका ज्ञान देनेके लिअे कभी-कभी हफ्ते दो हफ्तेके वर्ग खोलनेसे भी सुन्दर परिणाम निकलेगा।

किसानो और कारीगरोंके साथ घुलमिल जानेके लिअे और अुनके धन्वोकी मुश्किलोको अच्छी तरह समझ सकनेके लिअे सेवक खुद अुनके कामोमें शरीक होकर अुन्हें सीखे। यह चीज अिस कार्यक्रमके लिअे बहुत ही अुपयोगी सिद्ध होगी।

पाँचवाँ ज्ञान — गणितका

गाँवके खेती वगैरा अलग-अलग धन्धोमें और अुन्हे करनेवाले लोगोंके जीवनमें घुसते ही सेवकको दिखाअी देगा कि लोगोको हिसाब-किताबका ज्ञान भी कुछ न होनेसे वे बहुत नुकसान अुठा रहे है। बहुतोको १०० तक गिनना भी नही आता। किसानोको यह भी मालूम नही होता कि अुनकी जमीन कितनी है। अुनकी तरफसे सब बातें अुनका साहूकार या जमीदार जानता है। कितनी फसल हुअी, कितनी बेची, किस भावसे बेची, कितनी आय हुअी, साहूकारके यहाँसे रुपये या अनाज लाया हो तो कितना और कब लाया, अिनमें से किसीका भी हिसाब अुसे रखना नही आता। अकसर अुसे अपनी दो पीढियोंके नाम भी याद नही होते और वह यह भी नही बता सकता कि अुसके बच्चोकी अुम्र कितनी हुअी है।

गणितके अैसे अज्ञानसे अुसकी बुद्धि जड और मोटी रहती है। अिसीलिअे वह खरीदने और बेचनेके काममें हमेशा धोखा खाता है।

सेवकको अपनी सारी कला काममें लेकर देहातियोमें हिसाब सीखनेका शौक पैदा करना चाहिये। गणित सिखानेका अर्थ यही नही कि सिर्फ पहाडे रटाने बैठ जाय। अुन्हें अेक अेक मिनटका हिसाब रखने और सोचे हुअे समयमें सोचा हुआ काम करनेवाले बनाना अिस दिशामें पहला पाठ मान जा सकता है।

दूसरा पाठ घरके आदमियोंकी अुम्र याद करके लिखना।

तीसरा पाठ यह याद रखना कि खेत और पशु वगैरा रनने हैं।

चौथा पाठ अिसकी जानकारी रखना कि घरमें रोज कितना नाज वगैरा काममें आता है।

पांचवां पाठ मजदूरीके आय-व्ययका हिसाब।

छठा पाठ है लोगोंको अिकट्ठा करके तराजू, गज, फुट वगैरा ना और तौलने, नापनेका खूब अभ्यास कराना।

अिस तरह सैकडों अेकसे अेक दिलचस्प पाठ दिये जा सकते हैं।

सेवकको अिस तरह लोगोंको हिसाबी या गणिती बना देनेका लक्ष्य रखना चाहिये।

छठा ज्ञान — ग्रामजीवनका

जिसे अपने घरके आमद-खर्चका भी हिसाब मालूम नहीं, अुसे गांवका हिसाब तो मालूम हो ही कहांसे? गांवमें कौनसे धंधे जीवित हैं, कौनसे खतम हो गये? और खतम हो गये तो क्यों? बाहरसे कौन-कौनसा मशीनोंका माल गांवमें आता है? गांवका धन कितना और किस ढंगसे बाहर निकल गया, कितना बाहरसे आया? किन धंधोंमें मशीनें काममें आने लगीं और मनुष्य बेकार हो गये, किस धंधेमें नीति है, किसमें अनीति है? — अिन सब बातोंका विचार गांवके लोग नहीं करते। व्यापार-धंधेकी अच्छाअी बुराअी अुन्हें समझानी चाहिये। यह सब ज्ञान दिया जाय तो ही वे चरखे और ग्रामोद्योग जैसे रचनात्मक कामोंको बुद्धिपूर्वक अपना सकेंगे।

सातवां ज्ञान — देश और दुनियाका

लोगोंको सिर्फ घरकी और गांवकी जानकारी हो यह काफी नहीं। अुन्हें देश और दुनियाको भी जानना चाहिये।

अुसमें आत्मविश्वास आता है और आगे बढनेकी अिच्छा पैदा होती है।

लम्बे समयके बाद अिसका अप्रत्यक्ष परिणाम यह भी जरूर होगा कि मनुष्यकी सूझ-बूझ बढनेसे, अुसके काम-धंधेमें ज्यादा होशियारी आयेगी, अुसमें अधिक अच्छे रोजगार-धंधे करनेकी कुशलता आयेगी, अुसे अपने हकोंका अधिक भान होगा और अुनके लिअे यदि लडना पडे, तो लडनेकी हिम्मत भी आयेगी।

अकसर कार्यकर्ता देहातियोंके पास तरह-तरहके सार्वजनिक कार्यक्रम ले जाते हैं। कभी सार्वजनिक चदेकी माँग करते हैं, तो कभी मतपत्रको पर चौकडीका निशान लगवाते हैं। कभी अुन्हे किसी लडाअीमे शरीक होनेको समझाते हैं और लडाअीके कार्यक्रमोंके बारेमें भाषण करते है। ग्रामवासी अुनके भाषण सुनकर सिर हिलाते है, मगर अुनमें शायद ही कोअी अुत्साह पैदा होता है। वे भले होते हैं और ज्यादा बहसमे पडनेकी अुनकी वृत्ति नही होती। अिसलिअे वे कभी-कभी कहनेके अनुसार काम कर देते हैं। मगर क्या हो रहा है, अिसकी समझ न होनेके कारण वे आन्दोलनोंके साथ अधिक समय तक नही टिक सकते।

यदि अुन्हें अूपर लिखे मुताबिक सामान्य ज्ञान मिला हो, तो अैसा नही हो सकता। लोगोकी समझनेकी शक्ति बढी हो, तो ही अुन्हें स्वराज्य, स्वदेशी, स्वतत्रता, सत्याग्रह, असहयोग, वगैरा हलचलोंमें सच्ची दिलचस्पी पैदा हो सकती है।

मतदाताओंकी शिक्षा

आज सभी सचेत हो गये है कि अब देशमें बालिग मताधिकार होगा। देशका हर बालिग स्त्री-पुरुष, देशका अपढ़ और दुनियासे अनजान बहुजन समाज भी यह हक भोगेगा। अिसलिअे अिन लोगोको जैसे तैसे जल्दी ही शिक्षित बनानेकी बातें सभी करने लगे हैं। मतदाताओंको शिक्षित बनाना अत्यत जरूरी कार्यक्रम हो गया

। मगर अुनकी यह शिक्षा सिर्फ आखिरी दिन अुनके पास जाकर अितना कहनेसे नही हो सकती कि 'हमें मत दो और फलाँको दो'। कांग्रेसको मत दो, अितना कहनेसे भी यह शिक्षा पूरी नही हो जाती। कांग्रेस कौन है? अुसने लोगोंके स्वराज्यके लिअे क्या किया है और अब क्या कर रही है?—यह सब जानकारी अुन्हे हो, तभी चुनावमें और मत देनेमे अुन्हें दिलचस्पी हो सकती है। मगर कांग्रेसने क्या किया, यह समझनेके लिअे भी हमारे ग्रामवासियोंके पास विशाल सामान्य ज्ञान होना बहुत जरूरी है। अिसलिअे बालिग मताधिकारका सदुपयोग हो अिसके लिअे भी सामान्य ज्ञानका प्रचार बहुत जरूरी है।

३ सामान्य ज्ञान देनेके अुपाय

अब हम अिस तरहका विशाल सामान्य ज्ञान गाँव-गाँव और झोपडी झोपडीमें पहुँचानेके अलग-अलग अुपायों पर विचार करें।

केवल ककहरा पढाने न बैठो

आजकल जब प्रौढ लोगोको शिक्षा देनेका विचार होता है, तब पाठशाला खोलकर अुन्हे पढानेकी ही कल्पना आती है। अिसके गर्भमें यह मान्यता रही है कि लोगोंको अेक बार पढना-लिखना सिखा दे कि वे अपने-आप अखबार, पत्रिकाअें और पुस्तकें वगैरा पढेंगे और अपना ज्ञान बढायेंगे। हम जबानी ही सारा ज्ञान देने लगे, तो काम कब पूरा हो? अितने ज्यादा ग्रामसेवक कहाँसे लायें? अिसके बजाय अुन्हें ही पढा दे, तो चार छः महीनेमें निपटारा हो जाय।

यह सच है कि मनुष्यको लिखा-पढा देना अुसे सभ्य दुनियामें प्रवेश करनेका परवाना देनेके बराबर है। लोगोंका यह तीसरा नेत्र खोल देना आवश्यक है। लेकिन मनुष्यको सिखलानेका काम चार छः महीनेमें निपट जानेवाला नहीं, यह अनुभव हमें अिस देशमें और जहाँ कहीं वेपटोंको पढानेकी कोशिश हुअी है, अुन सब देशोंमें भी हुआ है।

अिसके सिवा, छ महीनेमें जो कुछ अक्षर-शिक्षण हो सकता है, वह अितना थोडा होता है कि अुतनी जानकारीसे मनुष्यमें पुस्तकें या अखबार पढनेकी शायद ही दिलचस्पी पैदा होती है। अुसे वह मेहनत और परेशानीका काम मालूम होता है। अिसलिअे वह पढनेकी तरफ आकर्षित नही होता, बल्कि अुसे टालनेका ही प्रयत्न करता है। परिणामस्वरूप वह पढा हुआ भी भूल जाता है।

अक्षर-शिक्षणके वर्ग खोलते है, तो अुनमें लोगोकी पूरी हाजिरी कायम नही रहती। अिसका अेक कारण यह जरूर है कि पढानेवाला अपने कामका जानकार न होनेसे अुसमें रस पैदा नही कर सकता। और योग्य पढानेवाले भी ढूंढनेसे जल्दी नही मिलते। मगर असली और बडा कारण तो यह है कि लोगोंके हृदयमें जिज्ञासा पैदा नही हुअी है। वह सिर्फ लालटेन जलाकर मुहल्लेके बीच बैठ जानेसे, घण्टी बजा देनेसे, 'चलो चलो' की पुकार मचानेसे, या लोगोको अुनके आलस्यके लिअे अुलाहनेके वाग्बाण मारनेसे पैदा नही की जा सकती। अुसे पैदा करनेका अुपाय भी लोगोका सामान्य ज्ञान बढाना ही है।

यानी अक्षर-शिक्षणका रास्ता दीखता है छोटा, मगर अन्तमें लम्बा ही साबित होता है।

अक्षर-शिक्षणका रास्ता लम्बा हो या छोटा — अुस पर चलना तो है ही। मगर अुस पर चलें और लोग खुद पढने लगें, तब तक सामान्य ज्ञानका कार्यक्रम रोका नही जा सकता। सामान्य ज्ञानके सीधे रास्तो पर आजसे ही चलना शुरू कर देना चाहिये।

कथाकार बनो

कथा-वार्ता सामान्य ज्ञानका सबसे सुन्दर साधन है। पुराने जमानेमे हर मन्दिर और चौपालमें पुराणिक, कीर्तनकार और भाट-चारण कथा-वार्ताअें सुनाते थे। यह रिवाज अब टूट गया है। अुनकी कथाअें सुनकर

निरक्षर लोगोको भी काफी सामान्य ज्ञान और धर्मज्ञान हो जाता था।

ग्रामसेवकको अिस कलाका विकास करना पडेगा। कथा करनेका अर्थ केवल रूखासूखा पढकर सुना देना ही नही है। रामायण, महाभारत या कोअी पुराणकी कथा आधारके रूपमे ली जाय; प्रेमानन्द जैसे कवियोका कोअी आख्यान या आधुनिक कवियोमें से नरसिंहरावके बुद्धचरित्र जैसा काव्य ले लिया जाय। हमेशा काव्य ही लेना जरूरी नही। गाधीजीकी आत्मकथा जैसी गद्य पुस्तकें भी पसद की जा सकती है। मूल कथाओका रस भग किये बिना सेवकको अुनमे विविध प्रकारका सामान्य ज्ञान गूंथते रहना चाहिये। अिसमें अुपकथाअे और दृष्टान्त दिये जायें, छोटी-छोटी तत्त्वचर्चाअे भी की जायें और प्रचलित घटनाओका अुल्लेख करके अुनका मूल्यांकन भी करके बताया जाय।

अलबत्ता, सेवक पुराने लोगोकी तरह लड्डुओंके और रुपया अुगाहने तथा खुशामदके विष्कभक नही डालेगा। तरह-तरहके अधविश्वास भी नही घुसेडेगा, बल्कि अुनका खडन करेगा। पुराने लोगोकी तरह वह छुआछूत और जातिके अूंच-नीचके भेद वगैरा सामाजिक पापोको भी नही बढायगा, बल्कि अुनसे छूटनेकी प्रेरणा देगा।

भजन-मंडलियां बनाओ

भजन-मडली भी कथासे मिलता-जुलता ही लोकशिक्षाका साधन है। मगर पुरानी मडलियोकी तरह केवल आंखें बन्द करके जोर-जोरसे मजीरा बजानेमे ही अिनकी अितिश्री नही मान लेनी चाहिये।

सेवकको भजन और गीतोका चुनाव करना पडेगा। अुनमें समाज-सुधारके और महान राष्ट्रीय घटनाओंके शौर्य-गीत भी जोडने पड़ेंगे।

यह ध्यानमें रखकर कि अिनका हेतु लोगोका ज्ञान बढाना है, अैसी कोशिश करनी होगी कि वे गीत समझें और याद करें। अिसमें वार्तागीत बहुत ही अुपयोगी साबित होंगे।

शिविर खोलो

लोगोको शिक्षा देनेमें वहुत ही अुपयोगी सावित होनेवाला अेक साधन है प्रसगके मुताबिक वर्ग या शिविर चलाना। शिविर अलग-अलग हेतुओंके लिअे चलाये जा सकते है।

लोगोमें योजनापूर्वक और निश्चित समय-पत्रकके अनुसार जीवन बितानेकी आदत नही होती। अुन्हें अेक प्रकारका अव्यवस्थित जीवन वितानेकी आदत पडी होती है। सुन्दर, सुव्यवस्थित और समय-पत्रकके अनुसार जीवन वितानेका शौक पैदा करनेके लिअे जो शिविर खोले जाते है, वे वहुत ही लोकप्रिय होते है। लोगोंके जीवन पर अुनका गहरा असर होता दिखाअी देता है।

अैसे शिविर दो से चार सप्ताह तककी अवधिके चलाये जा सकते है।

लोगोंके काम-धर्धोमें छोटे-छोटे सुधार सिखानेकी गरजसे भी थोडी मियादके शिविर खोले जा सकते हैं। खेतीमें अैसी वहुतसी वातें हैं जिन्हें अपनानेका अुत्साह कहने भरसे या केवल पत्रिकाओसे लोगोमें पैदा नही किया जा सकता। मगर निश्चित सुधार सिखानेके लिअे शिविर खोले हो और अुनमें प्रत्यक्ष कामके सिवाय अुन सुधारोंके पीछे रहनेवाला विज्ञान भी अुन्हें धीरजसे समझाया जाय, तो लोग अुन्हें दिलचस्पीके साथ अपना लेते हैं। अिसमें शक नही कि लोगोमें विज्ञानकी समझ खूव वढा देनेकी जरूरत है। अिसे वढानेके लिअें अैसे कार्यक्रम सवसे ज्यादा अुपयोगी हो सकते है।

मिश्र खादका शास्त्र, जमीनका कटना रोकनेका शास्त्र, वीजके चुनावका शास्त्र — ये सव थोडे-थोडे समयके शिविरो द्वारा सिखाने जैसे है।

गृह-अुद्योगोमें तुनाअीसे पूनियाँ वनानेका नया तरीका, वाँससे अपने हाथो चरखा वनाना, छोटा व वडा अटेरन वगैरा औजार तैयार करना,

तकुअेका वल निकालना आदि बातें भी विशेष शिविर खोलकर रसपूर्वक सिखाअी जा सकती हैं।

देहाती स्त्रियोंको सिखाने लायक अैसी बहुतसी चीजें हैं, जो थोड़े दिनके शिविर खोलकर अुन्हें रसपूर्वक सिखाअी जा सकती हैं। भोजनके अमुक प्रकार, चूल्हा वगैरा बनानेकी कला, घरमें धुंआ होता हो तो अुसे मिटानेका शास्त्र, फटे हुअे कपड़े सीनेकी कला — ये सब छोटी-छोटी बातें सिखाकर अुनके जीवनको अधिक व्यवस्थित और सुखी बनाया जा सकता है और विज्ञानमें भी अुनका प्रवेश कराया जा सकता है।

ग्रामवासियोंके विशेष शिविर खोलकर अुन्हें बीमारोंकी सेवाका शास्त्र सिखानेकी भी खास जरूरत है। घाव धोकर मरहमपट्टी कैसे की जाय, बुखार वगैरा साधारण बीमारियोंमें रोगीकी देखभाल कैसे की जाय, लम्बे अरसेके बीमारोंको किस ढंगसे अुठाया-बिठाया जाय, अुन्हें पेशाब-पाखाना कैसे कराया जाय, किस प्रकार अुनके लायक भोजन तैयार किया जाय और किस तरह अुन्हें खिलाया जाय — आदि बातें लोगोंको सिखाअी जायें, तो अुनके जीवनकी अनावश्यक पीड़ा कितनी कम हो जाय? और अुनकी विज्ञानकी आंख कितनी आसानीसे खोली जा सकती है?

नाटच-प्रयोग

नाटच-प्रयोग और संवाद वगैराके साधनोंका भी लोकशिक्षणमें अवश्य अुपयोग करना चाहिये। मगर यहां रुपया कमानेके लिअे नाटक दिखलानेकी या अत्यन्त गन्दे और हलके नाटक दिखा कर लोगोंके जीवनको नीचे गिरानेकी बात नहीं है। ग्रामवासियोंकी सेवा करनेकी भावनावाले सेवामंडल, विद्यार्थीमंडल, शिक्षणसंस्थाअें और दूसरी जमातें अैतिहासिक प्रसंगोंके, समाज-सुधारके और आनेवाले युगका दर्शन करानेवाले नाटच-प्रयोग दिखानेके लिअे देहाती अिलाकोंमें दौरा करें, तो कितनी अुपयोगी सेवा हो?

ग्रामसेवक खुद रसिक होगा, तो वह देहातके लोगोको भी छोटे-छोटे नाटक खेलनेका शौक लगा देगा। अिस तरह जीवनका आनन्द लूटनेके साथ-साथ खेल ही खेलमें लोगोका अितिहास आदिका ज्ञान समृद्ध किया जा सकेगा।

प्रदर्शन

लोगोंके शिक्षणमें प्रदर्शन और सग्रहालय बडा अुपयोगी काम कर सकते हैं। जब-जब गाँवमें कोअी अुत्सव आये, तब सेवक अुसके सिलसिलेमे प्रदर्शनकी व्यवस्थाका नियम डाल सकता है।

गाधीजयन्ती पर खादीकी अलग-अलग क्रियाओ और औजारोका प्रदर्शन किया जा सकता है।

कृष्णजयन्ती पर गाँवके गोधनका प्रदर्शन किया जा सकता है।

प्रदेशकी रचनात्मक और शिक्षण-सस्थाअें स्थायी प्रदर्शन और सग्रहालय रखें, तो वे लोकशिक्षणके लिअे बहुत ही अुपयोगी हो सकते है। सेवक लोगोको अुन स्थानो पर ले जाय और अेक शिक्षककी तरह समझाकर सब कुछ दिखा लाये।

छोटे-छोटे चलते-फिरते प्रदर्शनोकी योजना भी बनाअी जा सकती है, जो गाँव-गाँव ले जाये जा सकते है और वहाँ दो-चार दिन रखकर लोगोको दिखाये जा सकते है।

प्रदर्शनो और सग्रहालयोके बारेमें अेक सूचना देनेकी खास जरूरत है। अुनके तैयार करनेमें जो मेहनत की जाती है, अुसके मुकाबले अुन्हें समझानेमें पूरी मेहनत नही की जाती। पढे-लिखे अभ्यस्त लोगोंके लिअे अिसकी जरूरत थोडी हो सकती है। मगर ग्रामवासी लोगोकी शिक्षाका साधन अिसे बनाना हो, तो खुब अुत्साहके साथ समझानेवाले स्वयसेवकोकी योजना करनी चाहिये।

प्रवास-पर्यटन

देहातियोंके बारेमे पूछताछ करने पर बहुत ही आश्चर्यजनक हाल मालूम होते है। जैसे कि अुनमें बहुतेरे लोग अैसे होते है, जिन्होंने २०-२५ मीलकी ही दूरी पर रहे समुद्रको नही देखा होता या जो अितनी ही दूरी पर स्थित पहाड पर नही चढ़े होते। तब अगर अुनकी नजर कुअेंके मेढककी तरह ही तग और अेकागी रह जाय, तो अुसमें आश्चर्य ही क्या? अैसे लोग अपने धधोमे और अपने सासारिक रीति-रिवाजोंमें सुधार करनेको तुरन्त तैयार न हो तो अिसमे कोअी ताज्जुब नही।

अिसलिअे लोगोकी छोटी-छोटी टोलियाँ बनाकर अुन्हे सफर कराना अुनकी शिक्षाका अेक बहुत ही अुपयोगी साधन है। पुराने जमानेमे लोग तीर्थयात्रा करते थे। वह रिवाज अब बहुत कम हो गया है। लोग कभी-कभी माताके दर्शन करने या नदी नहाने जाते है, परतु अिसमे सिर्फ दर्शन और नहानेके विचार ही अुनके दिमागमे भरे रहनेके कारण आसपासके देश या समाजकी तरफ वे नही देखते। सेवकके साथ किया हुआ सफर तालीमका बडा जरिया बन सकता है।

घूमते-फिरते सेवक

लोकशिक्षणके काममें अेक बहुत ही अुपयोगी साबित हो सकनेवाली सस्था है घूमते-फिरने सेवको या शिक्षकोकी। हमारे देशमे तीर्थयात्रा करनेवाले और गाँव-गाँव ठहरकर लोगोको देशवार्ताअें और ज्ञान-गोष्ठियाँ बाँटनेवाले साधुओंकी सस्या अब लुप्त हो गअी है। रेल-गाडीकी सुविधा हो जानेसे साधु तेजीसे सफर करनेवाले बन गये हैं और कुछ तो स्वाभिमान खोकर बिना टिकट गाडियोंमे बैठ जाते हैं और यात्रा करते हैं। जिससे स्वय अुन्होने तो यात्राका पुण्य गँवाया ही है, मगर देशकी ग्रामीण जनताने भी शिक्षणका अेक बडा ही कीमती साधन खो दिया है।

पूज्य गाधीजी अेक महान घूमते-फिरते लोकशिक्षक हो गये है। अुनके कदमो पर चलकर अनेक नेता भी वह काम कर चुके है और आज भी कर रहे है। अिस तरहके छोटे-छोटे स्थानीय लोकशिक्षक भी बहुत अुपयोगी काम कर सकते हैं। निश्चित अिलाकोमें दौरा करके, गाँव-गाँवमें रातको ठहरकर, स्थानीय प्रश्नोंके बारेमें लोगोको सलाह और मार्गदर्शन देकर और लोगोकी नैतिक भावनाओको सदा शुद्ध और अुच्च भूमि पर रखकर अैसे सेवक लोकशिक्षणका अमूल्य कार्य कर सकते है।

यान्त्रिक प्रचारक

आजकलके जमानेमें यान्त्रिक लोकशिक्षक भी काममें लाये जाने लगे है — जैसे ग्रामोफोन, जादूकी लालटेन, चलते-फिरते और बोलते चित्रोंके फिल्म, रेडियो वगैरा। कभी बेमनवाले किरायेके प्रचारक भी किसी-किसी कार्यक्रमके सिलसिलेमें रखे जाते है। अिन्हें भी अेक प्रकारके यत्र ही समझना चाहिये।

अैसे यत्र अुपयोगी है भी और नही भी है। तेज हथियार लकडी वगैराको गढ-गढाकर अुसकी अुपयोगी चीजें बनानेमें भी काम आते है और किसीके प्राण लेनेमें भी काम आते है। यत्र मनुष्यका भला करेगा या बुरा, अिसका आधार अन्तमें अुसका अुपयोग करनेवाले पर ही है। ये यान्त्रिक साधन आजकल ज्यादातर धनिकोंके ही हाथमें है। शिक्षको और सेवकोको अपने शिक्षणकार्यमें अुनका अुपयोग करनेकी फुरसत नही मिली और ये यत्र अितने सुलभ भी नही हुअे कि अिस तरह काममें आ सकें। सरकार और दूसरी सस्थाअें अुत्साहके साथ कही-कही गाँवोमें सिनेमा वगैरा भेजती है, मगर अुसमें विषय या अुसे पेश करनेका कोअी व्यवस्थित ढग नही होता।

यान्त्रिक साधनोका विषय यदि विवेकके साथ पसन्द किया गया हो और अुन साधनोको अुपस्थित करनेवाले कार्यकर्ता भावनाशील हो, तो

ही अुनसे लोकशिक्षणका सच्चा काम होनेकी आशा रखी जा सकती है। फिर भी अितना तो सही है कि सच्चा लोकशिक्षण जीवित मनुष्य ही कर सकता है। यन्त्र जीवित मनुष्यके भाषण और बाह्य आचरणकी नकल दिखा सकता है, मगर अुसके चरित्रकी सुगंध या अुसकी श्रद्धाका असर वह कहाँसे ला सकता है? अिसलिअे लोकशिक्षणके काममें भले ही यन्त्रोंका अुपयोग किया जाय, मगर सिर्फ अुन्हीं पर आधार रखने और जीवित लोकशिक्षकोंको क्षेत्रसे हटा देनेका जो रवैया आजकल पाया जाता है, वह बिलकुल पसन्द करने लायक नहीं है।

४ अक्षर-शिक्षण

अभी तक लोकशिक्षणके अैसे ही साधनोंका विचार किया गया है, जो अपढ देहातियोंको भी शिक्षाका अमृत आजका आज पिलानेकी शक्ति रखते हैं। अब लोकशिक्षाके अेक बड़े और प्रसिद्ध साधन अक्षर-शिक्षणका विचार करेंगे।

अिसमें कोअी शक नहीं कि अधिकसे अधिक पिछड़े हुअे अिलाकेमें रहनेवाले आदमीके लिअे भी अिस जमानेमें अक्षर-शिक्षण अनिवार्य है।

अक्षर-शिक्षणके दो लाभ हैं। अेक तो मनुष्य लिखने-पढने लग जाय तो वह अखबारों, मासिकपत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों द्वारा बहुत कुछ अपने आप ही सीखता रहता है। दूसरा लाभ है आजकलकी दुनियाका कामकाज चलाना। पत्र लिखना, आये हुअे पत्र पढ़ना, किसीको पहुँच लिख देना और लिखी हुअी पहुँच पढकर समझ लेना, लेन-देनके हिसाब टीपकर रखना, याद रखने जैसी बातोंको नोट रखना — अैसे बहुतसे काम मामूलीसे मामूली मजदूरोंको भी करने पड़ते हैं। अैसे वक्त अुन्हें लिखने पढनेवालेकी खोजमें दौड़ना पड़ता है। अकसर जिसके लिअे अुन्हें कामकी तुलनामें बहुत ही ज्यादा दाम देने पड़ते हैं और अितने पर भी वे अैसी

धोखेबाजीके शिकार हो जाते है कि कुछ कहा नही जा सकता। मतलब यह कि जब तक मनुष्यको लिखना-पढना नही आता, तब तक वह दुनियामें अधे या लूलेकी तरह ही काम करता है।

अब ये बावन मूल अक्षर और अुनमें से हरअेककी बारहखडी तथा अक और अुनके सारे पहाडे बचपनसे ही पढ़े हुअे लोगोंके लिअे खेल जैसे होते हैं। परतु बडी अुम्र तक अपढ रहनेवाले आदमीके लिअे ये सब अेक साथ सीखना और याद रखना अितना आसान नही है। परतु आसान हो या मुश्किल, अुसके बगैर दुनियामें अुसे अितनी ज्यादा असुविधा और कठिनाअी होती है कि कितनी भी मेहनत अुठाकर अितना सीख लेना ही अुसके लिअे लाभदाअी है।

लोगोंके मन अनुकूल बनाओ

लोगोको शुरूकी टेकरी पर चढानेके लिअे सिखानेवालेको कअी तरहकी कलाअें आजमानी पडेंगी।

अिनमें सबसे बडी कला है लोगोका प्रेम और परिचय सम्पादन करनेकी। रोज-रोज लोगोसे मिलना-जुलना, अुनके जीवनमें सहानुभूति बढाना, अुनकी छोटी-छोटी सेवाये करना, झाडू लगाकर अुनके आँगन साफ कर देना, बीमारीके समय अुनकी सेवा करना, अुनके बच्चोको खेल खिलाकर और कहानियाँ सुनाकर खुश करना — ये और अैसे अनेक सेवाके काम नियमित किये जायें, तो भले ग्रामवासी सेवकसे बहुत खुश हो जायेंगे और अुसके बताये हुअे बावन अक्षरके किले पर चढनेके लिअे जरूर तैयार हो जायेंगे।

प्रौढ़शिक्षाकी मुहिम शुरू करो

अिस काममें देखा गया है कि जैसे पढ़नेवालेकी अुकताहट मिटाना मुश्किल है, वैसे ही पढानेवालेकी कमर कसवाना भी मुश्किल होता है। अपढको पढानेका पढे हुओमें खास तौर पर अुत्साह होना चाहिये। सभी पढे-लिखे लोग आगे आकर अपना फर्ज अदा करने लगें, तो

निरक्षरता देखते-देखते खतम हो जाय। मगर पढे हुअे लोग अडियल बैलकी तरह खडे ही नही होते। अब तो सरकार पढानेवालेको रुपया देती है, फिर भी पढे हुओको जोश नही आता। रुपयोके प्रमाणमे काम नही होता। असलमें रुपयेसे सभी काम होते भी नही। और यह काम तो अकेले रुपयेसे हो ही नही सकता।

निरक्षरताके खिलाफ मुहिम शुरु करनेकी जरूरत है। पूज्य गाधीजीकी छुआछूत सबधी, विदेशी कपडे सबधी और नमक-कर सबधी चढाअियोमे हम भारतवासी परिचित है। असे ही जोरशोर और अुत्साहके साथ देशके बडे-बडे नेताओको निरक्षरता पर चढाअी कर देनी चाहिये। सारे देशमे सबको अेक साथ चढाअी करनी चाहिये।

अपढ मनुष्य मिला कि अुसे दो अक्षर पढाये बिना आगे बढे ही नही। सार्वजनिक सभाओमें भी हजारोकी सख्यामे अिकट्ठे हुअे लोगोको अक्षरज्ञानके सामूहिक पाठ दिये जायें। अिस तरह बडेसे बडे नेता अिस चीजके पीछे पागल बन जायें, तो पढे-बेपढे दोनो पर अिसका रग चढे बिना न रहे। सिर्फ पढानेवालेको अमुक वेतन देनेसे या 'पढो पढो' का अुपदेश करनेसे आलसी, अूबे हुअे और निराश लोगो पर अिसका रग नही चढेगा।

हमारे देशमें असी चढाअी करनेका वक्त अब आ गया है। यह कार्यक्रम आज किसी भी राष्ट्रीय कार्यक्रमके जितना ही महत्त्वका और जरूरी हो गया है। यहां वहां किये जानेवाले प्रयत्नोंसे वह पूरा नही हो सकेगा। लोकशिक्षाकी अेकत्रित रूपमें अखिल भारतीय मुहिम शुरू करनेकी जरूरत है।

पढे-लिखे तमाम वर्गोंको अिस महान चढाअीमे शरीक होनेकी प्रेरणा देनी चाहिये। अब तक सिर्फ प्राथमिक पाठशालाओंके शिक्षक ही अिस काममें लगे हुअे पाये जाते है। अुनका धन्धा ही शिक्षकका होनेके कारण अुनका व्यवस्थित वर्ग चलाना स्वाभाविक है। फिर

भी सिर्फ अुन्ही पर छोड देनेसे हम यह बडा सवाल हल नही कर सकेंगे और अुसे चढ़ाअीके पैमाने पर नही रख सकेंगे।

आज तो जो जहाँ हो वही अुसे अिस निरक्षरताकी चढाअीमें भाग लेने लग जाना चाहिये। पढे-लिखे और बेपढे लोगोके मिलते ही यह कार्यक्रम शुरू हो जाना चाहिये।

विद्यार्थी साक्षरताके सेवक बनें

विद्यालयमें पढनेवाले विद्यार्थी चाहे, तो अिस काममें कितना अधिक अुत्साह पैदा कर सकते है? वे अलग-अलग ढगसे काम कर सकते है। घर रहनेवाले अपने घरो और मुहल्लोमे पढाने लगें, छात्रालयोमें रहनेवाले छात्रालयके पास अपढ वर्गोकि मुहल्ले ढूंढ लें और रोज वहाँ पढ़ाने पहुँच जायँ।

हर शिक्षण-सस्था और हर छात्रालयको, भले वह छोटे कुमारोंके लिअे हो या बडे जवानोंके लिअे, साहित्य पढानेके लिअे हो या अुद्योग-धधा सिखानेके लिअे, पडोसका कोअी मुहल्ला या गाँव पसन्द करके वहाँ अपना ग्रामसेवाका केन्द्र कायम करना ही चाहिये। ग्रामसेवाके कार्यक्रमोमें बेपढोको पढानेका भी अेक कार्यक्रम जरूर हो।

सस्था बडी हो तो चार-पाँच मुहल्लो या गाँवोमें भी यह काम किया जा सकता है।

अैसे ग्रामसेवाके कामको अपने पाठ्यक्रमका अग बना लेनेसे अुन गाँवोका तो कुछ न कुछ भला होगा ही, साथ ही विद्यार्थियोको भी कीमती शिक्षण और अनुभव मिल सकेगा। अिस शिक्षाके बिना आज-कलका विद्यार्थीवर्ग अधूरा रह जाता है। अिसका खराब असर अुनके जीवनमें प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। अुन्हें ग्रामवासियो और गरीबोकी स्थितिका भान नही होता, अुनके साथ अुनकी समझमें आनेवाली भाषामें बात करना नही आता और ग्रामवासियोंके बीच रहने तथा अुनके लिअे जीवन बितानेकी अिच्छा अुनमें पैदा नही हो सकती।

संस्थाओंको अपने पाठ्यक्रममें ग्रामसेवाका विषय रखकर विद्यार्थियोंको अुसकी तालीम देनी चाहिये। बेपढ़ोंको पढ़ानेके विषयमें भी अच्छी तैयारी करानेकी जरूरत है।

बेपढ़ोंको पढ़ानेके काममें नौ-दस बरसके छोटे बच्चोंको भी शामिल किया जा सकता है। वे अपने घरोंमें माँ-बाप या सगे-सबंधियोंको क्यों नहीं पढ़ा सकते? अकसर अैसा काम छोटे बच्चे ज्यादा दिलचस्पी और धीरजके साथ कर सकते हैं। शिक्षक अुन्हें समय-समय पर सूचनाअें देते रहें, अुनकी और अपढ़ सबंधियोंकी शर्म मिटायें और रोजमर्रा होनेवाले काम पर निगाह रखें, तो अिसमें जरा भी शंका नहीं कि यह कार्यक्रम सफल होगा।

मजदूर-संस्थाअें अपना फर्ज अदा करें

जैसे विद्यालयों और विद्यार्थियोंको अपना फर्ज अदा करना है, वैसे ही जहाँ-जहाँ अपढ़ लोगोंके काम चल रहे हों, अुन सब अुद्योग-संस्थाओंको भी अुन्हें अक्षरज्ञान देनेका आन्दोलन हाथमें लेना चाहिये। छोटे-बड़े कारखानों, खानगी और सरकारी दफ्तरों और खेतीके मजदूरों वगैरा सबके काम जहाँ होते हैं, वहीं अुन्हें पढ़ानेकी योजना शुरू करनी चाहिये।

अुद्योग चलानेवाले मालिक समझदार हों, तो यह भार अुन्हींको अुठाना चाहिये। वे दीर्घदृष्टिसे देखें, तो अिसमें अुन्हींका लाभ है। अपढ़ और कमसमझ मजदूर हमेशा कम काम करते हैं, अुनके काम पर देखरेख ज्यादा रखनी पड़ती है और अुनका काम भी हलके दर्जेका होता है। अिन्हीं आदमियोंको यदि शिक्षा — खास तौर पर अुद्योग संबंधी शिक्षा दी जाय, तो वे जड़ मजदूर न रह कर कुशल कारीगर बन जायें और कारखानेको बहुत लाभ पहुँचायें।

मगर दुर्भाग्यसे बहुत थोड़े मालिकोंकी अैसी दीर्घदृष्टि होती है। अुन्हें हमेशा यह डर रहता है कि अगर मजदूर होशियार और अक्लमन्द

हो जायेंगे, तो वे ज्यादा वेतन मांगेंगे और अपमान व अन्याय सहन नही करेंगे। अिसलिअे अन्तमें यह काम मजदूरोमें काम करनवाले सघो और सेवकोका ही है।

अपढ जनताका बडा वर्ग स्त्रियोका होता है। अुनमे भी काम करना पडेगा। स्त्रियाँ खुद अिस कामका नेतृत्व करेंगी, तो सबको अुनकी मददमें खडे रहना ही पडेगा।

५ अक्षर-शिक्षकके लिअे सूचनाअें

अक्षर-शिक्षणके लिअे वायुमण्डल तैयार हो, अिसके लिअे भी अिस प्रकरणमें पहले बताये हुअे काम खास तौरसे करने चाहिये। केवल वर्ग खोलकर बैठ जाने और शोरगुल मचानेसे, अुलाहनेके तीखे वचन कहनेसे अनपढ स्त्री-पुरुषोको आकर्षित नही किया जा सकेगा।

फिर भी यह सही है कि दूसरे काफी आकर्षण जुटानेके बाद भी अक्षर-शिक्षण देनेकी कुशलता प्राप्त करनी होगी। अुसके अभावमें शिक्षक सीखनेवाले लोगोको हैरान कर डालते है और थका देते है। अिससे वचनके लिअे नीचे कुछ सूचनाअें देता हूँ। मगर यह ध्यानमें रखा जाय कि ये सूचनाअें प्रौढोको ही सिखानेके बारेमें है, बच्चोको सिखानेके बारेमें नही।

१ शुरुआत अक्षरोसे नही, बल्कि सरल शब्दोसे की जाय। खास तौर पर सीखनेवालेका अपना नाम, अुसके पासके रिश्तेदारोंके नाम, और अुसके गाँवका नाम शुरूमें मोटे अक्षरोमें लिखकर बताये जायँ और अुनकी पहचान कराअी जाय।

२ पढनेके साथ अुन अक्षरो पर अुँगली फिरवाअी जाय, जिससे लोगोको अक्षरोकी शकल जल्दी याद हो जावेगी।

३ अिसका अर्थ यह हुआ कि पढनेके साथ ही साथ लिखना भी जारी किया जाय। दोनो चीजें अेक दूसरेकी सहायक है।

शुरूमें जब तक हाथ न बैठे, तब तक पट्टी या कागज पर न लिखाया जाय, अक्षरों पर अुंगली फिरवाअी जाय, हवामें खाली हाथसे अक्षर लिखे जायें और जमीन पर डंडीसे लिखा जाय। ये लिखनेके शुरूके पाठ हैं।

४ शुरूमें बिना काना मात्राके शब्द ढूंढनेकी झंझटमें न पड़ा जाय। अैसा करनेसे रोज काममें न आनेवाले क्लिष्ट शब्दोंमें फँसना पड़ता है।

परिचित मनुष्यों, पशुपक्षियों, घरके काममें आनेवाली चीजों व खेती वगैरा अुद्योगोंसे सबंध रखनेवाली वस्तुओंके परिचित शब्दोंका अभ्यास कराया जाय।

५ अैसे शब्द चुने जायें जिनमें अेक ही अक्षर या अक्षर-समूह बार-बार आयें। मामूली शिक्षकको अैसे शब्द अिकट्ठे करनेकी तरकीब न आती हो, तो 'लोकपोथी' जैसी पाठ्यपुस्तकोंका अुपयोग किया जाय। अुसके शुरूके पाठोंमें अैसे कितने ही शब्द अिकट्ठे किये हुअे पाये जायेंगे।

६ शिक्षकके मनमें यह बात रहती है कि अैसी कोअी युक्ति बताअी जाय, जिससे पढ़नेवालेको अक्षर याद रह जायें।

आम तौर पर ककड़ीका 'क' और खरबूजेका 'ख' रटानेका रिवाज होता है। जिससे ककड़ी परसे 'क' की आवाज याद आती है। मगर जिसे याद रखनेकी खास जरूरत है वह 'क' की आवाज नहीं, परंतु अुसका आकार है। अुसके याद आनेमें अिन युक्तियोंसे कोअी मदद नहीं मिलती। अिसलिअे अिस तरहकी कोअी युक्तियां काममें लेनी हों, तो अैसे नाम ढूंढ निकालने चाहिये जिनकी शकल परसे अक्षरोंकी शकल याद आ जाये और साथ ही हमारा चाहा हुआ अक्षर अुस शब्दका पहला अक्षर भी हो। बुद्धिकी काफी कसरत करने पर भी भाषामें से अैसे शब्द खोज निकालना आसान नहीं।

'कडी' अैसा शब्द है कि अुससे 'क' आवाजकी भी याद आती है और साथ ही 'क' की कडी जैसी शकल भी याद आ जाती है। मगर अक्षर-शिक्षकको अिस झझटमें नही पडना चाहिये।

सीखनेवालोको स्मरणशक्तिका थोडा व्यायाम करने दिया जाय और आकार जल्दी दिमागमें बैठे अिसके लिअे अक्षरो पर अुंगली फिरवाअी जाय। यही अुत्तम रास्ता है, और यही अन्तमें छोटेसे छोटा रास्ता साबित होता है।

७ नये सीखनेवालोको खूब मोटे अक्षर पढने और लिखनेकी सुविधा देनी चाहिये। अिसलिअे 'लोकपोथी' जैसी पाठ्यपुस्तकें छापनेमें मोटे टाअिप काममें लेना जरूरी है। मगर मोटे टाअिपकी भी मर्यादा है। पुस्तक बहुत बडी हो जाय और कीमत बढ जाय, अिस हद तक नही जा सकते। अिसलिअे यह आशा रखी जाती है कि शिक्षक अैसी पोथीके पाठोको बहुत बडे अक्षरोमें तख्ते पर लिख दे। अिससे भी अच्छा यह होगा कि पढनेवालोंके घरोकी दीवारें अच्छी तरह लीपकर अुन पर रगसे शब्द और वाक्य चित्रित कर दिये जायँ।

अिसी तरह लोगोको लकडीकी डडीसे धूलमें मोटे अक्षर लिखने और कूंचीसे दीवार पर लिखनेको प्रेरित किया जाय।

अिससे लोगोको चलते-फिरते पढनेकी सामग्री मिलेगी और मुहल्लेमें लिखने-पढनेका वातावरण भी फैलेगा।

८ वाचन जैसे-जैसे आगे बढे, वैसे वैसे अुसको क्रियाके साथ जोडनेकी कलाका विकास करना चाहिये। यानी जिसे चिट्ठी-वाचन कहते हैं, वह रीति ग्रहण की जाय। तख्ते पर कोअी हुक्म लिखा जाय, जैसे खडे होओ, ताली बजाओ, हाथ अूंचे करो वगैरा। पढनेवाले अुन्हें मन ही मन पढें और समझमें आते ही अुनमें बताअी गअी क्रिया करें।

अिस ढगका वाचन शुरू करनेके लिअे लम्बे वाक्य पढना आने तक अिन्तजार करनेकी जरूरत नही। मात्राओंका भी ज्ञान न हुआ हो, तभीसे अिस तरहका वाचन हो सकता है।

यह समझकर काम शुरू किया जाय कि अेक अक्षर परसे सारा शब्द समझ लेना है। जैसे कि 'ग' से गोविन्द, 'म' से माधव और 'व' से वसत वगैरा। जिसका अक्षर आये वह ताली बजा दे या खडा हो जाय, अैसी सूचना देनेके बाद प्रौढोंके नामोंके अक्षर लिखकर बताये जायें। अिसी तरह 'प' यानी पैर, 'ह' यानी हाथ, 'क' यानी कान, 'म' यानी माथा वगैरा समझाकर अेक-अेक अक्षर लिखा जाय और पढनेवालोंसे वे वे अग दिखानेको कहा जाय।

९ बादमें कुछ अधिक पढना आ जाने पर आपसमें छोटी-छोटी चिट्ठियां लिखने और जवाब देनेके लिअे कहा जाय। शिक्षक कुछ नमूने देकर शुरुआत कर देगा, तो प्रौढ शीघ्र ही यह पद्धति समझ लेंगे और लिखने व जवाब देनेमें थकेंगे ही नही।

१० वाचन सीखनेके शुरूके दिनोंमें कुछ-कुछ याद हो अैसी वस्तुअें पढनेको मिलें, तो पढनेवालोंका अुत्साह खूब बढता है। अेक-अेक अक्षर याद करके और परस्पर अुनका मेल बैठाकर पढना पडे, तो यह स्पष्ट है कि अिसमें नौसिखियाको थकावट मालूम होगी। अिसलिअे यह अच्छा होगा कि शुरूमें परिचित गीतोंकी पक्तियां या परिचित पाठोंके शब्द या वाक्य पढनेको दिये जायें। सीखनेवाला अेक-आध अक्षर पढते ही सारा शब्द समझ जायगा, अेक शब्द परसे वाक्य समझ जायगा और अिस तरह पढनेका संतोष होनेके कारण अुनकी पढनेकी अुमग कायम रहेगी।

अिसके लिअे शिक्षक 'लोकपोथी' जैसी पाठ्यपुस्तक बार-बार पढ कर सुनाये। अैसा करनेसे पाठोंके विषय और शब्द तथा वाक्य सीखनेवालेके लिअे अज्ञात नही रहेंगे।

११ प्रौढोंके वाचन-लेखनके लिअे अेक वात ध्यानमें रखनेकी खास जरूरत है। अिसमे आनेवाले विषय शुरूसे ही अैसे पसन्द किये जायँ, जिनका पढनेवालेके जीवनसे सीधा सबध हो और जिनमें अुसे स्वाभाविक दिलचस्पी हो। अिस दृष्टिसे वालपोथियोसे लोकपोथियाँ विलकुल भिन्न पड जायँगी।

खुदका नाम लिखना-पढना आते ही पढनेवालेसे तुरन्त अपने हस्ताक्षर करनेका खेल कराया जाय। जिन्दगी भर अँगूठे लगा लगा कर वदनाम हुअे मनुष्योको अिस खेलमें अकल्पनीय आनन्द आयेगा।

गाँवमें होनेवाली ताजी घटनाओका अुपयोग भी खूब छूटसे किया जाय। पढनेवालेके धधेकी वातोका भी खूब अुपयोग किया जाय।

छपी हुअी किताबोकी अेक बडी कमी यह है कि अैसी ताजी-ताजी चीजोका रस पैदा करना अुनके लिअे सभव नही है। यह तो सजीव शिक्षक ही कर सकता है।

१२ गाँवके लोगोके सबधमें अैसा अनुभव आया है कि अुन्हें अुच्च जीवनकी तरफ ले जानेवाली वातें सुननेमें खास रुचि होती है। अिसलिअे अैसे विषयोको भी वाचन-लेखनमें विशेष स्थान देना चाहिये। 'लोकपोथी' की रचनामें यह देखा जायगा कि अुसके हरअेक पाठमें अिस तरह लोगोको सुनने और चर्चा करनेमें प्रिय लगनेवाली कअी वातें दी जाती है।

१३ पढने-लिखनेमें प्रौढोको अक्षरोसे अकोमें जरा भी कम रस नही होता। अकोकी अुलझनोमें वे कअी तरहके कष्ट भोग चुके होते है, अिस वजहसे अुनके वारेमें अुन्हें सवसे ज्यादा दिलचस्पी होती है। अिसलिअे लिखने-पढनेमें अकोका भी शुरूसे ही अुपयोग शुरू कर दिया जाय।

कृपया अिसका अर्थ यह न किया जाय कि अुन्हें अक रटाना शुरू कर दिया जाय। छोटी-छोटी सख्या पढने और लिखनेका अभ्यास कराया जाय।

अिसीके साथ कुछ क्रियाअें जोड दी जायें, तो रस और भी बढ जायगा। लोगोंके पास तराजू रख दें और सख्या दे दें। वे सख्या पढे और अुतना तोले। फिर यह क्रिया अुलट दीजिये। पहले जितना जी में आये तोले और फिर अुसका आँकडा लिख लें। अिसी प्रकार भरने और नापनेके साथ भी अकोंका पढना-लिखना जोडा जा सकता है।

आँकडोंके स्थान परसे रुपये-आने-पाअी, मन-सेर-छटाक वगैरा पढने या अुनके निशान पहचाननेमें ज्यादा समय नही लगेगा और दिलचस्पी बनी रहेगी।

अिसी तरह बायें हाथकी तरफ आमद और दाहिने हाथकी तरफ खर्चकी रकमें लिखनेका खेल भी शुरूमे ही कराना चाहिये।

अकशिक्षणमें घडीका अुपयोग भी करना ही चाहिये। घण्टे और मिनट समझनेमें प्रौढोको बहुत देर नही लगेगी और अिस शिक्षणमे अुन्हे खेल खेलने जैसा मजा आयेगा। घडीका शिक्षण मिलनेसे समयकी कीमत समझनेकी बारीकी भी अुनके जीवनमें आने लगेगी।

अिन सब सूचनाओंको ध्यानमे रखकर और अपने पूरे प्रेम व कलाका अुपयोग करके पढे हुअे लोग अपढ भाअी-बहनोंको शिक्षण देंगे, तो अुनका बडा अुपकार होगा और देशको भी बडा लाभ होगा।

६ अखबारोंकी दुनिया

पढना-लिखना आने पर अेक नयी ही दुनियामे अुनका प्रवेश हो जाता है।

अिस नयी दुनियामे अखबार अुन्हे बडी चमत्कारिक सृष्टि दिखाअी देंगे। गाँवोंका भोला और भला आदमी अखबारोंके सामने आकर खडा होता है, तो अुस वक्त हमें बडी चिन्ता पैदा होती है। अब तक अखबार अुसके लिअे हल्दी-मिर्चकी पुडिया बनानेकी चीज थे। अब तो वह अुनमें छपे अक्षर पढता है। अुनमें बीच-बीचमें बडे-बडे अक्षर छपे होते है। सीखनेवाली आँख कुदरती तौर पर अुन अक्षरोंकी

तरफ पहले जाती है। भले देहातीके लिअे यह अेक बडी जोखमकी जगह है। क्योंकि अखबारोंके ढेरो अक्षरोमें अगर अधिकसे अधिक निकम्मा और ज्यादासे ज्यादा गन्दा कोअी मसाला होता है, तो वह ज्यादातर सबसे पहले दिखनेवाले बडे अक्षरोमें ही छपा हुआ रहता है। यह है तरह तरहके विज्ञापन — सफेद झूठो, धोखेबाजियो, गन्दे विचारो और शराब, तम्बाकू आदिकी बडाअियोसे भरे हुअे विज्ञापन! कम पढे लोगोकी आँखें ज्यादा पढे हुओकी तरह छपा हुआ पढनेकी विद्या सीखी हुअी नही होती। अुन्हें तो लगता है कि जो कुछ छपा हुआ है, वह सब पवित्र, गभीर और वेदवाक्य है। विज्ञापनोको सच्चे समझकर भोले ग्रामवासी हमेशा दवाअियाँ वगैरा मँगानेके जालमें फँसते पाये जाते हैं। अैसे पाठक मिलते है, यह जानकर ही विज्ञापनवाले अुसमें रुपया खर्च करते है।

अखबारोकी दुनियासे यह विज्ञापनोका कलक निकल जाय तो कितना अच्छा हो?

गाधीजीने जिस तरह सारी दुनियाके रिवाजके खिलाफ बगावत करके अनेक काम किये, वैसे ही अुन्होने अपने अखबारोमें से विज्ञापनोका नामोनिशान मिटा देनेका काम भी किया था। परतु आज अखबारवालोको यह समझानेकी हिम्मत किसमें है?

विज्ञापनोके अलावा भी अखबारोमें अच्छी सामग्रीके बजाय हलकी और निक्कमी सामग्री ही ज्यादा होती है।

अपढ मनुष्यको पढना-लिखना सिखाना सचमुच अुसे अेक माया-नगरीमें धकेल देनेके बराबर ही हो गया है। यह अुसे ज्ञानका जहरीला फल चखाने जैसी बात है। वह अिस स्थितिमें पडनेवाला है, अिसका विचार पहलेसे करके सेवकको सावधान हो जाना चाहिये। यानी अुसे अिस बातका विवेक करना सिखाना चाहिये कि अखबारोमें वह क्या पढे और जो कुछ पढे अुसमें से किस पर विश्वास करे। अैसे लोग पढने लगें अिससे पहले अुन्हें अैसी शिक्षा दी जाय कि वे अपने

जीवनके, वन्धेके, गाँवके और देशके अनेक प्रश्नोंको जाने, समझे, अुन पर विचार करें और सार-असारको पहचान सकें।

सेवकको नौसिखिये ग्रामवासियोंके मन पर यह बात भी जमा देनी चाहिये कि यद्यपि पढे हुओंकी सारी दुनिया अखबारोंमें छाओी हुओी दिखाओी देती है, फिर भी सचमुच पढने लायक साहित्य तो कुछ और ही है। सेवकको चाहिये कि वह विवेकसे चुनी हुओी सादी, शुद्ध और अुत्साहप्रद विचारोंसे भरी छोटी-छोटी पुस्तकें अुनके सामने रखता रहे और अुनमें शिष्ट वाचनका रस पैदा करे।

८

सेवादल

अेक बार सेवादलके अधिकारी जमा हुअे थे, तब मैंने अुन्हें समझाया था कि सेवादलको सच्चा सेवादल कैसे बनाया जा सकता है। मैं यह मानता हूँ कि जिस अर्थमें सेवादलके कार्यक्रमको ग्राम-सेवाका अेक महत्त्वका कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

* * *

मालूम होता है सेवादलका नाम सोच-समझकर रखा गया है। यह नाम अैसा मानकर रखा है कि वह सिर्फ सिपाहियोंका दल न हो कर सेवकोंका दल होगा। मैं अिसे कांग्रेसके या गांधीजीके सिद्धांतोंके असरका परिणाम समझता हूँ।

सेवादलमें पूरे समयके केन्द्र न चलें और सेवक थोड़े समय काम करनेवाले हों तो भी हर्ज नहीं। समय मिलने पर अनेक तरहके राष्ट्रीय काम किये जा सकते हैं। सुनते हैं कि हिटलरने सेवकों और विद्यार्थियोंसे बहुत काम कराये थे। यह जरूरी है कि सेवादल जिस देशमें राष्ट्रीय कामोंकी परम्परा डाल दे।

शुद्ध सिद्धान्तनिष्ठ जीवन

मवसे पहले मैं जिस चीज पर जोर देता हूँ, वह यह है कि सेवादलके सैनिक जहाँ जायँ, वहाँ अुन्हें शुद्ध और सिद्धान्तनिष्ठ जीवनका अुदाहरण पेश करना चाहिये। किन सिद्धान्तो पर हमें जीवन बिताना चाहिये, अिसका अुन्हें अपने जीवन द्वारा प्रचार करना चाहिये। मेवादलके वाहरी लक्षण — जैमे वर्दी पहनना — ही काफी नही हैं। सेवादलके आदमीको अच्छी वर्दीमें होना चाहिये, चुस्त होना चाहिये और औरोके साथ चलते आना चाहिये। यह सव वडा अुपयोगी है। अिससे अपने और दूसरेके जीवन पर असर होता है। अितनी जानकारी साधारण सिपाहियोंके लिअे काफी होगी, मगर सेवादलके सिपाहीके लिअे यह काफी नही है। अर्थात् सेवादलके सैनिकको तो अनेक तरहकी सेवाअें करनी हैं, और अुनमें सवसे पहली सेवा तो यह है कि देशमें जीवनकी सच्ची कल्पना जो विकृत हो गअी है, अुसे वह सुधारे और जहाँ जाय वही अपने सुन्दर सिद्धान्तनिष्ठ जीवनका अुदाहरण जनताके सामने रखे।

अिस प्रकार सवसे पहले हममे सादगी होनी चाहिये। गाँवोंके लोगोकी सेवा करने जायँ तव हमारा वरताव अैसा हो कि वे हमसे डरे नही, दूसरी वात यह कि हमारे नखरे देखकर वे अुनकी नकल न करने लगें। तीसरे, हममें व्यमन न होना चाहिये। चौथे, हमे अपने काम हाथसे करने चाहियें। अितना ही नही, हमें औरोकी सेवा करनेकी तत्परता भी रखनी चाहिये। वार-वार मोटरगाडीमें नही वैठना चाहिये। अिस अतिम वातको भी मैं सेवादलके लिअे वडा महत्त्व देता हूँ।

यह तो निश्चित है कि सेवादलका मैनिक छुआछूतको नही मानेगा, वल्कि वह पाखाना-सफाअीका शौक भी अपनेमे वढायेगा। सेवादलका आदमी कही भी जाय, वह गाँवके साधारण आदमियोकी तरह खेतो और गाँवकी सीमाओको विगाडता न फिरेगा।

अिसी तरह अुसे अपना भोजन खुद बनानेका आग्रह रखना चाहिये। खानगियाँ बटानेसे अिस काममें घंटों बरबाद न हों, अिसका ध्यान रखना चाहिये। भोजनमें अुसे सादगी और शास्त्रीयता रखनी चाहिये। अपना सामान अुठवानेके लिअे अुसे बार-बार मजदूर न करना चाहिये। अुसे फैशनमें न बहना चाहिये। सेवादलके सैनिकको नियमित रूपसे समयका पालन करना चाहिये। सेवादलका आदमी नियमित रूपसे कातनेवाला और खादीधारी होना चाहिये। सेवादल कांग्रेसका या गांधीवादी विचारवालोंका मंडल हो, तब तो अिसमें जरा भी ढिलाअी नहीं होनी चाहिये। अुसे ग्रामोद्योगोंको भी प्रोत्साहन देना चाहिये। अेक वाक्यमें कहें तो सेवादलके सैनिकमें सत्य और अहिंसाका आग्रह होना चाहिये। अैसा होगा तभी अुसका जीवन अिस प्रकारका रह सकेगा।

अगर सेवादलका सैनिक किसी धंधेमें लगा हुआ हो, तो अुसका धंधा राष्ट्रविरोधी न होना चाहिये, क्योंकि आसानीसे कमानेके सब धंधे आम तौर पर अराष्ट्रीय ही होते हैं। अगर विद्यार्थी हो तो वह अराष्ट्रीय शिक्षा लेनेवाला न होना चाहिये। जीवन-विरोधी शिक्षाको भी अेक तरहसे खराब धंधा ही मानना चाहिये।

सेवादलके लायक काम

अिस प्रकारके सेवादलके सैनिकको समय निकालकर अकेले या समूहमें देशसेवाके कामोंमें शरीक होना चाहिये। हमारे देशके लिअे अुपयोगी, रचनात्मक और थोड़े समयमें हो सकनेवाले काम ढूंढ निकालना मुश्किल नहीं है। अैसे थोड़े-बहुत काम मैं यहां गिनाता हूं:

१ चौमासेमें गड्ढे पानीसे भर जाते हैं। गांवके लोग बिना विचारे मकान वगैरा बनानेके कामके लिअे मैदानसे मिट्टी खोद ले जाते

हे और खड्डे बना देते हैं। सडकें बनानेवाले अेक तरफ सडकें बनाते है और दूसरी तरफ खड्डे कर देते हैं। अिन खड्डोको भरना बहुत ही अुपयोगी काम है। अिसमे मच्छर नही होते और दुर्घटनाओका खतरा मिटता है।

२ हर चौमासेके अन्तमे गाँवोमें बैलगाडियोके रास्ते खराब हो जाते है। फावडा-कुदाली लेकर अुनकी मरम्मत कर डालनी चाहिये।

३ छोटी सडकें बनानेका काम भी किया जा सकता है। यह काम करना हो तो पहले पैमाअिश (सर्वे) की जाय, निरीक्षण किया जाय, अिंजीनियरी विद्याकी मदद ली जाय और साधन जुटाकर बादमें बनानेका काम शुरू किया जाय।

४ समय काफी हो तो कुअें भी खोदे जा सकते हैं।

५ साधारण किसानोको अुनके अग मेहनतके कामोमे मदद दी जा सकती है। अिस तरह खुदके परिश्रमका दान देनेकी परपरा डालनेकी जरूरत है। किसानोको खेत खोदने और क्यारी बनाने वगैरामें मदद दी जा सकती है।

६ तालाब खोदे जायें।

७ वृक्ष लगाये जायें।

अिन कामोंके लिअे पहलेसे प्रचार किया जाय, तो गाँवके युवकोकी मदद जरूर मिल सकती है।

८ ग्रामसफाअी। अपनी सख्याकी मर्यादा देखकर कामकी योजना बनानी चाहिये। जितनी सख्या हो अुसके हिसाबसे गली, रास्ते, घूरे और मोरी वगैराके कुछ निश्चित हिस्सोको साफ किया जाय। अन्तमें पानी छिडकने, चौक पूरने और गाँवकी सभा वगैरा करनेमे अिस काममें चार चाँद लग जायेंगे।

९ गाँवोमें और देशमें चलनेवाले अुद्योगोमें मदद दी जाय।
ले लोगोसे मिलकर अुनके साथ सपर्क

साधना बहुत जरूरी है। अिस दिशामें यह कार्यक्रम बहुत ही कीमती है।

१० रोग फैलने पर लोगोंकी सेवा की जाय। अिसके लिये पहलेसे ही तालीम ली गयी हो, तो कारगर ढंगसे काम किया जा सकता है।

११ देहातके जीवनमें अमुक मौसमोंमें कुछ काम दिलचस्पीके लायक होते हैं। गरमी और बरसातके बीचके दिनोंका समय झोपड़ियों पर छप्पर डालनेके लिये अच्छा होता है। किसानोंको यह काम थोड़े ही दिनोंमें पूरा करना होता है। पहलेसे खबर देकर वहां पहुँचा जाय और अुन्हें मदद दी जाय।

१२ किसानोंके काममें कअी तरहसे मदद दी जा सकती है। फसल काटनेके समय जितने आदमी जायें अुतने थोड़े होते हैं। यही बात रोपनीके कामके बारेमें है। गांववालोंके लिये रोपनीका समय अुत्सव जैसा होता है। सब शिक्षकोंका अनुभव है कि कितनी ही बरसात होने पर भी देहातके बच्चोंको अुन दिनों पाठशालामें बन्द करके रखना संभव नहीं। पुरानी सभ्यताकी यह खूबी है कि अुसने काम और अुत्सवको अेकरूप कर दिया है।

१३ कुम्हार जैसे कारीगरोंको भी मदद दी जा सकती है। मन होनेसे लेकर चाक तक पर हाथ आजमाया जा सकता है। किसी भी काममें मदद देते समय हमारा व्यवहार अैसा नहीं होना चाहिये, जिससे यह प्रगट हो कि हम बड़े आदमी हैं या कोअी अुपकार कर रहे हैं।

१४. बोनेका काम आता हो तो अुनमें भी बड़े मजेसे मदद दी जा सकती है।

१५ चमारके काममें मदद देनेकी तैयारी हो, तो अुसमें [illegible] आदमियोंको भी काम मिल सकता है।

करना — — नही आता। डॉक्टर ज्यादा पढे होते हैं, तो बीमारोको समझा नही पाते। यही हाल दूसरे शास्त्र पढे हुओका है। वे समझ सके अिस ढगसे लोगोके पास विज्ञान ले जािअये। पदार्थ-विज्ञानके नियम जिस हद तक जीवन पर लागू होते है, अुतने गाँवोमें जाकर लोगोको सिखािअये। हवाकी गति, रोशनी, धुआँ कैसे न हो वगैरा सादे प्रयोग करके अुन्हें वताये जा सकते हैं। बिना धुअेंका चूल्हा वनाकर दिखािअये। हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि अिन सव वातोसे देहातके लोगोंके अधविश्वास दूर हो और वे वैज्ञानिक पद्धतिसे विचार करने लगें।

२७ अुन्हें रोग और आरोग्य-सवधी विचार देना भी जरूरी है।

अिस ढगसे सेवादल काम करेगा, तो अुसका नाम सार्थक होगा।

सेवकका अपना लाभ

देशकी ग्रामजनताको अैसी सेवाकी जरूरत है। अैसी सेवा करनेवालेको भी कम लाभ नही पहुँचता। सेवादलके सैनिक ज्यादातर विद्यार्थी होते है। अिसमे अेक वडा लाभ यह है कि ये सब सेवाके काम करते-करते अुनका अपना शिक्षण भी समृद्ध होता जायगा।

आजकलकी शिक्षा-सस्थाओमें जनसमाजके साथ विद्यार्थियोका कोअी सबध नही होता। वे राष्ट्रजीवनसे अलग पड जाते हैं।

शिक्षाकी यह वडी कमी सेवादल पूरी कर सकता है। शहरी सस्थाओकी वन्द हवामें रहनेवाले तरुणोको अिस प्रकारके कामोसे वडी ताजगी और आनन्द मिलेगा।

९

पड़ोसके शहरकी सेवा

शहरकी व्याख्या

ग्रामसेवकके काम बता रहा हूँ, तब शहरकी सेवाकी बात अुलटी नहीं कही जायगी? शहरको तो वह छोडकर आया है। शहरको वह हिन्दुस्तानके शरीर पर निकला हुआ फोडा समझकर सच्चे हिन्दुस्तानमे — यानी देहातमे आया है।

शहरको फोडा कहनेका मतलब वहाँ रहनेवाले लोगोंके प्रति तिरस्कारका भाव दिखाना नहीं है। अगर वह फोडा है और ग्रामसेवाका काम अहिंसाके मार्ग पर करना है, तो फोडे पर मरहमपट्टी करना भी सेवकका ही कर्तव्य है।

यहा जब मैं शहर शब्द काममे ले रहा हूँ, तो मेरे मनमें बबअी-कलकत्ता जैसे शहर नहीं हैं। सूरत-अहमदाबाद भी नहीं। नड़ि-याद-नवसारी भी नहीं। मगर बारडोली-बोरसद जैसे शहर हैं। हमारे देशमे आठ-दस छोटे गाँवोंके झुण्डके बीच अैसा अेकाध बडा गाँव होता ही है। अुसे गाँव भी नहीं कह सकते और शहर भी नहीं कह सकते। अिससे भी छोटे शहर मेरी नजरमे हैं, जैसे वालोड-बुहारी, करा-बारडोली, सामणा-गभीरा, मातर-लीबानी वगैरा। अिन आखिरी गाँवोंको कोअी शहर नहीं कहता। आबादीके हिसाबसे भी अुनकी गिनती गाँवोमें ही होती है। मगर वे गाँव और शहरके मिश्रण हैं। यहाँके कुछ मुहल्ले शुद्ध देहात है और कुछ मुहल्ले शुद्ध शहर।

सेवक कहाँ बसे?

अैसे छोटे शहर और मिश्र गाँव देखनेमें गाँव जैसे ही होते है। तो ग्रामसेवकोंको अैसे ही अेकाध गाँवमे बसनेका लालच हो यह

होगी। अिसके लिअे वे हफ्तेमें अेकाध दिन दे दे तो भी वहुत है। वहांके कितने ही काम केवल प्रासंगिक होंगे, जिनके लिअे अुसे अुन गांवोमें स्थायी सेवा करनेकी जरूरत नही। अगर वह अुनके साथ परिचय रखेगा और अुनका विश्वास प्राप्त कर लेगा, तो अैसे वहुतसे काम वह आते-जाते, खास समय दिये विना, कर मकेगा।

शहरोंको देहातकी सेवामें लगाओ

अैसे पडोसी शहरोकी ग्रामसेवक क्या सेवा करे और किम तरह करे? अुन्हें ज्यादा समृद्ध, ज्यादा शोभायमान और ज्यादा प्रसिद्ध करने तथा शहरी तालीम, शहरी सुविधाओ और शहरी अुद्योग-धधोमें आगे वढानेके कामका तो मोहक सेवामें गिनकर मैंने खडन कर दिया है। तो अव ग्रामसेवकके लिअे कौनसी सेवा करनी वाकी रह जाती है?

ग्रामसेवकके करने जैसी अेक ही सेवा है — वह यह कि अैसे शहरी गांवोंके लोगोको वह नजदीकके सच्चे गांवोकी या अपने ही गांवके शुद्ध ग्राम-विभागकी सेवामें लगाये। वहांके हर वर्गको सच्चे गांवोकी सेवाका कोअी न कोअी मौका ढूंढ देनेका अुमे हमेशा खयाल रखना चाहिये।

वहांके विद्यार्थी अुत्साही होते हैं। देशमें होनेवाले आन्दोलनोका अुन पर असर होता है। मगर अुनकी पाठशालाअें लकीरकी फकीर होती हैं। मां-वाप अपने देशहित-विरोधी धधोमें डूबे रहते हैं। अुनके हृदयमें देशसेवाकी जो लहरें अुठती हैं, अुन्हे प्रोत्साहन देनेवाला कोअी नही है। ग्रामसेवक अुनसे दोस्ती कर लेगा, तो अुनके रुंधे हुअे जीवन अेकदम खिल अुठेंगे।

वे अुत्साहसे अपने गांवके मुहल्लोकी सफाअी करेंगे, तुनना और कातना सीखेंगे। घरमें तिनका तोडनेका भी जिन्हें प्रोत्साहन नही मिलता था, वे अुत्साहपूर्वक घरके कपडे धोना, वरतन मांजना, झाडू देना आदि कामोमें मदद देने लगेंगे। सचमुच अुन्हे कैदखानेसे छूटनेका अनुभव

होगा। ग्रामसेवक अुन्हें अपने गाँवमें आनेका न्यौता देगा, तो वे तुरन्त अुसे मान लेंगे। वहाँ सेवक अुन्हें गरीब देहातियोंके साथ खेतोंमें काम करनेका मौका देगा, अुनके साथ गायें चरानेका मौका देगा और पीसने तथा छाछ बिलोनेका भी मौका देगा।

अैसे शहरोंके लोगोंका गुजारा ज्यादातर देहातके शोषण पर ही होता है। अैसा कहा जाता है कि वे अिस बातसे खुश नहीं होते कि अुनके शोषणके शिकार बने हुअे देहाती लोग सुखी या स्वतंत्र हो जायें। और यह गलत भी नहीं। फिर भी थोडेसे प्रेम और प्रोत्साहनसे अिन्हीं शहरियोंकी अगली पीढ़ीको देहातियोंके साथ आनन्दसे काम करनेवाली बनाया जा सकता है। अितना ही नहीं, ग्रामसेवक निपुण होगा तो शहरके बालक गाँवोंमें आकर ग्राम-सफाअी करेंगे, हरिजनों और हलपतियों* के साथ तिरस्कारका बरताव छोडकर सेवाभावसे अुनके मुहल्लों और घरोंमें झाडू लगाने लगेंगे। गरीब देहातियोंके बच्चोंके साथ खेलेंगे, कूदेंगे और आनन्द करेंगे। अुनके साथ कातेंगे, पीजेंगे, देशभक्तिके गीत गायेंगे और अुत्सव मनायेंगे। ग्रामवासियोंको अपने शहरी विस्तारोंमें आदरके साथ ले जायेंगे, वहाँ अुनकी भजन-मण्डलियाँ बिठायेंगे, अुनके साथ खेलकूद करेंगे और होड बदेंगे।

पडोसी शहरोंके शिक्षित युवकोंकी सेवा भी ग्रामसेवकको करनी चाहिये। अुनमें कोअी सुन्दर संगीत सीखे होंगे, कोअी चित्रकला सीखे होंगे, कोअी कला और कारीगरी जानते होंगे, तो कोअी ज्ञान-विज्ञानकी शिक्षा पाये हुअे होंगे। अुनसे मित्रता करके सेवक अुन्हें भी ग्रामसेवामें लगा सकता है। अुन्हें वह अपने गाँवमें ले जायगा और ग्रामवासियोंके दिलोंके साथ अुनके दिल मिला देगा। वह अैसी हवा पैदा कर देगा कि अुनमें अपना कलाकौशल और ज्ञान-विज्ञान देहातियोंको सिखानेकी लगन पैदा हो।

* दूबला नामक आदिवासी जातिके लोग।

बदलेमें अुन्हें अपनी फीस मिले बिना नही रहेगी। ग्रामवासी और कुछ नही तो अुन्हे हल चलाना, मोट खींचना और छाछ बिलोना तो सिखा ही सकेंगे।

शहरी युवकोमे कोअी अुत्कट भावनावाले भी निकल आयेंगे। वे ग्रामसेवकके साथ स्थायी रूपमे बसने और अुसके समग्र कार्यमें साथ देनेको तैयार हो जायेंगे। सेवकके लिअे अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

पडोसी शहरोंके साथ अिस तरह प्रेम और सेवाका सबध हो जाने पर बहुत सभव है वहाँके गृहस्थो और महिलाओमें से कोअी ग्रामसेवकके काममें दिलचस्पी लेनेवाले निकल आये। अुनमें ग्रामवासियोका काम करनेकी अुमग होगी, और ग्रामसेवक तो सहानुभूतिका भूखा होता ही है। अुसने बहुत छोटा और दरिद्र गाँव जान-बूझकर चुना है। वहाँ वह लोगोका प्रेम सपादन कर सकता है। मगर साधनोका अुनके पास सर्वथा अभाव होता है। वे सेवकके लिअे अच्छी झोपडी बना देना चाहते हैं। सामान मिल जाय तो मेहनत करनेमें वे पीछे न रहे। मगर अुनके पास अपनी अैसी जमीन नही, लकडी और बाँस वगैरा भी नही। पहलेकी तरह आजकल जगलोमें भी यह सब नही रहा कि जाकर काट लाये।

अैसे गाँवकी जिसे सेवा करनी है, वह सदा सबकी हमदर्दीका भूखा रहेगा ही। जितनी शक्तियोको वह गाँवकी सेवामें लगा सके अुतनी कम ही है।

सत्याग्रहके रूपमें सेवा

मगर सेवकको यह न भूलना चाहिये कि साधन जुटाना अुसका मूल अुद्देश्य नही। अगर वह अुनके लोभमें पड गया, तो डर है कि असली काम छोडकर धनवानोकी खुशामदमें लग जाय। अपने गाँवमे बहुतसे साधन जमा करके अपने कामको सजानेका विचार मुख्य

न होना चाहिये। पडोसी शहरियोके मनमें देहातके लिअे प्रेम पैदा हो, वे अपने शहरोमें रहते हुअे भी ग्रामवासियो जैसा सादा और मेहनती जीवन विताने लगें, देहातियोके साथ न्याय और आदरका व्यवहार करने लगें, यही ग्रामसेवककी दृष्टि रहनी चाहिये। ग्रामसेवककी संगतिसे किसीकी जिन्दगीमें अैसा परिवर्तन हुआ होगा, तो अुसका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि ग्रामसेवाके काममे वह अपना वक्त और अपनी धन-दौलत देने लगेगा।

गाँवोंके समूहके बीच बसे हुअे छोटे-छोटे शहरो या मिश्र गाँवोंके शहरी मुहल्लोके लोगोके मुख्य धधोका आधार ज्यादातर ग्राम-विभागके शोषण पर ही होता है, जो स्वाभाविक है। गाँवोका खून चूसा जाकर अन्तमें बम्बअी-कलकत्ता जैसे शहरोमें और दिल्लीके सरकारी खजानेमें जमा होता है। वहाँ बडे-बडे नल और राक्षसी हौज है, मगर वे सभ्यता और मौखिक विवेकके बेलबूटोंसे ढँक दिये जाते है। परन्तु अिन बडे नलोमे खून पहुँचानेवाली जो छोटी-छोटी असंख्य नलियाँ है, वे ये छोटे-छोटे शहर है। अिन नलियोंके सिरे गाँवोंके मांसमें खोंसे हुअे साफ देखे जा सकते है। यहाँ अुनको ढाककर नही रखा जा सकता।

यहाँ जमींदार जमीनमे खेती करनेका धधा करते है, साहूकार व्याज-बट्टेका पेशा करते है, व्यापारी अुधारका लालच देकर निकम्मी वस्तुओंका प्रचार करनेका रोजगार करते है, शराब और ताडीके ठेके-दार व्यसनोंका व्यापार खोलकर बैठे है। सरकारकी छत्रछायामे यह सब धडल्लेसे चल रहा है। दया और न्याय, समानता और स्वतन्त्रताकी बाते यहा नहीं चल सकती।

अैसी परिस्थितियोंके बीच रहनेवाला ग्रामसेवक अगर सत्याग्रही होगा तो अुसका सेवाका काम सीधी सडक पर गाडी दौडाने जैसा नही होगा। सिर्फ चरखे चलाकर, पाठशालायें खोलकर, वाचनालय स्थापित

करके या राष्ट्रीय अुत्सव मनाकर अुसका काम पूरा नही होगा। अुसे सदा अन्यायोके विरुद्ध लडना पडेगा — लडना ही चाहिये।

मगर ये लडाअियाँ अुसे अहिसक ढगसे करनी है। नजदीककी शहरी जनताके जितने अगोके साथ अुसने प्रेम और सेवाका सबध जोडा होगा, अुतना ही अुसके लिअे अैसा करना सभव होगा।

अिस दृष्टिसे नजदीकके शहरकी सेवा ग्रामसेवकका अेक आवश्यक काम हो जाता है। भले अुसमे वह कभी कभी थोडा ही वक्त लगा सके, भले अुसके लिअे वह हफ्तेमे अेकाध रोज ही दे सके, फिर भी अगर वह अपनी ग्रामसेवाके अिस अगका विकास नही करेगा, तो वह नि सत्त्व रहेगी।

हमारे कुछ ग्रामसेवकोने अिस अगका महत्त्व समझा है, यह अुनके काम परसे देखा जा सकता है। आशा है और लोग भी अिस दिशामे प्रयत्न करेगे।

१०

स्वावलम्बनका आग्रह

भरण-पोषणका विकट प्रश्न

"हम गाँवमे तो जाये, मगर वहाँ हमारे गुजारेका क्या होगा ?" — यह सवाल नये ग्रामसेवकोको बहुत परेशान करता है। पर वह कच्चे सेवकोको ही परेशान करता है। सच्चे सेवकोको अिसकी परेशानी शायद ही मालूम होती है। आज सच्चे सेवक अितने थोडे है कि अुन्हे भरण-पोषणकी चिन्ता करनेकी नौबत ही नही आती।

सच्चे ग्रामसेवकोकी सेवाकी कल्पना भी कुछ दूसरी ही होती है। तैयार वेतन मिले तो भी अुन्हे वह बेफिक्रीकी रोटी नही भाती।

अैसे सेवक दो तरहसे भरण-पोषणका रास्ता निकालते देखे गये है —

कुछ ग्रामसेवक पूरी तरह गाँवके लोगों पर निर्भर रहना पसन्द करते हैं। गाँववाले जितना दें अुतना ही खायेंगे और गाँववाले जितनी प्रवृत्तियोंमें मदद दें अुतनी ही हाथमें लेंगे, अिस निश्चयके साथ वे गाँवमें बसते हैं। संभव है अैसा करते हुअे कभी फाकेकी नौबत भी आ जाय। मगर गाँववालोंके प्रेम और कदरकी परीक्षा लेनेमें अुन्हें बड़ा मजा आता है। अैसे कष्ट सहनेमें अुन्हें दु:ख नहीं होता, बल्कि अेक प्रकारका साहसका आनंद ही आता है।

दूसरे ग्रामसेवक अपने बाहुबल पर आधार रखना पसन्द करते हैं। अिसके लिअे बुनाअी अुत्तम काम है। पींजन भी आजमाने लायक है। खादी तो किसी भी ग्रामसेवकके काममें केन्द्रीय स्थान रखती है। अिसलिअे अैसे अुद्योग सेवकके लिअे दोहरे अुपकारक होते हैं — अुनसे अुनके निर्वाहमें मदद मिलती है, साथ ही खादीके कामका प्रत्यक्ष अुदाहरण गाँवके सामने रखकर वह खादीका वातावरण भी पैदा कर सकता है।

अिन दोमें से किसी भी प्रकारके स्वावलम्बनका आग्रह रखनेवाला ग्रामसेवक साधारण सेवकोंसे अलग ही नजर आयेगा। अुसका जीवन और काम अुसके तेजके कारण चमक अुठते हैं। अैसे सेवकोंको कष्ट और असुविधायें अुठानी पड़ती हैं और अुनकी शक्ति तथा समय पर बहुत ही दबाव पड़ता है। परंतु सेवकोंको अिसीमें मजा और आनंद आता है। वे अपनी आत्मशक्ति बढ़ती हुअी महसूस करते हैं और थोड़े समयके परिणामस्वरूप अुन पर लोकप्रेमकी बाढ़ आ जाती है।

स्वावलम्बन — ग्रामसेवाका अेक कार्यक्रम

मेरा ख्याल है कि ग्रामसेवकोंको स्वावलम्बनको अपनी सेवाका अेक कार्यक्रम ही बना लेना चाहिये। अिस दृष्टिसे अिस प्रकरणमें हम ग्रामसेवकके स्वावलम्बनकी विस्तृत चर्चा करेंगे।

ग्रामसेवक स्वावलम्बनका आग्रह रखे, अिसका अितना ही अर्थ नही कि वह अपने गुजरके लिअे किसी भी तरह कहीसे काफी रुपया जुटा ले। अगर अितना ही हो तो अुसे ग्रामसेवाका कार्यक्रम नही कहा जा सकता। शहरोमें समय-समय पर चक्कर काटकर वह गुजरके लायक पैसा अिकट्ठा करके ला सकता है, या कोअी खानगी घधा करके, किसी कमाअू मित्रके साथ घधेमें साझा करके या किसी अैसे ही अुपायसे वह किसी सस्थासे वेतन लिये विना स्वावलम्बी वन सकता है। मगर अैसा स्वावलम्बन ग्रामसेवाका अेक कार्यक्रम नही कहा जा सकता।

स्वावलम्बनका प्रयत्न ग्रामसेवाका अेक कार्यक्रम तभी वन सकता है, जब कि सेवक अपनी आमदनीके बारेमें दो आग्रह रख सके —

अेक आग्रह यह कि वह दिनमें कुछ घटे (मान लीजिये चार घटे) अुत्पादक अुद्योग करेगा और अुद्योग भी अैसा ही चुनेगा, जो अुसकी ग्रामसेवामें महत्त्वका स्थान रखता हो। कातना, पीजना, बुनना — ये अैसे ही अुद्योग कहे जा सकते हैं। अिन अुद्योगोंके लिअे अुसे अपने गाँवमें दिलचस्पी पैदा करना है। गाँववालोको ये अुद्योग सिखाने है और अुनके द्वारा ग्रामीण सस्कृतिके प्रति गाँववालोमें आदर पैदा करना है। वह दिनमें लम्बे समय तक दिल लगाकर धार्मिक जोशके साथ अैसा अुद्योग करता रहे, अडचनें और तगी भोगने पर भी अिस धर्ममय घधेसे अपने गुजारेका खास भाग कमाकर वताये — अिसके जैसा कारगर दूसरा कौनसा अुपाय है, जिससे वह अपने गाँवमें ग्रामोद्योग और ग्रामसस्कृतिका वातावरण पैदा कर सकता है?

दूसरा आग्रह, जिसे ग्रामसेवकको मजबूतीसे पकडे रहना चाहिये, यह है कि वह अपने ग्रामसेवाके काममें सीधा साथ देनेवाले ग्रामवासियोकी ही मदद स्वीकार करे। वह भी नकद चन्देके रूपमें नही,

बल्कि अुसे जिस कामका प्रचार करना है, अुस कामके रूपमें ही स्वीकार करे।

अिस प्रकार अगर ग्रामसेवक अेक शिक्षककी तरह ग्रामसेवा करता होगा, तो अपने गुजारेके अेक खास भागके लिअे वह अपने विद्यार्थियो पर अवलम्बित रहना पसन्द करेगा। अुनसे वह कुछ निश्चित चंदा लेगा। मगर नकद फीसके रूपमें नहीं। वह विद्यार्थियोंको खादी-विद्याके जरिये शिक्षा देगा और सीखते-सीखते विद्यार्थी सहज ही जो कमाअी करेंगे, वह सब या अुसका अेक खास हिस्सा अुनसे गुरुदक्षिणाके रूपमें स्वीकार करेगा।

अिस प्रकार शिक्षक ग्रामसेवक अपना गुजारा किस हद तक कर सकता है, अिसके आँकड़े जाकिरहुसेन-समितिने वर्धा शिक्षण योजना संबंधी अपने बयानमें बता दिये है। अिसलिअे मैं अुन हिसाबकी तफसीलमें नहीं जाअूंगा।

ग्रामसेवक अगर कोअी छोटा-मोटा आश्रम चलाता होगा, तो अुसका काम अनेक दिशाओंमें और अनेक वर्गोंमें चलता होगा। अिन सब वर्गोंसे वह अपने गुजारेके लिअे थोड़ा-थोड़ा हिस्सा ले लेगा। अलबत्ता वह नकद नहीं लेगा, मगर लोग अपने सेवक या आश्रमकी खातिर जिस हद तक कातने, पींजने या अैसा ही कोअी राष्ट्रीय अुद्योग करनेको तैयार होंगे अुतना ही लेगा।

ग्रामसेवक छोटे-छोटे बच्चोंकी बालवाड़ी चलाता होगा तो अुनसे वह कोअी आशा नहीं रखेगा। अुलटे अुनके लिअे खुद कुछ न कुछ खर्च करे यही अुचित होगा।

मगर कोअी बड़ी अुम्रके लड़के-लड़कियाँ सुबह-शाम आश्रमसे लाभ अुठाते हों और सेवकसे संस्कार लेनेके साथ-साथ कातना, पींजना वगैरा राष्ट्रीय अुद्योग सीखते हों, तो वे अपनी आयमेंसे कमाअी गुरुदक्षिणाके तौर पर बड़ी खुशीसे दे सकेंगे

ग्रामसेवकके आश्रममे पॉच-सात पढे-लिखे या अनपढ युवक अपना लगभग पूरा दिन बिताते होगे, असुसे राष्ट्रीय अुद्योग सीखते होगे और साथ ही अुसके सत्सगका लाभ अुठाते होगे। अुनके कार्यक्रममे चार-छ घटेका अुद्योग होना ही चाहिये। अिससे वे खासी अच्छी कमाअी कर लेगे। अुसमे से आधी कमाअी अपने माता-पिताको देकर वे घर-गृहस्थीमें अुनके मददगार वन सकते है और आधी अपने आश्रमको दे सकते है।

ग्रामसेवक अपने गॉवके आठ-दस कुटुम्बोमे कुछ ज्यादा गहरा काम करनेका निश्चय रखे, यह स्वाभाविक और वाछनीय है। अैसे कुटुम्बोमे अुसका आना-जाना विशेष होगा। वे आश्रमकी वाते औरोकी अपेक्षा ज्यादा मानते होगे। आश्रम और सेवककी सुविधा-असुविधाओकी वे कुदरती तौर पर ज्यादा जानकारी रखते होगे ओर अपनी शक्तिके अनुसार मेवकके मददगार होना पसन्द करेगे। सेवक खुशीसे अुनसे दक्षिणा ले सकता है, मगर अपने नियमके अनुसार यह दक्षिणा भी वह अुद्योगके रूपमे ही स्वीकार करनेका आग्रह रखेगा। कुटुम्बोमे ग्राम-सेवकने गभीरतासे काम किया होगा, तो अुसके परिणामस्वरूप वे कुटुम्ब कातने, पीजने और बुनने वगैराके राष्ट्रीय अुद्योगोके वातावरणसे गूंज रहे होगे। अिन अुद्योगोके रूपमे ही मदद लेनेका सेवकका निश्चय होगा, तो यह निश्चय भी वैसा वातावरण पैदा करनेमे सहायक हुअे विना नही रहेगा।

यह आशा तो हम न रखे कि गॉवकी सारी आवादी ग्रामसेवककी सभी वाते मानने लगेगी, मगर यह असम्भव नही कि अुस पर भी राष्ट्रीय रग चढ जाय। वे ज्यादा नही तो समय-समय पर गाधी-सप्ताह, राष्ट्रीय सप्ताह, स्वातन्त्र्य-दिवस वगैरा अवसरो पर होनेवाले राष्ट्रीय अुत्सवोमे अुत्साहसे भाग लेगे। ग्रामसेवक कुदरती तौर पर अपने देहाती जलसोमें चरखे जैसे राष्ट्रीय अद्योगोको मख्य स्थान देगा। अैसे

करना आसान है, और अिसके साथ अगर सेवक अुद्योगके रूपमें ही मदद लेनेका आग्रह रखेगा और अुत्सवके मौके पर हरअेकके लिअे अपनी कानी हुअी गुडी या अैसी ही कोअी चीज आश्रमको देनेकी सूचना करेगा, तो गांववाले बहुत ही प्रेमसे अुस सूचनाको स्वीकार कर लेंगे।

मासिक आयका अनुमान

अेक ग्रामसेवक अगर स्वावलम्बनको अपनी ग्रामसेवाके कार्य-क्रमका अेक महत्त्वका अंग बना ले और अुसके लिअे आग्रहपूर्वक वाता-वरण तैयार करे, तो अेक निश्चित कालके प्रयत्नके बाद वह अपने गुजरके लायक कमा लेगा। अिस ढंगसे होनेवाली मासिक आय आंकडोंके रूपमें नीचे देता हूं। यह मानकर कि सारा चन्दा कताअीके रूपमें आता है, गुडीकी भाषामें यह आय बताअी गअी है।

४५ गुडी	सेवककी अपनी रोजाना ४ घण्टेके अुद्योगकी आमदनी (गुडी १॥ × ३० दिन)
६०	कुमार और कन्या-आश्रमके बालकों द्वारा रोज़ आध घण्टे तक आश्रमके लिअे किये गये अुद्योगकी आय (१२ बालक मिलकर रोजकी गुडी २ × ३० दिन)
९०	आश्रममें लाभ अुठानेवाले जवान विद्यार्थियोंकी रोजाना ३ घण्टेके अुद्योगकी आमदनी (तीन विद्यार्थियोंके मिलकर रोज १ घण्टेकी गुडी ३ × ३० दिन)
४५	गंभीर कामके लिअे चुने हुअे परिवारोंके द्वारा रोजाना आधे घण्टेके हिसाबसे आश्रमके लिअे किये गये अुद्योगकी आय (अैसे परिवार ५ होंगे और हर परिवारसे २ आदमी आश्रमके लिअे काम करते होंगे, यह मानें तो १० आदमियोंकी रोजकी गुडी १॥ × ३० दिन)

१० " राष्ट्रीय अुत्सव वर्षमें चार हो, तो अुन प्रमगोकी आय (हरअेक अुत्सवमें ३० आदमी भाग लेंगे, अैसा मानकर १२० आदमियोमें से हरअेककी वर्षमे १ गुडीके हिसावसे १२० गुडियाँ या मासिक १० गुडियाँ)

---

२५० गुडी मासिक आय।

अेक गुडीकी कीमत ०-२-६ मानें, तो ग्रामसेवककी यह मासिक आय पैसोंके रूपमे रु० ३९-१-० होती है।

मै मानता हूँ कि यह हिसाब तो कागजी है। कल्पनाको अमलमें लाने पर अितना परिणाम न भी निकले। यद्यपि ग्रामसेवकको अलग-अलग वर्गोसे मिलनेवाले जवावके अदाजी आँकडे अूपर दिये गये है, फिर भी यह आक्षेप तो शायद ही किया जा सके कि मैंने ये वढा-चढा कर दिये है। मै अैसे कुछ ग्रामसेवकोके नाम भी दे सकता हूँ, जिनके यहाँ अूपर वताये हुअे सब तरहके काम आज भी हो रहे हैं और हरअेक वर्गमें मेरे वताये हुअे आँकडोसे ज्यादा सख्या है। अुनके यहाँ कन्या और कुमार-आश्रम चल रहे है और अुनमें १२ से ज्यादा वालक लाभ अुठा रहे है। अुनके आश्रमोमें गाँवके जवान लडके सारे दिन रहते है और अुद्योग करते है, जिनकी सख्या मेरे वताये हुअे तीनके अनुमानसे काफी वडी है। अुनके गाँवमें कुछ परिवार जरूर अैसे मिले हैं, जो अुनकी वातें माननेको तैयार रहते है और अुन पर आप्तजनोका-सा भाव रखते हैं। अैसे कुटुम्वोकी सख्या मेरे वताये हुअे ५ के आँकडेसे ज्यादा ही है। राष्ट्रीय अुत्सव भी वे मनाते है और अुनमें मेरे माने हुअे ३० से कही ज्यादा ग्रामवासी भाग लेते है। अुन्होने अिन सवको अिस ढगसे आश्रमको अुद्योगके रूपमें सहायता देनेकी अभी तक प्रेरणा नही की है, मगर वे मजूर करेंगे कि अैसा करना और अुसमें मफलता पाना अुनके लिअे मुश्किल वात नही है।

स्वावलम्बनसे आनेवाला तेज

जिस तरह सेवक अपना स्वावलम्बन सिद्ध कर सके, यही अेक लाभ होता तो भी यह प्रयोग करने लायक माना जाता। मगर मैं तो यह भी कहना चाहता हूँ कि अिस तरहकी कोशिशसे अुनकी सम्पूर्ण ग्रामसेवामें कुछ अनोखा ही तेज पैदा होगा। मैं मानता हूँ कि मेरी अिस सूचनाके समर्थनमें दलीलें देनेकी जरूरत नहीं।

मुझे यह बताते हुअे खुशी होती है कि थोडी ही संख्यामें क्यों न हो, मगर अैसे नौजवान ग्रामसेवक आज मौजूद हैं, जो स्वावलम्बनको ग्रामसेवाका ही अेक कार्यक्रम मानकर धार्मिक जोशके साथ अुस पर अमल कर रहे हैं। वे खुद कताअी, पिजाअी और बुनाअी करके अपने निर्वाहके लायक या अुसका अमुक हिस्सा कमा लेनेका आग्रह रखते हैं।

ये सेवक ज्यादातर शिक्षक स्वभावके हैं, अिसलिअे गाँवके बच्चे और युवक सारे समय अुनके आश्रमोंमें ही रहते हैं। अुनके लिअे नाश्ता, दियाबत्ती, पुस्तकें, प्रवास, सफाअीके साधन आदिका खर्च करना होता है। अधिकांश सेवक बहुत ही गरीब आबादीवाले गाँवोंमें रहते हैं, अिसलिअे अैसी छोटी चीजें भी बच्चे घरसे नहीं ला सकते। ला सकें तो भी अुन्हें यह प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे अैसा न करके अपने अुद्योगसे ही यह खर्च निकालें। अिससे वे लड़के नाराज हुअे हों, अैसा किसीका अनुभव नहीं है। वे बहुत ही आनन्दसे अपना-अपना काम कर रहे हैं। अैसा करते हुअे अुनका अुत्साह घटनेके बदले बढ़ता ही देखा गया है और अपने आश्रमके प्रति भी अुनका प्रेम बढ़ा है।

यह अनुभव अिस लेखमें विस्तारसे समझाअी गअी कल्पनाको प्रोत्साहन देता है। गाँवके अलग-अलग वर्गोंको आश्रमके स्वावलम्बनमें अपने-अपने अुद्योगका हिस्सा देनेकी प्रेरणा करनेमें वे आश्रम या सेवकसे अूब जायेंगे, यह डर रखनेकी बिलकुल जरूरत नहीं; अुलटे स्वाव-

लम्बन सिद्ध होनेसे आश्रम और सेवक पर अुनकी ममता बढेगी। अितना ही नही, अुनकी ग्रामसेवाके कामोकी और सिद्धान्तोकी भावना भी अधिक गहरी होगी।

अिस कल्पनाको व्यावहारिक रूप देनेकी अेकमात्र अनिवार्य शर्त्त यह है कि सेवक खुद अपने स्वावलम्बनके लिअे चार-पाँच घटे नियमित अुद्योग करनेका आग्रह रखे। स्पष्ट है कि अैसा करके ही वह अपने गाँववालोसे अुद्योगका हिस्सा लेनेका अधिकारी होगा और तभी अुसमें वह हिस्सा माँगनेकी हिम्मत आयेगी।

हमारे हिन्दी प्रकाशन

बापूके पत्र – २ सरदार वल्लभभाओीके नाम	३–८–०
बापूके पत्र मीराके नाम	४–०–०
सच्ची शिक्षा	२–८–०
बुनियादी शिक्षा	१–८–०
बापूके पत्र–१ आश्रमकी बहनोंको	१–४–०
गोसेवा	१–८–०
दिल्ली-डायरी	३–०–०
गांधीजीकी संक्षिप्त आत्मकथा	१–८–०
राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी	१–८–०
वर्णव्यवस्था	१–८–०
सत्याग्रह आश्रमका अितिहास	१–४–०
रचनात्मक कार्यक्रम	०–६–०
बालपोथी	०–३–०
रामनाम	०-१०-०
आरोग्यकी कुंजी	०-१०-०
खुराककी कमी और खेती	२–८–०
विवेक और साधना	४–०–०
अेक धर्मयुद्ध	०-१२-०
महादेवभाओीकी डायरी – १	५–०–०
महादेवभाओीकी डायरी – २	५–०–०
महादेवभाओीकी डायरी – ३	६–०–०
सरदार वल्लभभाओी – १	६–०–०
सरदार पटेलके भाषण	५–०–०
सयानी कन्याको	[illegible]